नामवरी ।
सं० रौरव-(रु=शब्द करना, या रोना जहां पापी रोते हैं) पु० एक नरक का नाम, गु० भयानक ।
प्रा० रौला-(सं० राव, रु=शब्द करना) पु० धूमधाम, हुल्लड़, बखेड़ा, गुल्ल, गपाड़ ।

—::—

(ल)

सं० ल-(ला=लेना, वा लू=काटना) पु० इन्द्र, २ मंत्र, ३ काटना, ४ दीप्ति, प्रकाश, ५ आह्लाद ६ वायु ।
प्रा० लकड़-(सं० लगुड़) पु० लकड़ी, लाठी, लट्ठ ।
प्रा० लकड़ी-(सं० लगुड़) स्त्री० काठ, इन्धन, जलावन, २ सोंटा, लट्ठ, लाठी, लठिया ।
प्रा० लकीर-(सं० लेखा, लिख्=लिखना) स्त्री० रेखा, लीक, धारी, डंडीर ।
प्रा० लकुट-(सं० लगुड़, लग्=मिलना, वा पाना) पु० लाठी, लकड़ी, छड़ी ।
सं० लक्क-पु० लाही, महावर ।
सं० लक्ष-(लक्ष=देखना, चिह्नकरना) पु० एक लाख, सौहज़ार, २ छल, बहाना, ३ चिह्न ।
सं० लक्षक-(लक्ष+अक) क० पु० दर्शक, दिखानेवाला ।
सं० लक्षण-(लक्ष=देखना, या चिह्न करना) पु० चिह्न, पहचान, तारीफ़, नाम, गुण, २ श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई, लछमण, सुमित्रा का बेटा ।
सं० लक्षित-(लक्ष्=चिह्न करना, देखना) कर्म० पु० देखा हुआ, जाना हुआ, २ चिह्न किया हुआ ।
सं० लक्षणा-भा० स्त्री० अध्याहार, जो ऊपर से लिया जाय ।
सं० लक्ष्मण-(लक्ष=देखना, चिह्न करना) पु० दशरथ राजा का बेटा जो सुमित्रा से पैदा हुआ, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।
सं० लक्ष्मणा-(लक्ष्=देखना, चिह्न करना) स्त्री० मद्रदेशके राजा की बेटी और श्रीकृष्ण की पत्नी, २ दुर्योधन की बेटी जो श्रीकृष्ण के बेटे साम्ब को ब्याही थी ।
सं० लक्ष्मी-(लक्ष=देखना, चिह्न करना) स्त्री० विष्णुपत्नी और धन की देवता, हरिप्रिया, पद्मा, कमला, श्री, इन्दिरा, लोकमाता, रमा, हरिवल्लभा, २ सम्पदा, सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य्य, ३ शोभा, सुन्दरता ।
सं० लक्ष्मीकान्त-(लक्ष्मी+कान्त) पु० विष्णु, नारायण, रमेश ।
सं० लक्ष्मीनाथ-(लक्ष्मी+नाथ) पु० विष्णु, नारायण, माधव ।
सं० लक्ष्मीपति-(लक्ष्मी+पति) पु० विष्णु, नारायण, रमानाथ ।

सं० लक्ष्मीवान्-(लक्ष्मी+वत्) गु० धनवान्, संपदावाला, दौलतमन्द, श्रीमान्, श्रीयुत ।

सं० लक्ष्म—भा०पु० चिह्न, निशान ।

सं० लक्ष्य—(लक्ष्=देखना, चिह्न करना वा निशान करना) पु० निशाना, ताक, कर्म० जो जाना जाय, जो देखा जाय, देखने योग्य, साजिश ।

प्रा० लखन—(सं० लक्ष्मण) पु० लक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।

प्रा० लखना-(सं० लक्षण, लक्ष्=देखना) क्रि० स० देखना, भालना, ताकना, २ जानना, समझना, पहचानना ।

प्रा० लखपति-(सं० लक्षपति) पु० धनी, धनवान्, जिस के घरमें लाख रुपये हों, लाखिया ।

प्रा० लखेरा—(लाख) पु० लाख की चूड़ी आदि बनानेवाला ।

सं० लग-(सं० लग्=मिलना) नित्य, सं० तक, लों, पास, जबतक ।

प्रा० लगभग—बोल० आसपास, अनुमान, करीब ।

प्रा० लगना-(सं० लग्=मिलना) क्रि० अ० जुड़ना, चिपकना, मिलना, सटना, २ किसी काम का शुरू, होना या करना, ३ नियुक्त होना, किसी काम में तत्पर होना, ४ पहुंचना, फैलना, ५ सोहना, फबना, ठीक होना, ६ मालूम होना, ७ सम्बन्ध रखना, लगाव रखना ।

प्रा० लगातार-क्रि० वि० या गु० बराबर, निरन्तर, एक पर एक ।

प्रा० लगाव—(लगना) भा० पु० मेल, लाग, जोड़ ।

प्रा० लगि=लिये, वास्ते, २ तक, तलक ।

प्रा० लग्गा—पु० लाग, मेल, प्यार, प्रेम, प्रीति, २ एक डंडा जिस से नाव चलाई जाती है ।

प्रा० लग्गा न खाना-बोल० बराबर न होना, उपमा या बराबरी के योग्य न होना ।

प्रा० लग्गी-स्त्री० बांस का डंडा ।

सं० लग्न-(लग्=मिलना, या पास होना) पु० मेष आदि राशियों का उदय, मुहूर्त, सायत, क० लगा हुआ, मिला हुआ ।

सं० लग्नक—पु० प्रतिभू, जामिन ।

सं० लघिमा स्त्री० } (लघु) छोटापन,
लघिमन् पु० } हलकापन, लघुता, लाघव, २ आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि ।

सं० लघिष्ठ—गु० लघु, छोटा ।

सं० लघु-(लघि=जाना, छोटा होना) गु० हलका, २ छोटा, ३ शीघ्र ।

उतावला, ४ सुन्दर, मनोहर, ५ नीचा, नीच, ६ पु० ह्रस्व स्वर, एक मात्रिकस्वर ।

सं०लघुकाय—(लघु=छोटा, काय=शरीर)पु०छाग, बकरा,सूक्ष्मशरीर ।

सं०लघुता—(लघु)भा०स्त्री०हलकाई, छोटापन, छुटाई, निचाई ।

सं०लघुहस्त—पु० अलाहस्त, सुबुकदस्त ।

सं०लघ्वी—स्त्री० सूक्ष्माङ्गी, नागनी ।

सं०लङ्का—(लक्=स्वाद लेना, या पाना) स्त्री०रावणकी राजधानी ।

सं०लङ्कापति—(लङ्का+पति) पु० रावण २ विभीषण ।

सं०लङ्केश } (लङ्का+ईश, वा
लङ्केश्वर } ईश्वर) पु० रावण, २ विभीषण ।

फ़ा०लंगर—पु० जहाज आदि को ठहरानेके लिये एकलोहे की चीज ।

प्रा०लंगूर—(सं० लांगूली) पु० बन्दरकी जाति का एक जानवर जिसकी पूंछ लम्बी होती है और मुंह काला होताहै, लखुवाबांदर ।

प्रा०लंगोट, पु० }
लंगोटा, पु० } कोपीन, कछनी।
लंगोटी, स्त्री० }

प्रा०लंगोटबन्द—बोल० वह आदमी जो ब्याह न करे ।

प्रा०लंगोटियायार—बोल० बालकपन का पुराना मित्र ।

सं०लङ्घक—(लंघ्+अक) क० पु० नांघनेवाला, पारहोनेवाला ।

सं०लङ्घन—(लघि=पार होना, या लांघना) पु० लांघना, पार होना, उछलना, २ उपास,कड़ाका,फाका ।

सं०लङ्घित—(लंघ्+इत) कर्म० पु०अतिक्रान्त,उल्लंघित,पारहोगया।

प्रा०लचक—(लचकना)भा०स्त्री० लचीलापन, झुकाव ।

प्रा०लचकना—क्रि० अ० जोर पड़ने से झुकजाना और जब वह जोर न रहे तब पीछे उभरआना ।

प्रा०लच्छन—पु० लक्षण शब्दको देखो । [आंटी ।

प्रा०लच्छा—पु० रँगेहुये सूत की ।

प्रा०लछन—(सं० लक्षण) पु० लक्षण ।

प्रा०लछमण—(सं० लक्ष्मण)पु० लक्ष्मण,श्रीरामचन्द्रका छोटाभाई ।

प्रा०लछमी } (सं०लक्ष्मी) स्त्री०
लछि } लक्ष्मी शब्दको देखो ।

प्रा०लजाना—(लज्जा) क्रि०अ० शर्माना,लाजकरना,संकोचकरना ।

प्रा०लजालू—(सं०लज्जालु) गु० शर्मीला, लज्जित, पु० छूई मुई का पेड़, जिसके पास अंगूली ले जाने से उसके पत्ते सिकुड़ जाते हैं ।

सं०लज्जा—(लस्ज्=शरमाना)स्त्री०

लाज, शर्म, संकोच ।

सं०लज्जारहित—(लज्जा + रहित) गु० निर्लज्ज, बेशर्म ।

सं०लज्जाशील—गु०लज्जायुक्त ।

सं०लज्जित—(लज्जा) क० पु० शर्मीला, शर्मिन्दा, लजालू, संकोची ।

सं०लञ्जिका—(रञ्ज्=भासना) स्त्री० वेश्या, पुंश्चली, पु० २ मस्तक, कपाल, ३ चोर, ४ वेणी, ५ पिण्ड, ६ उक्ति ।

प्रा०लट—स्त्री० लटूरी, उलझेबाल, जटा, २ एक जानवर का नाम ।

प्रा०लटक—भा० स्त्री० मटक, चटक, नखरा, आन, मान, चोंचला ।

प्रा०लटकचाल—स्त्री०नखरेकीचाल ।

प्रा०लटकन—(लटकना) स्त्री० लटकतीहुई चीज़, झूला, २ झुमका, कुण्डल, ३ एक फूल जिससे कपड़े पीले रंगे जाते हैं ४ एक हरे रंग के पखेरूका नाम जो अपने पैरोंसे बहुत बार लटका रहता है, ५ लकड़ी की एक चीज़ जिसपर पानी का लोटा झारी आदि रखते हैं बोल० पुछल्ला, झुलझुल जो पतंग और कनकौआमें नीचे लटका करती है ।

प्रा०लटकना—क्रि० अ० झूलना टंगना, २ पीछे रहजाना ।

प्रा०लटका—पु० मन्त्र, झाड़फूंक । टोना, टोटका, चुटकुला, जादू ।

प्रा०लटपटा—गु० खिलाड़, चंचल, २ उलट पुलट, लपेटी हुई (पगड़ी) ।

प्रा०लटूरिया, लटूरी—स्त्री० लट, जुल्फ, छोटे छोटे उलझे बाल ।

प्रा०लट्टू—पु० लड़कों के एक खिलौनेकानाम,—लट्टू होना, बोल० मोहितहोना, किसीकेप्यारमेंफँसना ।

प्रा०लठ—(सं०यष्टि)पु०सोंटा, लाठी ।

प्रा०लठियाना—क्रि० स० लाठीसे मारना, लाठीमारना ।

प्रा०लड़—स्त्री० लड़ी (मोतीआदि की)रांत, जत्था, दल, धड़ा, टोली ।

प्रा०लड़का—(सं०लड्=खेलना) पु०बालक, छोहरा, छोकरा, २बेटा ।

प्रा०लड़काबाला, लड़कालड़की—बोल० बाल, बच्चा, बेटाबेटी ।

प्रा०लड़काई—(लड़का) भा०स्त्री० लड़कपन, बालकपन ।

प्रा०लड़खड़ाना—क्रि० अ० डगमगाना, डिगना, २ हकलाना ।

सं०—लड़न—भा०स्त्री०लड़ाईकरना, झगड़ा करना ।

प्रा०लड़ना—(सं०लड्=जीभ हिलाना) क्रि० अ० लड़ाई करना, झगड़ना, बखेड़ाकरना, युद्धकरना ।

प्रा०लड़ाई—भा० स्त्री० झगड़ा, बखेड़ा, युद्ध, जंग ।

प्रा०लड़ाईकरना—बोल० झगड़ना, लड़ना, बखेड़ाकरना, युद्धकरना ।

प्रा० लड़ाक } (लड़ना) गु० लड़ने
लड़ाका } वाला, लड़ाई करने वाला, झगड़ालू, बखेड़िया ।

प्रा० लड़ियाना—क्रि०स० पिरोना, गूथना, पोना ।

प्रा० लड़ी—स्त्री० मोतियों की पांति ।

प्रा० लड्डू—(सं०लड्डुक, लड्=चाहना, विलास करना) पु० लाडू, मोदक, मोतीचूर—मन के लड्डू खाना, बोल० मनही मन में ऐसी बातों का विचार बांधना जो हो नहीं सक्तीं ।

प्रा० लंठ—गु० मूर्ख, गँवार, अनपढ़ ।

प्रा० लंडूरा—गु० बांड़ा, बिन पूंछ का, २ बेमित्र, मित्रों से छोड़ा हुआ, तनहा, अकेला, ।

प्रा० लत—स्त्री० बुरीचाल, कुटेव, २ लहर, तरंग, ३ लात ।

प्रा० लत—(सं०लता) स्त्री० बेल, बेली ।

सं० लता—(लत्=उलझना, वा चोट करना) स्त्री० बेल, बेलड़ी, बेली माधवी, निवाड़ी, बेला, दूर्वा ।

सं० लतातरु—पु० शालवृक्ष, नारंगीवृक्ष, तालवृक्ष, खजूर ।

सं०लतापनस—पु०कलिंज, तरबूज़, खरबूज़ा ।

सं०लतामणि—पु० प्रबाल, मूंगा ।

प्रा०लत्ता—(फ़ा०लत्तह)पु० चीथड़ा, फटापुरानाकपड़ा, २ ज्योतिष में एक योग का नाम ।

प्रा० लथड़ना—क्रि०अ० कीचड़ से भीगना या कीचड़ लगजाना ।

प्रा०लदना—क्रि०अ० लादाजाना ।

प्रा० लप—स्त्री० मुट्ठीभर, मुक्काभर ।

प्रा० लपकना—क्रि० अ०लहकना, तेजचलना, चमकना, २उछलना, कूदना ।

सं० लपन—(लप्+अन, लप्=कहना)पु० कथन, मुख, आस्य, वचन ।

प्रा० लपका—पु० झपट, २ फुर्ती, ३ चाट, बुरीचाल, चसका ।

प्रा० लपट—स्त्री०महक, बास, सुगन्ध, २ दहक, लहर, भभक, लूका ।

सं० लपित—र्म्म० पु० कहाहुआ ।

प्रा० लप्पा—पु० पट्ठा, गोटा, किनारी ।

प्रा० लबार—(सं० लप्=बकना) पु० झूठा, गप्पी, बहुत बोलनेवाला ।

सं० लब्ध—(लभ्=पाना) र्म्म० पु० पायाहुआ, प्राप्त ।

सं० लब्धवर्ण—पु० पण्डित, शास्त्री, विचक्षण । [क़िस्मत ।

सं० लब्धि—स्त्री० प्राप्ति, ख़ारिज

सं० लभ्य—(लभ्=पाना) र्म्म० पु० पानेयोग्य, मिलनेयोग्य, हासिल ।

प्रा० लमकाना } (सं० लम्बकर्ण)
लमहा } पु० शशा, खरहा,
लम्भा } खर्गोश, बकरा, गणेश, हाथी ।

सं० लम्पट—(रम्=खेलना) गु० व्यभिचारी, कुकर्मी, रंडीबाज़, लुच्चा, २ झूठा ।

सं० लम्फ—भा० पु० प्लुतगति, लपकना, तेज़चाल ।

सं० लम्ब—(सं०लम्ब्=ठहराना, या नीचे लटकाना) गु० ऊंचा, लम्बा, बड़ा, फैलाहुआ, पु० नर्तक, नचैया, कान्त, उत्कोच, लोलुप, आसक्त, २ स्त्री० नापविद्यामें खड़ी लकीर) अमूद । [सारथी ।

सं० लम्बक—पु० विभाग, समय,

सं० लम्बन—भा० पु० मालाकार, कंठा, हार, लम्बाई । [बड़ा ।

प्रा० लम्बा—(सं०लम्ब) गु० ऊंचा,

प्रा० लम्बाकरना—बोल० फैलाना, बढ़ाना, २ पीटना, मारना ।

प्रा० लम्बीसांसभरना—बोल० रोना, विलाप करना ।

सं० लम्बोदर—(लम्ब+उदर) पु० गणेशजी, गु० लम्बे पेटवाला ।

सं० लम्बोष्ट्र—पु० उष्ट्र, ऊंच ।

सं० लय—(ली=मिलना) पु० लीन, मिलना, मगन होना, २ नाश, प्रलय, ३ टेर, ताल, स्वर ।

सं० लयपालक—क० पु० राशिबैठा, मुतबन्ना ।

प्रा० ललकना—क्रि० अ० चढ़ना, धावा मारना, क्रि० स० चाहना ।

प्रा० ललकारना—क्रि० स० पुकारना हांकना, बुलाना, साम्हने करना, लड़ाई मांगना ।

प्रा० ललचाना—(लालच) क्रि० अ० तरसना, बहुत चाहना, लालसा करना । [केलिकली ।

सं० ललन—भा० स्त्री० नारी, जिह्वा,

सं० ललना—(लल्=चाहना) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री, कामिनी, सुन्दरी ।

प्रा० लला—(सं०लल्=चाहना) पु० लाल, बालक, गु० प्यारा, दुलारा, लाड़ला ।

सं० ललाट—(लल्, वा लड्=चाहना या खेलना) पु० शिर का अगला भाग, भाल, २ कपाल, मालब्य ।

सं० ललाम—(लल्=चाहना) गु० सुन्दर, मनोहर, २ पु० लांछण, चिह्न, ३ ध्वजा, पताका, ४ शृङ्ग, ५ प्रधान, ६ भूषण, ७ घोड़ा ।

सं० ललित—(लल्=चाहना) गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २ चंचल ३ कोमल, ४ प्यारा, ५ स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

सं० ललिता—(लल्=चाहना) स्त्री० एक गोपी का नाम जिसने उद्धव जीसेबात चीत की थी ।

प्रा० लल्लोपत्तो—पु० चापलूसी, खुशामद ।

सं० लव—(लू=काटना) पु० क्षण

पल, निमेष, २ हिसाब में भिन्न का अंश, भाग, ३ श्रीरामचन्द्रका बड़ा बेटा, ४ लौंग।

सं०लवङ्ग—(लू=काटना) स्त्री० लौंग, एक तरहकी औषध।

सं०लवण—(लू=काटना) पु० लोन, नोन, निमक, नमक, गु०खारा।

सं०लवणसमुद्र } (लवण+स-
लवणसागर } मुद्र वा सा-
गर पु० खारासमुद्र।

प्रा०लवा—(सं०लाव, लू=काटना) पु०बटेर, एक तरहका पखेरू।

सं०लशुन—पु० लहसन, लस्सुन।

सं०लषित—(लष्=चाहना वा भला दीखना) र्म्म०पु० विलोकित, दर्शित, चाहाहुआ, २शोभायमान।

प्रा०लसना—(सं० लस्=मिलना वा खेलना वा चमकना) क्रि० अ० सोहना, चपकना, फबना, सजना, २ चमकना।

प्रा०लसलसा—गु० चिपचिपा, लसीला। [टाहुआ।

सं०लसा—स्त्री०हरिद्रा,हल्दी, रचिप-

सं०लस्त—क० पु० थकित, श्रमित।

प्रा०लहँगा—पु०घँघरा।

प्रा०लहकना—क्रि० अ० चमकना, झलकना, २ लहरना, लूका उठना, तपकना, ३ हिलना।

प्रा०लहकौर—(लेह्य+कवल) दही बतासाजो वरकोस्त्रियां खिलातीहैं।

प्रा०लहना—(सं० लभ्=पाना) क्रि० स० लेना, पाना, जानना, मालूम करना, २ पु० कर्ज, ऋण, ३ भाग, नसीबा, किस्मत।

प्रा०लहर—(सं० लहरि) स्त्री० तरंग, हिलोरा, ढेऊ, हिलकोर, २ मनकी तरंग या मौज, ललक, ३ सांप के जहर चढ़ने से देह का लहराना, ४ रंगने में अथवा कारचोबी में निकलीहुई धारी।

प्रा०लहरना—क्रि० अ० हिलकोरना, हिलना, डोलना, २ जलन होना, ३ जलउठना।

प्रा०लहराना—क्रि० स० ललचाना, तरसाना, क्रि० अ० हिलकोरना, लहर उठना।

प्रा०लहरिया—(लहर) पु० एकतरह का रंगाहुआ कपड़ा। [ओढ़ा।

प्रा०लहरी—गु०तरंगी, चंचल, मौजी

प्रा०लहलहाना—क्रि०अ०फफकना-सरसब्जहोना, खिलना, बिकसना, फूलना, हरा होना, डहडहाना।

प्रा०लहसन—(सं० लशुन, लश्=मिलना) पु० एक तरहका कन्द।

प्रा०लहसनियां—एकतरह का बढ़िया पत्थर।

प्रा०लहू }
लेहू } (सं०लोहित, रुह्=पैदा होना)पु० खून, रुधिर, रक्त।
लोहू }

प्रा०लहूलुहान-बोल० लोहू से भरा हुआ, रक्त में डूबाहुआ ।

प्रा०लाई=लिये, वास्ते ।

प्रा०लांक } स्त्री० कटि, कमर, २ ला-
लंक } सा, ३ भूसी, भूसा ।

प्रा०लांघना—(सं० लंघन) क्रि० स० कूदना, फांदना, चढ़ना, २ पार होना, तैरना ।

सं०लाक्षा—(लक्ष्=चिह्न करना) स्त्री० लाख, लाह ।

सं०लाक्षणिक—क० पु० लक्षण युक्त, अर्थ बोधक शब्द, यौगिक ।

सं०लाक्षण्य—क० पु० शुभाशुभ, लक्षणज्ञ, बुराई भलाई का बोधक।

प्रा० लाख-(सं० लक्ष) गु० सौ हज़ार ।

प्रा०लाख—(सं० लाक्षा) स्त्री० लाह जिससे काग़ज़ पत्र बंध किये जाते हैं, २ जिसके रंग से महौरि-या महावर बनता है ।

प्रा०लाग (सं०लङ्ग=मिलना)स्त्री० मारना, चोट, २ लगान, लगाव, ३ वैर, द्वेष, द्रोह, ईर्षा, डाह, ४ प्यार, छोह, मोह,५मेल,सम्बन्ध,६ लागत, ख़र्च, ७ क़सूर, चूक ।

प्रा०लागत—स्त्री०ख़र्च, उठान ।

सं०लाघव—(लघु)भा०पु०हलकाई, छोटापन, लघुता, क्षुद्रता, अपमान, २ आरोग, नीरोगता, तन्दुरुस्ती ।

सं०लाघवेन—संक्षेपतः, मुख़्तसरन्, क़िस्सा कोताह ।

सं०लाङ्गल-(लगि=मिलना)पु०हल।

सं०लांगूल } (लगि=मिलना या
प्रा०लंगूल } लगारहना)स्त्री०पूंछ ।

प्रा०लाज—(सं०लज्जा)स्त्री० शर्म, हया, संकोच लज्जा । [लाई ।

सं०लाज—पु०उशीर,२खस,लावा,

सं०लाजावर्त्त—(लाज+आवर्त) पु०सायवान, रावटी, छोलदारी ।

सं०लाञ्छन(लाञ्छ्=चिह्न कर-ना, दाग़ लगाना) पु० चिह्न, २ कलंक, दाग़ ३ नाम ।

सं०लाञ्छना—भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, तिरस्कार [स्कृत, निन्दित।

सं०लाञ्छित—कर्म०अपमानित,तिर

सं०लाट-पु० देशान्तर, २ वस्त्र, पट वस्त्र, गु० जीर्ण, प्राचीन, पुराना ।

प्रा०लाटी—स्त्री० फैटी, फैफड़ी, जो होठ और तालू के सूखने से होंठों पर पड़जाती है ।

प्रा०लाठ-(सं०यष्टि) स्त्री० खम्भा, मीनार, २सोंटा, ३कोल्हूकालाठा ।

प्रा०लाठी—(सं०यष्टि) स्त्री० ल-कड़ी, सोंटा, छड़ी ।

प्रा०लाड़—(सं०लड़्=खेलना) पु० प्यार, मोह, छोह, खेल ।

प्रा०लाड़लड़ाना—बोल० दुलार-

ना, प्यार करना ।

प्रा॰ **लाड़ला**—(लाड़) गु॰ प्यारा, दुलारा, लड़ैतालाल ।

प्रा॰ **लात**—स्त्री॰ पांव की मार ।

सं॰ **लाभ**—(लभ्=पाना) पु॰ फ़ायदा, फल, प्राप्ति, पाना, मिलना, नफ़ा।

प्रा॰ **लाल**—(सं॰लल्=चाहना, या लड्=खेलना) गु॰ प्यारा, प्रिय, लाड़ला, दुलारा, २ लालरंग, रक्त वर्ण, ३ पु॰ छोटाबालक, बेटा, ४ (सं॰ लाला) स्त्री॰ लार, थूक ।

प्रा॰ **लालबुझक्कड़**—पु॰ बुद्धिमान् मनुष्य जो हर बात को झट समझ जाय, या जो होनेवाला हो उस को सोच बिचार के पहले से कहदे पर यह शब्द ठट्ठे से या तानासे ऐसे मूर्ख आदमीके लिये बोलाजाता है जो और सब आदमियों से अपनेतई अधिक बुद्धिमान् समझता हो और सच मुच निरा गँवार हो जैसे ऐसे आदमियोंने कि जो कभी हाथीनहीं देखाथा, उसके पांवोंके निशान कीचड़ में देखकर लाल बुझक्कड़ से पूंछा कि ये क्या हैं तब उसने उत्तर दिया कि "यह तो बूझे लाल बुझक्कड़, और न बूझे कोय । पाँयन चक्की बांध कर कहिं हरना कूदा होय ।" अर्थ—यह बात सिवाय लाल बुझक्कड़ के और कोई नहीं समझ सक्ता है क्या हरिन तो अपने पैरों में चक्की बांध कर यहां नहीं कूदा है ।

प्रा॰ **लालच**—(सं॰ लालसा) पु॰ लोभ, चाहना, तृष्णा, तमअ ।

प्रा॰ **लालची**—गु॰ लालच करनेवाला, लोभी, आपस्वार्थी, खुदग़र्ज़ ।

सं॰ **लालन**—(लल्=चाहना) पु॰ बहुत सनेह करना, बहुत प्यार से बालक को पालना, खिलाना, फुसलाना, दुलारना ।

प्रा॰ **लालना**—(सं॰ लालन) क्रि॰ स॰ लड़ाना, बहुत प्यार से बालक को पालना ।

सं॰ **लालसा**—(लस्=चाहना) स्त्री॰ बहुत चाह, इच्छा, अभिलाष ।

प्रा॰ **लाला**—पु॰ साहिब, बाबू, २ गुरु, पढ़ानेवाला, मास्टर, ३ कायथों की और महाजनों की पदवी ।

सं॰ **लालित**—(लाल्+इत, लल्=स्नेह सहित प्यार) र्म्म॰ पु॰ पालित लाड़ित ।

सं॰ **लाला**—स्त्री॰ पसेव, पसेउ, मुंह कीलार, थूक ।

सं॰ **लालाटिक**—पु॰ प्रभु भाग्योपजीवी, भाग्याधीन, भाग्य का भरोसा करनेवाला ।

सं॰ **लालित्य**—(ललित) भा॰ पु॰ सुन्दरता, मनोहरता, कोमलता ।

प्रा० लाली—(लालना) क्रि० स० लड़ाई, प्यारकिया, दुलार किया, २ (सं०लल्=चाहना) गु० दुलारी, प्यारी, ३ स्त्री० ललाई,सुर्खी ।

सं० लाल्य—र्म० पु० लालनाई, प्यारयोग्य, लालनीय ।

सं० लावण्य—(लवण) भा० पु० देह सौन्दर्य्य, सुन्दरता, शोभा, २ नमकीनी, नमक का स्वाद ।

सं० लास—पु० नृत्य, नाच, मोद ।

सं० लासक—क० पु० मयूर, मोर, २ नर्तक, नाचनेवाला ।

प्रा०लाह—(सं०लाक्षा) स्त्री०लाख।

प्रा० लाह, लाहा, लाहू—(सं०लाभ) पु०लाभ, फायदा, फल ।

प्रा० लिखतं—(सं० लिखित) र्म० पु० लिखाहुआ कागज जैसे किबाला, तमस्सुक आदि ।

सं० लिखक—(लिख्+अक) क० पु० लिखनेवाला, कातिब ।

प्रा० लिखना—(सं० लिखन,लिख=लिखना) क्रि० स० लिखाई करना, लिख देना ।

प्रा० लिखलेना—बोल०नकल करना, लिख रखना ।

प्रा० लिखा—(लिखना) पु० भाग, प्रालब्ध, कर्म, होनी, होनहार, २ लेख, लिखावट, र्म० लिखाहुआ ।

प्रा०लिखाई—(लिखना) भा० स्त्री० लिखने के दाम, २ लिखने की मिहनत, ३ लिखनेका काम,लेखकी।

प्रा० लिखावट—भा० स्त्री० लिखने का या लिखाई का काम, तहरीर।

सं० लिखित—(लिख्=लिखना) र्म० लिखाहुआ, २ पु० लेख, चिट्ठी, पत्र, लिपि ।

सं० लिखितव्य—र्म० पु० लिखने योग्य, लेखनीय, लिखनेलायक ।

सं०लिङ्ग—(लिगि=जाना वा चित्र या चिह्न करना) पु० पुरुष चिह्न, इन्द्री, २ शिव की मूरत, ३ (व्याकरणमें) जाति, जैसे पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग आदि ।

सं० लिङ्गित—र्म० पु० चिह्नित ।

प्रा० लिट्टी—स्त्री० बाटी, अँगाकड़ी, आटे का गोला जिसको अँगारों में पकाकर खाते हैं ।

प्रा० लिपटना-क्रि० अ० चिपकना, सटना, मिलना ।

सं० लिपि, लिपी—(लिप्=लेपना) भा० स्त्री० लिखा हुआ कागज, लिखित, लेख, हस्ताक्षर, हाथका लिखाहुआ, नक़ल ।

सं० लिपिक, लिपिकार—क० पु० लेखक, चित्रकार ।

सं० लिपिसज्जा—स्त्री० क़लमदान ।

सं० लिप्त—(लिप्=लेपना) क०लिपा हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ, लेसा हुआ, चर्चा हुआ ।

सं० लिप्सा—स्त्री० लाभ, कांक्षा, लाभवासना, आग्रह, ख़्वाहिश ।

सं० लिप्सित—र्म्म०पु० वाञ्छित ।

सं० लिप्सु—क० पु० वाञ्छक, ख़्वाहिशमन्द । [चिह्न ।

प्रा० लिम—पु० कलङ्क, दाग़, २

प्रा० लिलाट, लिलाड़, लिलार—(सं० ललाट) पु० शिर का अगला भाग, ललाट भाल, २ कपाल, मारब्ध, भाग ।

प्रा० लिवैया—(लेना) क० लेनेवाला ।

प्रा० लीक, लीका—(सं० लेखा) स्त्री० गाड़ी के पहिये का निशान, पगडंडी, लकीर, २ कलंक, दाग़ ।

प्रा० लीख—स्त्री० जूं का अंडा ।

प्रा० लीचड़—गु० सूम, कञ्जूस, कृपण, लोभी ।

प्रा० लीची—स्त्री० एक फल जो चीन देश से फैला है ।

अं० लीडर=अगुवा, पेशवा ।

सं० लीढ़—(लिह्=स्वाद लेना) र्म्म० पु० आस्वादित, स्वादयुक्त ।

प्रा० लीतरा—पु० पुराना जूता ।

सं० लीन—(ली=मिलना वा गलना) क० लय, लगाहुआ, मिलाहुआ, डूबाहुआ, मग्न, २ गलाहुआ, ३ सोखाहुआ ।

प्रा० लीपना—(सं० लेपन) क्रि० स० पोतना, लेसना, थोपना ।

प्रा० लीमू—(सं० निम्बु, निम्ब्=सींचना) पु० नींबू, लेमू, एक खट्टा फल । [कपड़े का टुकड़ा ।

प्रा० लीर—स्त्री० धज्जी, कतरन,

प्रा० लील—(सं० नील) स्त्री० नील, गु० नीला ।

प्रा० लीलना—क्रि० स० निगलना ।

सं० लीला—(ली=मिलना, या ला=लेना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार, विलास, कामकेलि, शृंगारभाव ।

सं० लीलावती—(लीला) स्त्री० विलास करनेवाली स्त्री, २ भास्कराचार्य की बेटी का नाम, ३ संस्कृत में एक गणित विद्या की पुस्तक का नाम ।

सं० लीलहि—स्त्री० बिनाश्रम, बेमेहनत, २ खाय, निगल जाय ।

प्रा० लुकना—क्रि० अ० छिपना ।

प्रा० लुकाना—क्रि० स० छिपाना ।

प्रा० लुगाई, लोगाई—(लोग) स्त्री० नारी, स्त्री ।

सं० लुञ्चन—(लुच=ऊपर जाना, नोचना) भा० पु० उत्पाटन, उखाड़ना, नोचना ।

प्रा० लुटना—(सं० लुट्=लुटना या

लूटना) क्रि० अ० लुटजाना, छिनजाना ।

प्रा० लुटिया—स्त्री० छोटा, लोटा ।

प्रा० लुटेरा } (लूटना) क० पु०
लुटेरू } लूटनेवाला ।

सं० लुठन—(लुठ=लुण्ठन) भा० पु० घोड़ादिका धरती पर श्रम दूर करने के लिये लोटना ।

सं० लुण्ठक—(लुण्ठ=चोरीकरना) क० पु० चोर, स्तेयकारक ।

सं० लुण्ठित—र्म० पु० अपहृत, चोरित, चुराया हुआ ।

प्रा० लुढ़कना } (सं० लुठन, लुठ्=
लुढ़ना } ढुलकना) क्रि० अ० ढुलकना, गिरना, ढनमनाना ।

प्रा० लुढ़कजाना—बोल० मरजाना ।

प्रा० लुढ़ाना—(लुढना) क्रि० स० ढुलकाना, लुढ़काना, गिरा देना ।

प्रा० लुपरी—स्त्री० एकतरहकी लपसी।

सं० लुप्त—(लुप्=काटना) क० पु० नष्ट, बरबाद, छिपजाना, अदृश्य, गुप्त ।

सं० लुब्ध } (लुभ्=लोभकरना, या
लुब्धक } मोहना) क० पु० लोभी, लालची, २शिकारी, ३लुच्चा, लंपट ।

प्रा० लुभाना—(सं० लोभन) क्रि० स० ललचाना, मोहना, तरसाना, चाहना ।

सं० लुभित—र्म० पु० आकांक्षित, लुब्धाहिशमन्द ।

प्रा० लुहाँगी (लोह) स्त्री० ऐसी लाठी जिसपर लोहा जड़ा रहता है ।

प्रा० लुहार } (सं० लोहकार) पु० लोहे
लोहार } का काम बनानेवाला ।

प्रा० लू—स्त्री० गर्महवा, लूक, लपट ।

प्रा० लूक } (सं० उल्का) पु० आगकी
लूका } चिनगारी, पतंगा, लपट ।

प्रा० लूकालगाना—बोल० आग लगाना, जलाना, २ झगड़ा उठाना, बखेड़ामचाना ।

प्रा० लूट—(सं० लुट्=लूटना) भा० स्त्री० डकैती, लूटपाट ।

सं० लूटक—पु० कमरबंद, २ लूटने वाला, ठग ।

प्रा० लूटपूट—बोल० लूटना और उजाड़ना ।

प्रा० लूटना—(सं० लुट्=लूटना) क्रि० स० छीनलेना, लूटपाट करना ।

प्रा० लूटपाट—बोल० लूटना और मारलेना ।

प्रा० लूटालूट—बोल० लूट, छीना, झपटी ।

प्रा० लूणी } (लवण) गु० लोना,
लूनी } खारा, २ (सं० नवनीत) मक्खन, मास्वन ।

प्रा० लून—(सं० लवण) पु० निमक, नमक, लोन ।

सं० लून—(लू=छेदना, काटना)

म्र्म० पु० काटागया, लूनागया ।

प्रा० लूनिया-(सं० लवण) गु० खारा, २ पु० एक पौधा, ३ बेलदार, वह आदमी जो औरके लिये रस्ता साफ़ करताहै, ४ नमक बनानेवाला, ५ बनियों की एक जाति ।

सं०लूम पु० लांगूल, पुच्छ, पूंछ ।

प्रा० लूला-गु० बिन हाथका, टुंडा, लुंजा ।

प्रा०लेई-स्त्री०आटेका कलप या माड़ी जिससे काग़ज़ आदि साटते हैं ।

प्रा० लेंड़ी-स्त्री० बकरी की मेंगनी, २ एक तरह का कुत्ता गु० नामर्द, असमर्थ ।

सं० लेख-(लिख्=लिखना) भा० पु० लिखाहुआ काग़ज़, पत्र, लिपि ।

सं० लेखक-(लिख्=लिखना) क० पु० लिखनेवाला, मोहर्रिर ।

सं० लेखनी-(लिख्=लिखना) ग० स्त्री० लिखने की चीज़, कलम ।

सं० लेखनीय-म्र्म०पु० लेख्य, लिखितव्य, लिखनेलायक़ ।

सं० लेखा-(लिख्=लिखना) पु० हिसाब, गणित, २ स्त्री० लकीर, रेखा ।

सं० लेख्य-(लिख्=लिखना) म्र्म० पु० लिखने योग्य, २ पु० चिट्ठी, पत्री, लिखा हुआ काग़ज़ ।

सं०लेख्यगृह-धि०पु०दफ़्तर, कचहरी।

प्रा० लेटना-क्रि० अ० सोना, आराम करना ।

प्रा० लेनदेन भा० पु०
लेवादेई भा० स्त्री० } (लेना देना) ब्यौपार, व्यवहार ।

प्रा०लेना (सं०ला=लेना) क्रि०स० लेलेना, ग्रहण करना, गहना, पकड़ना, स्वीकार करना, चुनना, ख़रीदना ।

सं० लेप-(लिप्=लेपना) पु० लेपन, मरहम, मलहम ।

सं० लेपक-क०पु० जर्राह । [मरहम ।

सं० लेपन-भा०पु० लेसनेकी वस्तु,

सं० लेप्य-म्र्म० पु० लगाने के योग्य, लेसने के लायक़ ।

प्रा० लेपालक-(ले=पालना) पु० गोदलिया हुआ बेटा, धर्मका बेटा, पोष्यपुत्र, मुतबन्ना । [२ शन ।

प्रा० लेवा-(लेना) पु० लेनेवाला

सं० लेश (लिश्=थोड़ाहोना) गु० थोड़ा, छोटा, अल्प, किंचित्, पु० छोटाई, अल्पता, कण ।

सं० लेशमात्र-गु०थोड़ाभी, लघुतर ।

सं० लेह्य (लिह्=स्वाद लेना, चाटना) म्र्म० चाटने योग्य, पु० अमृत ।

अं० लैस-तैय्यार कपड़ा के किनारे का फ़ीता ।

प्रा० लोई-(सं० लोमीय, लोम) स्त्री० एक तरहका ऊनीकपड़ा, छोटा कम्बल, २मुँहकी चमक, लावण्यता ।

प्रा० लौं } नित्य सं० तक, तलक,
लौं } लग, अवधि ।

प्रा० लौंग } (सं०लवंग) स्त्री०एक
लौंग } तरहका गर्म मसाला।

प्रा० लौंदा-पु० मिट्टी का ढेला ।

सं० लोक-(लोक्=देखना)पु०लोग, मनुष्य, २ भुवन, सृष्टि के विभाग, तीन लोक प्रसिद्ध हैं (१ स्वर्ग लोक अथवा देवलोक अर्थात् देवताओं के रहने की जगह, २ मर्त्य लोक यह संसार जिसमें मनुष्य रहते हैं, ३ पाताल लोक अर्थात् नीचे का लोक) कितने एक ग्रन्थों में सात लोक लिखे हैं (१ भूर्लोक, पृथ्वी, २ भुवर्लोक जिस में ऋषि मुनि और सिद्ध आदि रहते हैं और वह सूर्य और पृथ्वी के बीच में है जिसको अन्तरिक्ष भी कहते हैं ३ स्वर्लोक अथवा स्वर्ग जिस में इन्द्र और देवता रहते हैं और वह सूर्य और ध्रुव के तारे के बीच में है, ४ महर्लोक जिसमें भृगु आदि ऋषि रहते हैं जो ब्रह्मा के जीने तक जीते रहते हैं और जब तीन लोक में प्रलय होजाता है और उसकी लपट मह लोक तक पहुंचती है तब वे सब ऋषि ५ जन लोक में चढ़ जातेहैं जिस में ब्रह्मा के बेटे सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार रहते हैं, ६ तपोलोक जहां तपस्वी रहते हैं, ७ सत्यलोक अथवा ब्रह्मलोक अर्थात् ब्रह्मा का लोक इन में के पहले तीन लोक हर एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा के दिन के अन्त में नाश हो जाते हैं, और पिछले तीन लोक ब्रह्मा के जीने तक अर्थात् ब्रह्मा के १०० बरस तक रहते हैं और चौथा महर्लोक भी उसी समय तक रहता है पर नीचे के तीन लोक प्रलय के समय में जलते हैं तब उसकी तपनके कारण वहां कोई नहीं रहता बहुत से ग्रन्थों में १४ लोक लिखे हैं—७ लोक यही जो ऊपर लिखे गये और ७ पाताल हैं जिनको पाताल शब्द के वर्णन में देखो ।

लोकखंड-अथवा कतिपयदेशों और प्रदेशों के प्राचीन संस्कृत और आधुनिक नाम पाठकों के सुभीते के हेतु उद्धृत किये जाते हैं ।

आधुनिक प्रचलित एशिया का संस्कृत नाम असेचनक अथवा विष्णुक्रान्त अनुमितहै इसी प्रकार यूरोप का इपुजात वा अश्वक्रान्त है यथा

भविष्यपुराणे ।

इपुजाते नराः शुक्राः
शूराःशिल्पविशारदाः ।

वाणिज्यादिरताः क्रूरा
मायामोहविमिश्रिताः ।
अफ्रीका का संस्कृत नाम सूर्यारिका
वा रथक्रान्त है यथा भविष्यपुराणे।
रथक्रान्ते नराः कृष्णाः
प्रायशोविकृताननाः । बदशक्ल
आममांसभुजःसर्वे कच्चा
शूराः कुञ्चितमूर्द्धजाः ॥ घूंघरवाले

प्राचीननाम-- आधुनिकनाम

प्राचीननाम	आधुनिकनाम
आवर्तन	ब्रिटेन
इन्द्रद्वीपवा इन्दुद्वीप	इङ्गलैण्ड
रोम वा रूम	रोम
पटचर	इटली
पशुशील	पोर्टुगाल
क्रौंच	जरमनी
सैनिक वा कुक्कुट	हालेण्ड,बेलजियम
अश्वक वा अश्वी या	अस्ट्रीया
मलिया, कुहक	गाल वा फ्रांस
तामसदेश	स्पेन
माटक वा मारक	डेनमार्क स्केण्ड नेविया
बर्बर	बारबरी
वारिधान, वारुण	अफ्रीका का उपद्वीप
शक तुरुस्क	एशियाई तुर्की
रुष	रसिया
ईख	सैबीरिया
तुखारा	बुखारा
पारद, महाचीन	चीन
तालतोषक	तिब्बत
पार्वत	तातार
बाह्लीक	बलख
आवर्त्त	अरब
पारस्य	ईरान
यवन	यूनान
नार्दिनाश, कारस्कार	मदानी
पह्लव	काबुल
गन्धार	कन्धार
अपवाह, अपरान्त	मस्कत
सिंहलद्वीप	सीलोन
उपमल्वका	मलाका
ब्रह्मोत्तर ब्रह्मदेश	ब्रह्मा
कुमारिका	हिन्दुस्थान
कुमारद्वीप, स्वर्णभूमि	अमेरिका
उत्तरकुमार	उत्तर अमेरिका
दक्षिणकुमार	दक्षिणअमेरिका
तलह	ब्राज़ील
हिरण्यपुर	पेरू
रमणक	अस्ट्रेलेशिया
स्वर्णप्रस्थ	पालिनेशिया

कुमारिका नाम हिन्दुस्थानान्तर्गत प्रदेशों के नाम

दरद	भूटान
दरदालिंग	दारजिलिंग

पंजनद	पंजाब
गैरिककाश्मीर	काश्मीर
उत्तर कोशल	फैजाबाद, नव्वाबगंज
काशी	बनारस
कुरुजांगल	कुरुक्षेत्र
इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली
अवन्ति, विशाला	उज्जैन
गुर्जराट	गुजरात
काञ्ची	करनाट
पाण्ड्य	मलाबार
किष्किन्धा	दक्षिणदेश
केकय	हिसार
माहिषक	मैसूर
उतकल, ओड्र	उड़ीसा
सुराष्ट्र,	महाराष्ट्र
सिन्धुसौवीर	सिन्धदेश
विदेह, मिथिला	तिरहुत
महोदय, कान्यकुब्ज	कन्नौज
मगध, कीकट	गया
पाटलिपुत्र	पटना
अंग	राजमहल, आरा
चम्पा	भागलपुर
पुण्ड्र	मेदिनीपुर
बंग, गौड़	बंगाला
प्राग्ज्योतिष	कामरूप
सूरसेन	मथुरा
अन्ध्र	तिलंगाना
कलिंग	उत्तरीयसरकार
कुलूत	कूलू
चेदि	चन्देरी
चोल	कर्नाटक
अश्मक	ट्रावंकोर
विदर्भ	बरार
श्रावस्ती	(सहेट महेट) एकौना
सौराष्ट्र	काठियावाड़

सं० लोकनाथ–(लोक+नाथ)पु० राजा, २ शिव, ३ ब्रह्मा, ४ विष्णु।

सं० लोकप-(लोक=सृष्टि, वा भुवन, प=बचाना) पु० लोकपाल।

सं०लोकपाल–(लोक, पाल=पालना) पु० राजा, दिक्पाल।

सं० लोकबांधव--पु० सूर्य्य।

सं० लोकलोचन-पु० सूर्य्य।

सं० लोकमाता-(लोक+माता) स्त्री० संसार की मा, लक्ष्मी।

सं० लोकयात्रा-स्त्री० संसृति, जन्म मरण, लोकव्यवहार, प्राणरक्षा, रोजी, आजीविका।

अं०लोकल=देशीय, मुकामीस्थानीय।

अं० लोकलस्यल्फगवर्नम्यण्ट=स्थानीय आत्मशासन प्रणाली, खुद इख्तियारी मुकामीहुकूमत, जैसे आनरेरी मजिस्ट्रेट।

सं० लोकालोक-(लोक=देखना, अलोक=नहीं देखना) पु० एक

पहाड़ की श्रेणी जिसको सोचते हैं कि सातों समुद्रों को घेरे हुये और इस संसार की सीमा है ।

सं० लोकेश-(लोक+ईश)पु० ब्रह्मा, २ राजा ।

प्रा० लोग-(सं०लोक) पु० मनुष्य, आदमी, जन ।

सं० लोकापवाद-पु० अपकीर्ति, लोकनिन्दा, अंगुश्तनुमाई ।

सं० लोचक-(लोच्+अक) पु० मांसपिण्ड, नेत्रतारा, काजल, बेंदी, टीका, नीलवस्त्र, कर्णफूल, कदली, साँपकी केंचुली ।

सं० लोचन-(लोच्=देखना) ण० पु० आंख, नेत्र, नयन २ संख्या ।

प्रा० लोटना-(सं लुट्=फिरना, घूमना) क्रि०अ० घूमना, फिरना, रोलना, २ तड़फना, छटपटाना ।

प्रा० लोटपोटहोना-बोल० मोहित होना, किसी के प्यार में डूबना ।

प्रा० लोटा-पु० गड़वा, पानी डालने का बरतन ।

प्रा० लोढ़ा-(सं० लोष्ट, लोष्ट्=इकट्ठा होना) पु० सिल बट्टा, २ ओसवाल महाजनों की एक जात ।

प्रा० लोणा } (लवण) गु० खारा, २ सुन्दर ।
लोना }

प्रा०लोथ-(सं०लोचक, लोच्=देखना) स्त्री०मरा शरीर, लाश, मृतक ।

प्रा० लोथरा-(सं० लोचक) पु० मांस का पिंड ।

प्रा० लोदी-पठानों की एक जाति ।

प्रा० लोन-(सं० लवण) पु० नमक, निमक, नून ।

प्रा० लोनमिर्चलगाना-बोल० अपनी तरफ़से बहुत बढ़ाके कहना ।

प्रा० लोनाई-(सं० लावण्य) भा० स्त्री० सुन्दरता, शोभा ।

सं० लोप-(लुप्=काटना) पु० काटना, मिटाना, व्याकरण में अक्षर अथवा पद को उड़ा देना या निकाल देना, २ छिपा, अदृश, गुप्त, ३ नाश, ४ छीलछाल, काटकूट ।

सं० लोपामुद्रा-स्त्री० अगस्त्यऋषि की धर्मपत्नी ।

सं०लोपी-क०पु०नाशर,नाशकर्ता ।

सं० लोप्य-र्म० नाशनीय, नाश्य ।

प्रा० लोबान-(अ०लुबान) पु० एक तरह की सुगन्धित चीज जिसको धूपकी तरह देवता के साम्हने आग पर रखते हैं ।

सं० लोभ-(लुभ्=लालच करना) पु० लालच, पराये धनके पाने की चाह, तृष्णा, तमअ ।

सं०लोभी-(लोभ)क०पु०लालची ।

सं० लोम-(लू=काटना) पु० देह पर के बाल, रोम, रूँगटे ।

प्रा० लोमड़ी-(सं०लोमश,लोप)

स्त्री० एक जानवर का नाम ।

सं० लोमश—(लोम, अर्थात् जिसके शरीर पर बहुतबालहों) पु० एक ऋषि का नाम, जिसके गले में राजा परीक्षित ने मरा हुआ सांप डाला था और उसके चेले शृङ्गी ऋषि ने उसको शाप दिया कि सातवें दिन राजा को तक्षक सांप डसेगा तब श्रीशुकदेव जी ने आकर राजा परीक्षित को, श्रीमद्भागवत सुनाकर उसका उद्धार किया गु० जिस के बहुत बालहों ।

प्रा०लोयन—(सं०लोचन)पु०आंख।

प्रा० लोर—(सं०लोल) पु० झुमका, २ आंसू ।

सं० लोल—(लुल्=हिलना)गु० हिलता हुआ, चंचल, २ पु० आंसू, ३ स्त्री० जीभ, ४ लक्ष्मी ।

सं० लोलुप—(लुप्=नाश करना अर्थात् सिवाय लोभके और सब चाह को नाशकरना, या लुभ्=लोभकरना यहां भ को प होजाता है) गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची ।

सं०लोलुभ—(लुभ्=लालचकरना) गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची ।

सं० लोह } लौह } (लुह=चाहना,वा लू=काटना) पु० लोहा, एक तरह की धातु ।

सं० लोहकार—क० पु० लुहार ।

प्रा० लोहा—(सं० लोह) पु० एक प्रकार की धातु ।

प्रा० लोहाबजाना—बोल० तलवार से लड़ना ।

सं० लोहित—(रुह्=पैदाहोना) गु० लाल, पु० लोहू, २ लालरंग ।

सं० लोहिताक्ष—(लोहित+अक्ष) पु० लालआंख, रक्तनेत्र, विष्णु, कोकिला पक्षी ।

प्रा०लोहिया—(लोह) गु० लोहका ।

प्रा० लौंडा—पु० लड़का, छोकरा, दास, गुलाम ।

प्रा० लौंडिया } लौंडी } स्त्री० दासी, छोकरी ।

प्रा०लौंद पु०मलमास,अधिकमहीना।

प्रा० लौ—(सं० लय) स्त्री० जलती हुई बत्ती का शौला या ज्वाला, २ ध्यान, मन, लगन ।

प्रा० लौलगाना—बोल० ध्यानकरना, ईश्वर की उपासना या प्रार्थना में स्थिर होना ।

प्रा०लौलगना—बोल०ध्यानलगाना ध्यानलगना, किसी को बार बार याद करना ।

सं०लौकिक—(लोक) गु० सांसारिक जो संसार में प्रसिद्ध हो, जो लोकव्यवहार में आताहो, दुनियावी दुनियवी ।

प्रा०लौटना—क्रि० अ० वापसआना, फिरना, घूमना, उलटा फिरना ।

प्रा० लौना-(सं० लवण, लू=काटना) क्रि० स० काटना, कटनी करना. २ कमचांट में दूसरा बांट लगाकर उसे पूरा करना, लगना।

अं० ल्यजिसलेटिवकौन्सिल= न्यायोत्पादनसभा, क़ानून इजरा-ईदरबार।

प्रा० ल्यारी-पु० भेड़िया, हुंडार।

(व)

सं० व-(सं० वा=बहना, जाना) पु० हवा, २ राहु, ३ कल्याण, ४ समुद्र, ५ बाघ, ६ वरुण, ७ मन्त्रण, सत्कार, इस अक्षर की जगह हिन्दी में बहुत बार व लिखा जाता है इस लिये जो शब्द इस में नहीं मिले उसको बमें देखनेसे मिलेगा।

सं० वंश-(वश्=चाहना) पु० बेटे पोते, कुल, सन्तान, सन्तति, २ बांस।

सं० वंशभोज्य- पु० पितृपितामह, प्रभृतिरर्जिताभूम्यादि संपत्, पितृ सम्पत्, पुरुषाओं से चली आती जो जीविका, पितरों की सम्पदा।

सं० वंशलोचन-(वंश=बांस, रुच्=चमकना) पु० बांस में से निकली हुई कपूर सी धौली चीज़ जो बहुत सी औषधियों में काम आती है।

सं० वंशावली- (वंश+आवली) स्त्री० पुरुषों की नामावली, पीढ़ी, परंपरा, वंशक्रम, वंश श्रेणी।

सं० वंशिका-स्त्री० अगर, सुगन्धकाष्ठ, मुरली, वंशरोचन।

सं० वंशी -(वंश=बांस) स्त्री० बांसका बना हुआ एक बाजा, बांसुरी, मुरली।

सं० वंशीधर- (वंशी=बांसुरी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० श्री कृष्ण, मुरलीधर।

सं० वंशीवट-(वंशी + वट) पु० एक बड़ का पेड़ जिस के नीचे बैठकर श्रीकृष्णचन्द्रजी वंशी बजाया करते थे।

सं० वंश्य -गु० कुलीन, श्रेष्ठकुलोत्पन्न पु० पुत्र, सप्तम पुरुषाद्भिन्नः वंशेभवः।

सं० वक -वक शब्द को देखो।

सं० वकवृत्ति-स्त्री० पु० पाखण्डी, धूर्त, दग़ाबाज़।

सं० वकुल -पु० मौरश्री वृक्ष।

सं० वक्तव्य -(वच्=बोलना) स्त्री० पु० कहने योग्य, बोलने योग्य।

सं० वक्ता -(वच्=कहना, बोलना) क० पु० बोलनेवाला, कहनेवाला, गोया, स्पीचर।

सं० वक्त्र -(वच्=बोलना) पु० मुँह, मुख।

सं० वक्तृता -भा० स्त्री० कथन, व्याख्यान, स्पीच, वाज़ करना।

सं० वक्र -(वकि=टेढ़ा होना) गु०

टेढ़ा, बांका, कुटिल, गु० शनैश्चर, जलका भ्रमर, मंगलग्रह ।

सं० वक्रनक्र—पु० शुकपक्षी, सुग्गा, २ पिशुन, दुर्जन ।

सं० वक्राङ्ग—पु० हंस, चकवापक्षी, सारस, गु० कुब्ज, टेढ़ा अंग ।

सं० वक्रोक्ति—(वक्र=टेढ़ा, उक्ति=कहना) स्त्री० टेढ़ा कहना, टेढ़ी बात, व्यंग बचन, कुटिलोक्ति, काकोक्ति, काकुवचन, ताना, २ एक अलङ्कार जिस में टेढ़ीबात कही जातीहै जैसे

"हम कुल घालक सत्य तुम"
"कुल पालक दश शीश"
अथवा
"मैं सुकुवारि नाथ बन योगू"
"तुमहिं उचित बन मोकहँ भोगू"

सं० वक्षःस्थल—(वक्षस्=छाती (वह=लेजाना) और स्थल=जगह) पु० छाती, हृदय, उरस्थल ।

सं० वक्षोज—(वक्षस्+ज) पु० उरोज, स्तन, कुच । [कुटिल ।

सं० वङ्क-(वकि=टेढ़ाकरना) गु० बांका,

सं० वङ्किल-क० पु० कण्टक, काँटा, त्रिशूल ।

सं० वङ्ग—(वगि=जाना) पु० रांगा, एक धातु, २ बंगाला देश ।

सं० वचन-वचन शब्दको देखो ।

सं० वचनव्यक्ति-स्त्री० बात की सफ़ाई, बात में सफ़ाई ।

सं० वज्र-वज्र शब्द को देखो ।

सं० वज्रदन्त-पु० शूकर, मूषक, मूस ।

सं० वज्राघात-पु० बज्रपात, बज्रसे मारना ।

सं० वञ्चक-(वञ्च=ठगना) क० पु० ठग, ठगने वाला, धूर्त, दगाबाज़, २ गीदड़, सियार, ३ बभ्रु, नकुल, न्योला ।

सं० वञ्चित-(वञ्च=ठगना) र्म० पु० ठगाहुआ, ठगागया, महरूम ।

सं० वट-(वट्=घेरना) पु० बड़कापेड़ ।

सं० वटर-(वट्=लपेटना) पु० मुर्ग, २ चोर, ३ पगड़ी, ४ आसन, चटाई ५ लकुट, ६ छड़ी गु० धूर्त, दुर्जन कुरूप, आलसी ।

सं० वटी-र्म० स्त्री० औषध की गोली, २ रस्सी ।

सं० वटु-(वट्=बोलना) पु० ब्रह्मचारी, २ बालक, विद्यार्थी, ब्राह्मण कुमार ।

सं० वटुक-(वट्=बोलना) पु० बालक, २ बालक रूप भैरव ।

सं० वड़-गु० बड़ा, विस्तीर्ण पु० विस्तार, दीर्घता ।

सं० वडिश-पु० कटिया, बंशी, मछलियों के पकड़ने का यन्त्र ।

सं० वण्टक-(वण्ट=बाँटना, विभागक) क० पु० बांट लोहा या पत्थर के, बांटनेवाला, विभाजक ।

सं० वत्-बराबर, समान तुल्य, नाईं ।

सं०वत्स-(वद्=बोलना, जिससे प्यारसे बोलते हैं) पु० बच्चा, बालक, २ बछड़ा, ३ छाती, ४ बरस, ५ प्यार का शब्द । [संवत् ।
सं० वत्सर—(वस्=रहना पु० बरस,
सं० वत्सल-(वत्स=प्यार,ला=लेना) गु० प्यारा,प्रेमी,स्नेही,मोही, दयालु, कृपालु, रहीम ।
सं० वदन—(वद्=बोलना) पु० मुंह, मुख, चिहरा । [प्रिय ।
सं० वदान्य—पु०दानशील, वक्ता,
सं० वन—(वन्=सेवना, मांगना या शब्द करना) पु० जंगल, विपिन, अटवी, २ पानी, ३ जगह, स्थान ।
सं० वनचर, वनेचर (वन=जंगल,चर=चलने वाला, चर्=चलना) पु० जङ्गली, वनमानुष, २ वानर, बन्दर ।
सं० वनज—(वन=जंगल, वा पानी जन्=पैदा होना)पु० कँवल,कमल ।
सं० वनपांशुल-पु०व्याध,बहेलिया।
सं० वनमाला—स्त्री० तुलसीकुन्द मन्दार, पारिजाताब्जपुष्पकैः निर्मिता दीर्घमाला या, वनमाला प्रकीर्तिता । अर्थ तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात, कमल इन से बनी हुई ।
सं० वनस्पति—(वन=जंगल, पति=मालिक) स्त्री० वनस्पति, ज़मीनसे उगनेवाली चीज ।
सं० वनित—(वन्+इत) र्म्म० पु० याचित, मांगाहुआ ।
सं०वनिता—(वन्=मांगना,याचना) स्त्री० लुगाई, नारी, पत्नी, प्यारी ।
सं० वन्दनचरित—पु० काबिल तारीफ़, प्रशंसा योग्य ।
सं० वन्दन,भा०पु०, वन्दना,भा०स्त्री० (वदि=प्रणामकरना, पूजना,वा सराहना) सराह,स्तुति, प्रणाम, नमस्कार,आदाब,सिजदा, सिंदूर ।
सं० वन्दनीय, वन्द्य (वदि=प्रणामकरना, वा सराहना र्म्म० पु० सराहनेयोग्य, प्रणाम या नमस्कार करनेयोग्य ।
सं० वन्दि, वन्दित र्म्म० प्रणामकृत, नमस्कार कियागया ।
सं० वन्दीजन पु० भाट, प्रशंसक ।
सं० वन्य-(वन) गु० जंगली, बनवासी, बनैला, बनका ।
सं० वपन-(वप्=बोना) भा० पु० बीज बोना, बीज डालना, २ केश मुण्डन, क्षौरकर्म्म, बालबनाना ।
सं०वपनी—भि० स्त्री० नापितशाला, हज्जामों का अड्डा ।
सं० वपिल-क० पु० पिता, बाप ।
सं० वपुस्-(वप्=बोना) पु० शरीर, देह, काय ।
सं० वप्र-पु० प्राचीर, खाबाँ परि-

(१) आपादलम्बिनीमालां वनमालां विदुर्बुधा इति ।

खा खाई, शहरपनाह, धुस्स, मट्टी का टीला, २ बाप।

सं० वमन-(वम्=रद्दकरना,कै करना) स्त्री० उलटी, कै, रद्द।

सं० वमनी-स्त्री० जोंक, जलौका, रक्तपा।

सं० वमित (वम्=रद्द करना) स्त्री० पु० रद्द कियाहुआ, वमन करता हुआ, वान्त, उगिला हुआ।

सं० वयस्-(वय् अथवा अज्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था।

सं० वयस्थ-क०पु०समरस्थ,बालिग।

सं०वयस्य गु०बराबरवाला,हमउमर।

सं० वर-(वृ=पसन्द करना) पु० आशिष, आशीर्वाद,बरदान,चाही हुई चीज,पति,स्वामी, ३ जंवाई, गु० सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बड़ा।

सं० वरण-पु०वेष्टन,लपेटना,पूजना, आमंत्रण।

सं० वरणा-(वृ=पसन्दकरना) स्त्री० एक नदी का नाम जो बनारस के उत्तर बहती हुई गंगामें मिलती है।

सं० वरद-(वर+दा=देना)क० पु० अभीष्टदाता, अभयदाता।

सं० वरदा-क० स्त्री०दुर्गा, शिवा।

सं० वरदान-(वर+दान) पु० आशिष देना, वरदेना, दुआदेना।

सं० वरदायक-(वर+दायक) क० पु० वर देनेवाला, वरदाई, चाहेहुए को देनेवाला।

प्रा० वररहना-बोल० अच्छा रहना, श्रेष्ठरहना, सरस रहना, जयवन्त होना।

सं० वरवरणी-(वर=श्रेष्ठ+वरणी =रङ्ग) स्त्री० गौरी, गोरी स्त्री।

सं० वराङ्गना-(वर=सबसे अच्छी अङ्गना=स्त्री) स्त्री० सुन्दर स्त्री।

सं० वराटक-पु० बीजकोश, बीज का स्थान, कमल का बीज।

सं० वराटिका-स्त्री०कौड़ी, कपर्दिका।

सं० वराणसी } (वरणा एक न-
वाराणसी } दी, और असी एक नदी ये दोनों नदियां बनारस के पास मिलतीहैं इसी लिये ऐसा नाम हुआ) स्त्री० बनारस, काशी, शिवपुरी।

सं० वरासन-(वर+आसन) पु० विष्टर, श्रेष्ठासन, राज्यासन, २ द्वारपाल।

सं० वराह-पु० शूकर, विष्णु का [अवतार।

सं० वरुण-पु० जल, जलेश, जल पति, २ सूर्य, ३ एकामकान।

सं० वरूथ-(वृ=ढकना) पु० रथ के ढकने का कपड़ा, २समूह, झुण्ड।

सं० वरूथिनी-स्त्री० पृतना, सेना।

सं० वरेण्य-(वृ+एण्य) गु० श्रेष्ठ, मुख्य, उत्तम, प्रार्थनीय, वरदाता।

सं० वरोरुह-गु० श्रेष्ठ जांघवाली।

सं० वर्ग-(वृज्=ढकना) पु० एक जातिका समूह, गण, २ दर्जा, किलास, ३ गणित में एक अंक को उसी अंकसे गुना करनेसे जो फल निकले जैसे ४ का वर्ग सोलह और पांच का पचीस आदि, मज जूर, स्कायर ।

सं० वर्गमूल-(वर्ग+मूल) पु० वर्ग का मूल अर्थात् वह अंक जिसका वर्ग कियाहो, जैसे १६ का वर्ग मूल ४ और पचीसकावर्ग मूल ५ जजर स्कायर रूट ।

सं० वर्गीय-(वर्ग) गु० वर्ग में का उसी समूह में का ।

सं०वर्ज्जक-(वृज्+अक)क० पु० परिहारक, रोकनेवाला, मानेअ ।

सं० वर्ज्जन-(वृज्=छोड़ना) भा० पु० त्याग, छोड़ना, रोकना, मना करना ।

सं० वर्ज्जनीय-(वर्ज्ज्+अनीय) र्म्म० पु० रोकनेयोग्य, मना करने के लायक ।

सं० वर्ज्जित } **वर्ज्य** } (वृज्=छोड़ना) र्म्म० पु०छोड़ाहुआ,रोका हुआ, मना कियाहुआ ।

सं०वर्ण-(वर्ण=रंगना,फैलाना,सराहना) पु० रंग,२जाति,क़ौम जैसे(१ ब्राह्मण,२ क्षत्रिय,३वैश्य,४शूद्र) ३ अक्षर, हर्फ़ ।

सं० वर्णक-क०पु० प्रशंसक,तारीफ़ करनेवाला ।

सं० वर्णन-(वर्ण्=रंगना,सराहना, फैलाना) पु० बखान, बयान, २ स्तुति, सराह, ३ रंगना ।

प्रा० वर्णना } **वर्णनकरना** } (सं०वर्णन) क्रि० स० बयान करना, गुण कहना, सराहना,स्तुतिकरना ।

सं० वर्णमाला-(वर्ण=अक्षर,माला =पंक्ति) स्त्री० ककहरा,स्वरव्यञ्जन, हरूफ़तहज्जी=ऐल्फाबिट ।

सं० वर्णसङ्कर-(वर्ण=जात, सङ्कर मिलाहुआ) पु०दोगला, जिसका बाप और मा जुदी जुदी जातकेहों ।

सं० वर्णिका-स्त्री०वर्णोंकी लिखने वाली, लेखनी, क़लम ।

सं० वर्णित-र्म्म० पु० स्तुति किया गया, तारीफ़ कियागया, कहागया ।

सं० वर्त्तन-(वृत्=होना) पु० जीविका, आजीविका, जीने का उपाय रोज़ी, मआश ।

सं० वर्त्तमान-(वृत=होना) पु० जो समय बीतरहा है, गु० विद्यमान, मौजूद ।

प्रा०वर्ताव भा०पु०व्योहार,राहरस्म।

सं० वर्ति-(वृत्+इन) स्त्री० बत्ती, नयनांजन, इतर, फुलेल, औषध, दीपक, चिराग़ ।

सं० वर्तुल-गु० गोल, गोलाकार ।

सं० वर्त्म } पु० पथ, अध्वा, राह,
वर्त्मन् } २ पलक, निमेष ।

सं० वर्द्धन-(वृध्=बढ़ना) पु० बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि ।

सं० वर्द्धित-३ ० पु० उन्नत, बढ़ा हुआ ।

सं० वर्म्म-(वृ=ढकना) पु० कवच, बखतर ।

सं० वर्बर-(वर्ब्+अर, वर्ब=कहना) क० पु० बहुत बातूनी, फ़जूलगो, मूर्ख, २ पीला चन्दन ३ हींग ४ केशभेद ५ बावरी ।

सं० वर्ष-(वृष्=बरसना, या पैदा करना) पु० साल, संवत्, बारह महीने, २ वर्षा, मेह, ३ जम्बूद्वीपका एक खंड ।

सं० वर्षण-भा० पु० बरसना ।

सं० वर्षा-(वृष्=बरसना) स्त्री० मेह, बरसात, वर्षाकाल, प्रावृट्काल ।

सं० वर्षाकाल-(वर्षा+काल) पु० बरसात, चौमासा, चतुर्मास ।

सं० वर्हिण } (वर्ह=मोर की पूंछ
वर्ही } वर्ह्=ऊंचा होना, या सबसे अच्छा होना) पु० मोर, मयूर ।

सं० वल-(वल्=घेरना) पु० सेना, फ़ौज, २ वल, ताक़त ।

सं० वलभी-स्त्री० बरण्डा, गृहचूड़ा, बराम्दा ।

सं० वलय-(वल्=ढकना, वा घेरना) पु० कंकण, बाला, कड़ा ।

सं० वला-स्त्री० सेना, २ लक्ष्मी ३ धरणी, ४ बरियारा औषधि ।

सं० वलाका-(वल्=घेरना) स्त्री० बगुला, बगुले के ऐसा पखेरू ।

सं० वलाहक-पु० मेघ, बद्दल ।

सं० वलि-स्त्री० पूजोपहार, पूजा की सामग्री, २ पशुवध, कुर्बानी ।

सं० वल्कल-(वल्=ढकना) पु० छाल, छिलका, बकला ।

सं० वल्गु-पु० छाग, चन्दन, पण, बन गु० २ मनोहर ।

सं० वल्मीक-(वल्=घेरना, ढकना) पु० दीमक, बिम्बोट, दीपककी बाँबी ।

सं० वल्लभ-(वल्ल=ढकना) गु० प्यारा, प्रिय, प्रियतम, पु० पति, २ अधिकारी ।

सं० वल्लभा-(वल्लभ) स्त्री० प्यारी स्त्री, प्रिया ।

सं० वल्ली-(वल्=घेरना) स्त्री० लता, बेली, २ पृथ्वी, ३ अजमोद ।

सं० वशिष्ठ-(वशी=वश करनेवाला जो अपनी इन्द्रियों को अपने वशमें रक्खे या अब और शास्त्र सिखाना जो मनुष्योंको धर्म की बात सिखलावे) पु० एक ऋषि जो ब्रह्मा का बेटा और सूर्यवंशियों का गुरु था, सात प्रजापतियों में एक प्रजापति ।

सं० वश-(वश्=स्पृहा, इच्छा) पु०

आधीन, काबू, इख़तियार।
सं०वशी—क०पु० जितेन्द्रिय।
सं०वशीभूत—(वश=अधीन, भू=होना) गु०अधीन, दूसरे के वशमें।
सं०वश्य—र्मपु० वशमें, काबू में।
सं०वषट्—अव्य०देवताओंके हविर्दान में २ सत्कार ३ सेवा।
सं०वसति } वसती } (वस्=बसना) स्त्री० वास, बासा, बस्ती, आबादी, रहने की जगह, २ रात।
सं०वसन—पु०वस्त्र,छादन,२निवास।
सं०वसन्त—(वस=रहना,वा ढकना, या महकाना,सुगन्धित करना)पु० १ एकऋतु जो चैत और कुछ वैशाख के महीने तक रहती है,ऋतुराज, २ एकरागकानाम, ३ शीतला,गोटी।
सं०वसन्तदूत—पु० कोकिला, आमवृक्ष, माधवीलता।
सं०वसा—स्त्री०चर्बी, मेदा।
प्रा०वसीठ—पु० दूत, हलकारा, वकील।
प्रा०वसीठी—स्त्री० दूत का काम, दूतपन।
सं०वसु—(वस्=रहना, वा ढकना) पु० एक प्रकार के देवता जो आठ हैं (१ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ सावित्र, ५ अनिल, ६ अनल, ७ प्रत्यूष, ८ प्रभास) २ आग, ३ किरण, ४ एक वृक्ष, ५ धन, ६ सोना, ७ रत्न, जवाहिर, ८ पानी, गु० मीठा, २ सूखा।
सं०वसुदा(वसु=धन, दा=देना) स्त्री० धरती, जमीन, धरणी, पृथ्वी, भूमि।
सं०वसुधा—(वसु=धन, धा=रखना) स्त्री०धरती, ज़मीन,पृथ्वी।
सं०वसुन्धरा—(वसु=धन, धृ=रखना) स्त्री०पृथ्वी, धरती, जमीन।
सं०वस्तव्य—र० पु० वास योग्य, रहने के लायक़।
सं०वस्तु—पु० पदार्थ, द्रव्य।
सं०वहित्र-(वह्=लेजाना वा पहुँचाना) पु० जलयान, जहाज़।
सं०वहिर्मुख—गु० विमुख, बागी।
सं०वह्य—पु० काँवर, बहँगी, बहँगा, वाहन, डोला, डोली।
सं०वहु—गु० भूत, प्रभूत, बहुत।
सं०वह्नि—(वह्=लेजाना, वा पहुँचाना) स्त्री० आग, अग्नि।
सं०वा—समुच्च० अथवा, या, विकल्प, सादृश्य, अवधारण, वितर्क, पादपूरण।
सं०वाक्य—(वच्=बोलना,) पु० बोल, वाक्, वचन, वाणी, २पदों का इकट्ठा होना, जुमला।
सं०वाग्—पु० वाक्, वाणी, स्त्री० लगाम।
सं०वागीश—(वाच्= बोली, ईश=मालिक) पु० १ बृहस्पति,२ब्रह्मा, ३कवि, ४ गु० अच्छाबोलनेवाला।

सं०वागीशा–स्त्री० सरस्वती, शारदा।
सं०वागीश्वरी–(वाच्=बोली, ई-श्वरी=देवी) स्त्री० सरस्वती ।
सं०वागुरा–स्त्री० मृगपाश, फांसी, फन्दा या जाल ।
सं०वाग्डम्बर–पु० वाचालता, वाक्यस्तोम, बहुतबातें, प्रलापी, धूर्त ।
सं०वाग्दण्ड–(वाच्=बोली, दण्ड=सजा) पु० मुंहसे भला बुरा कहना, धमकाना ।
सं०वाग्मी–(वाच्=बोली) गु० सुन्दर बोलनेवाला, पु० बृहस्पति ।
सं०वाङ्मय–गु० शास्त्र, वाक्य स्वरूप, वाणी का रूप, गोया, वक्ता ।
सं०वाच् } वाचा } (वच्=बोलना) स्त्री० बोली, वचन, वाक्, वाणी, वाक्य ।
सं०वाचक–(वच्=कहना) क० पु० सार्थक शब्द, ऐसा शब्द जिसका अर्थ हो, २ बोलने वाला ।
सं०वाचन–भा० पु० पढना, कहना।
सं०वाचस्पति–(वाच्=बोली, पति=स्वामी) पु० बृहस्पति, देवताओं का गुरु ।
सं०वाचा–स्त्री० वाणी, सरस्वती, वचन, जबान ।
सं०वाचाट–गु० कुत्सितभाषी, बद कलाम, दुष्टवचनी ।
सं०वाचाल } वाचाट } (वच्=बोलना) क० पु० बातूनी, बहुतबोलने वाला, गप्पी, बकी ।
सं०वाचित–कर्म० पु० उक्त, कथित ।
सं०वाच्य–(वच्=कहना) कर्म० पु० बोलने योग्य, जो बोला जाय, जो कहाजाय, पु० वाक्य, अर्थ ।
सं०वाच्यता–स्त्री० अपमान, हजो ।
सं०वाज–पु० अन्न, घृत, जल, यज्ञ, बाजपक्षी, तीरमें पंख, वेग ।
सं०वाजपेय–(वाज=यज्ञ की सामग्री, अथवा घी (वज्=जाना) और पेय पीना पा=पीना) पु० एकप्रकार का यज्ञ ।
सं०वाजी–(वाज=वेग, वज्=जाना) पु० घोड़ा, २ तीर ।
सं०वाञ्छा–स्त्री० स्पृहा, कांक्षा, इच्छा, ख्वाहिश, अभिलाष ।
सं०वाट–पु० पथ, राह, जीविकास्थान ।
प्रा०वाटी–स्त्री० भौरिया, २ गृह ।
सं०वात–(वा=जाना, बहना) स्त्री० हवा, बाव, बतास, पवन, वायु, २ गठिया बाव, एकरोग ।
सं०वातापिसूदन–क० पु० अगस्त्य मुनि ।
सं०वातयन–पु० झरोखा, रोशनदान।
सं०वात्सल्य–(वत्सल) भा० पु० प्यार, प्रेम, स्नेह, दयालुता ।
सं०वाद–(वद्=बोलना) पु० शास्त्रार्थ, बहस, चर्चा, बातचीत, विवाद, झगड़ा, २ वचन, वाक्य, ३ दावा,

मुक़द्दमा, पुकार, फ़र्याद ।

सं० वादव—भा०पु० कहना, बजाना।

सं०वादरायण—पु० व्यासमुनि बदरिकाश्रमवासी ।

सं० वादी—(वाद) क० पु० बोलनेवाला, वाद करनेवाला, शास्त्रार्थ करनेवाला, पु० मुद्दई, दावा करनेवाला, नालिश करनेवाला ।

सं० वाद्य—(वद्=शब्द करना) पु० बाजा ।

सं० वानप्रस्थ—(वन=जंगल, प्रस्थ =रहनेवाला, प्र, स्था=ठहरना) पु० तीसरे आश्रमका मनुष्य जो ब्रह्मचर्य्य और गृहस्थाश्रम के पीछे वन में रहकर तपस्या करता है, तपस्वी, वनवासी ।

सं० वानर—(वान=वन के फल आदि, रा=लेना, अथवा वा=कुछ कुछ, नर=मनुष्य, अर्थात् जिसका डील डौल कुछ कुछ मनुष्य से मिलता है) पु० बन्दर, कपि, मर्कट, कीश ।

सं० वानरेन्द्र—(वानर+इन्द्र) पु० सुग्रीव, २ हनुमान् ।

सं० वापी—(वप्=बोना, अर्थात् जिस में कमल आदि उगते हैं) स्त्री० बावड़ी, बावली ।

सं० वाम—पु० महादेव, वामदेव, २ धन, ३ वास्तूक, बथुवा, वेदाचारविरुद्ध, गु० ४ वल्गु, मनोहर, ५ सव्य, ६ कुटिल ।

सं०वामन—(वाम, वा=जाना) पु० बावना, नाटा ।

सं० वायन—पु० बैना, न्योता ।

सं० वायव्य—(वायु) पु० वायुकोन, पश्चिम उत्तर का कोना, गु० हवाका ।

सं० वायस—(वयस्=उमर, अर्थात् बड़ी उमरवाला) पु० कौआ, काग, २ एक वृक्ष का नाम ।

सं०वायु—(वा=बहना, जाना) स्त्री० हवा, पवन, बयार, बतास ।

सं० वायुपुत्र—(वायु+पुत्र) पु० बातजात, हनुमान्, रामदूत ।

सं० वायुवाह—पु० धूम्र, धूम, धुआँ ।

सं० वार—पु० १ द्वार, २ अवसर, ३ शिव, ४ क्षण, दिन, ५ यज्ञपात्र ।

सं० वारण—(वृ=ढकना) पु० रोक निषेध, अटकाव, बाधा, २ हाथी ३ बखतर, कवच ।

प्रा० वारना—क्रि० स० उतारना, भेंट चढ़ाना, २ घेरना ।

प्रा० वारपार / वारापार } (सं० अवारपार अवार इस पार, पार उस पार) क्रि० वि० इस उस पार, वर्ले पर्ले पार पु० हद, सीमा ।

सं० वाराणसी—स्त्री० वरुणानदी और असी नदी के मध्य की बस्ती, काशी ।

सं० वारि—(वृ=ढकना) पु० पानी [जल ।

सं० वारिचर—(वारि=पानी चर

(१) यहां पृषोदरादि से वरुणाशब्द के स्थान में वारणआदेशहुआ है ।

=चलना) पु० जलचर, जलका जीव, मछली, गु० पानी में रहनेवाला ।
सं० वारिचरकेतु—(वारिचर+केतु) पु० कामदेव, मकरध्वज, मीनकेतन ।
सं० वारिज—(वारि=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कँवल ।
सं० वारिजनयन—(वारिज+नयन)गु०जिसकी आंखेंकमलसीहों ।
सं० वारिद—(वारि=पानी,दा=देनेवाला, दा=देना) पु०बादल, मेघ ।
सं० वारिदनाद—(वारिद+नाद) मेघनाद, रावण का बेटा ।
सं० वारिधि—(वारि=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर ।
सं० वारिनाथ—(वारि+नाथ) पु० समुद्र, सागर ।
सं० वारिनिधि—(वारि+निधि) पु० समुद्र, सागर ।
सं० वारिवाह—क०पु०मेघ,वारिद ।
सं० वारीश—(वारि+ईश) पु० समुद्र, सागर, सिंधु ।
सं० वारुणी—स्त्री० पश्चिम दिशा, २ मदिरा ३ शतभिषानक्षत्र ४ दूब ५ वरुण की स्त्री ।
सं० वार्त्ता—(वृत्=होना) स्त्री० बात, २ वृत्तान्त, समाचार, ३ गप्प ।
सं० वार्त्तिक—(वृत्ति, अथवा वार्त्ता से, वृत्=होना) पु० सूत्र का टीका, व्याख्या, २ गद्य, नसर ।
सं० वार्द्धक—पु० वृद्धावस्था, वृद्ध समूह जैसे (वार्द्धके मुनिवृत्तीनां) ।
सं० वार्य्य } वार्यमाण } र्म्म० पु० निवार्य, रोका गया ।
सं०वार्षिक—(वर्ष=साल) गु० बरसौड़ी,सालियाना,संवती,बरसका ।
सं० वाल्मीक } वाल्मीकि } (वल्मीक=दीमक, अर्थात् जो दीमक में से निकला इसकी कथा रामायण में देखो) पु० एक मुनि जिसने रामायण बनाई । [ने वाला ।
सं० वावदूक—क० पु० वक्ता, बोल-
सं० वाष्प } वास्प } (वा=बहना) स्त्री० भाफ, धुवाँ, उष्मा ।
सं० वासन—पु०सुरभीकरन,सुगंधित करना, २ पात्र, बरतन ३ वस्त्र ।
सं० वासना—स्त्री० इच्छा, मत्याशा २ निवास, स्थान ।
सं० वासर—(वस्=रहना) पु० दिन, दिवस ।
सं० वासव—(वसु=धन, सम्पदा अर्थात् जिसके बहुत धन सम्पदा हो)पु०इन्द्र,शक्र,देवताओंकाराजा ।
सं० वासित—र्म्म० पु० गंधयुक्त ।
सं० वासुदेव—(वसुदेव)पु०वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण ।

(१) उक्तानुक्तद्विरुक्तानांचिन्तायत्रप्रवर्तते । तंग्रन्थंवार्त्तिकंप्राहुर्वार्तिकज्ञामनीषिणः ।

सं० वास्तव } (वस्तु) गु० ठीकठीक,
वास्तविक } यथार्थ, सचमुच, निश्चय, स्थिर। [बन्धु, रिश्तेदार।
सं० वास्तव्य—गु० बसनेयोग्य, पु०
सं० वाहन—(वह्=लेजाना) गु० पु० सवारी।
सं० वाहिनी-(वह्=लेजाना) स्त्री० सेना जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े ४०५ पैदल हों, दल, कटक, फौज, २ नदी, ३ गु० लेजानेवाली।
सं० वाहु—गु० पु० भुजा, बाजू।
सं० वाह्य—(वहिस्=बाहर) गु० बाहर का, बाहरी।
सं० वि—अव्य० वियोग, विशेष, निश्चय, असहन, निग्रह, हेतु, अध्यात्म, ईषत, थोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन, ज्ञान, गति, आलस्य, पालन।
सं० विकल—गु० विह्वल, व्याकुल, घबराया।
सं० विकराल—(वि=बहुत, कराल, डरावना) गु० बहुत डरावना, बहुतभयानक।
सं० विकल्प—पु० शक, भ्रान्ति, पसोपेश, आगापीछा।
सं० विकार-(वि, कृ=करना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बदलना हुआ) पु० स्वभाव का बदलना, बदलजाना, अन्यरूप होना, बीमारी। [खिलना।
सं० विकशन—भा० पु० प्रकाश,
सं० विकीरण—भा० पु० फेंकना, फैलाना, २ ज्ञान।
सं० विकृत—(वि, कृ=करना) कर्म० बदला हुआ, २ उलटा, विरुद्ध, ३ बीमार, रोगी, ४ मलीन।
सं० विकृति-स्त्री० बदलना, रूपान्तर।
सं० विक्रम-(वि=बहुत, क्रम=जाना) भा० पु० पराक्रम, बल, ज़ोर, शक्ति, शूरता, बीरता, २ उज्जैन का राजा विक्रमादित्य, ३ विष्णु।
सं० विक्रमादित्य—(विक्रम+आदित्य अर्थात् बल या शूरवीरता का सूर्य) पु० उज्जैन नगरी का प्रसिद्ध राजा जिसने संवत् चलाया।
सं० विक्रमी -(विक्रम) गु० बलवान्, शूरवीर, पराक्रमी, बहादुर, पु० सिंह।
सं० विक्रय—(क्री=मोललेना) भा० पु० बेंचना, नीलाम करना।
सं० विक्रयी } क० पु० बेंचनेवाला।
विक्रेता }
सं० विक्रिया—भा० स्त्री० विकार, बदलजाना, फिरजाना, पलटजाना।
सं० विक्लव } गु० विह्वल, परे-
विक्लान्त } शान, भ्रान्त, श्रमित।

सं० विक्लिन्न—गु० जीर्ण, जरजर।
सं० विक्लेद—भा०पु० नमी, आर्द्रता, रतूबत, तरी।
सं० विक्षेप—(वि=बहुत, क्षिप्=फेंकना) पु० घबराहट, व्याकुलता, २ फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना, अंतर।
सं० विख्यात—(वि=बहुत, ख्यात=प्रसिद्ध) र्म्म० पु० बहुत प्रसिद्ध, नामवर, नामी, यशी, यशस्वी।
सं० विख्याति—स्त्री० प्रसिद्धता, शुहरत, नामवरी।
सं० विगत—(वि=बहुत, गम्=जाना) र्म्म० जो चला गया, गत, जुदा हुआ, रहित, बिना, हीन।
सं० विगतश्रम—(विगत=चलीगई है श्रम=थकावट) गु० जिसकी थकावट चलीगई हो, बिन मिहनत।
सं० विगर्हण-भा०पु० निन्दाकरना।
प्रा० विगोये—गु० छिपे हुये।
सं० विग्रह—(वि, ग्रह्=लेना वि उपसर्ग के साथ आने से लड़ना अर्थ भी होता है) पु० लड़ाई, युद्ध, बिगाड़, २ शरीर, देह, ३ फैलाव, ४ भाग, ५ आकार, ६ असमास।
सं० विघटन—भा० पु० बचना, २ तोड़ना, बिगाड़ना।
सं० विघटित—(घट्=बचना) र्म्म० पु० मिलाया गया, रचा गया, तोड़ा गया। [पु० नाश करना।
सं० विघात—(हन्=मारना) भा०
सं० विघातक—क० पु० नाशक।
सं० विघ्न—(वि, हन्=मारना) पु० रोक, रुकाव, अटकाव, बिगाड़, बाधा।
सं० विचक्षण—(वि, = बहुत, चक्ष् बोलना या देखना) गु० चतुर, प्रवीण, पण्डित, बुद्धिमान्, स्याना।
सं० विचरण-भा० पु० भ्रमण, इधर उधर घूमना।
सं० विचलना—(सं०विचल, वि=बहुत, चल=चलना) क्रि० अ० तितर बितर होना, अधीर होना, हिम्मत हारना, मचलना, रूठना।
सं० विचार—पु० तत्त्वनिर्णय, अभिप्राय, मनका भाव, दिलीखयाल।
सं० विचित्र—गु० रंग बरंग, अद्भुत, अजीब।
सं० विच्छिन्न—(वि, छिद्=काटना) र्म्म० पु० विभक्त, विदीर्ण, बटा, कटा फटा।
सं० विच्छेद—(वि, छिद्=काटना) पु० वियोग, जुदाई, अंतर।
सं० विजय—(वि=बहुत, जि=जीतना) स्त्री० जीत, फतह, जय।
सं० विजया—(वि=बहुत, जि=जीतना) स्त्री० विजया दशमी,

कुंवार सुदी १०—२ दुर्गा, देवी, ३ भांग, बूटी।

सं० **विजयी**—(वि=बहुत, जयी=जीतनेवाला) क० पु० बहुत जीतने वाला।

सं० **विजाति**—(वि=दूसरी, जाति=भांति) स्त्री० और जाति, दूसरी जाति, दूसरी भांति। [इच्छा।

सं० **विजिगीषा**—स्त्री० जीतने की

सं० **विज्ञ**-(वि=बहुत, ज्ञा=जानना) क० पु० प्रवीण, पण्डित, चतुर, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्, विद्वान्।

सं० **विज्ञता**—(विज्ञ) स्त्री० पण्डिताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, लियाक़त।

सं० **विज्ञान**—(वि=बहुत, ज्ञा=जानना) पु० बहुतज्ञान, शास्त्रज्ञान, शिल्पविद्या।

सं० **विज्ञापन**—(वि=बहुत, ज्ञापन=जताना, ज्ञा धातुका प्रेरणार्थकमें ज्ञाप रूप होता है) पु० जताना, शिक्षा, २ प्रार्थना, बिनती, इत्तिला, नोटिस, इश्तिहार।

सं० **विटप**—(विट=विस्तार, या पेड़की नई डाली, पा=पालना या विट्=शब्द करना) पु० वृक्ष, पेड़, २ नई डाली और नये पत्ते आदि।

प्रा० **विडरि**—गु० विशेष भय से, थिथराना, छितराना।

सं० **विडम्बक**—(विड्=निन्दा करना) क० पु० निन्दक प्रतारक।

सं० **विडम्बना**—स्त्री० तिरस्कार करना, अपमान करना।

सं० **विडम्बित**—कर्म० पु० अपमानित, निन्दित, तिरस्कृत।

सं० **विडाल**—(विड्=बुरा बोलना) पु० बिलाव।

सं० **वितण्डा**—(वि, तडि=मारना) स्त्री० मिथ्यावाद, वाक्प्रपञ्च, पक्षपात करना, तअस्सुब करना।

सं० **वितर्क**—(वि+तर्क) स्त्री० बड़ी तर्क, अनुमान, विचार, वाद।

सं० **वितत**—कर्म० पु० प्रसारित, फैलाया गया, ताना गया।

सं० **वितान**—(वि=बहुत, तनु=फैलाना) पु० चँदवा, मंडप, २ यज्ञ, ३ फैलाव, विस्तार।

सं० **वितरण**—(वि, तॄ=पारजाना) पु० दान, निस्सरण, खैरात, प्रतरण, निर्वाह, संतरण, उद्धार, बाटना, खर्च करना। [सखी।

सं० **वितरणशाली**—गु० दानी,

सं० **वित्त**—(वित्त=त्यागना) पु० धन, द्रव्य, गु० रूयात, ज्ञात, विचारित, लब्ध, गात, बल।

सं० **विकथहिं**—गु० चकित होंइ।

सं० **विदर्भ**—(वि=बिन, दर्भ=एक

प्रकार का घास, जो इस देश में एक ऋषि के शाप से, कि जिसका बेटा इस घास से घायल होकर मर गया था, नहीं पैदा होती है) पु० बंगाले के दक्षिण पश्चिम का एक जिला और एक शहर जिस को अब नागपुर अथवा बरार कहते हैं।

सं० विदा –(विद्=विभाग ज्ञान) स्त्री० ज्ञान, बुद्धि, २जुदाई, रुखसत।

प्रा० विदाई—भा० स्त्री० जाने की भेट, रुखसती नज़र।

सं० विदारण–(वि=बहुत, दृ=फाड़ना) पु० फाड़ना, चीरना, भेदन, लड़ाई, युद्ध, २ गु० चीरनेवाला, फाड़नेवाला।

सं० विदित–(विद्=जानना) र्म० पु० जाना हुआ, समझा हुआ, २ प्रसिद्ध, ३प्रार्थना कियागया, निवेदित।

सं० विदिश्–(वि=बीच, दिश्=दिशा) स्त्री० दिशा का बीच, कोन, गोसा।

सं० विदीर्ण–(दृ=फाड़ना) र्म० पु० फाड़ा, चीरा, फाड़ा हुआ।

सं० विदुर–पु० कौरवों का मन्त्री, दासीपुत्र धृतराष्ट्र का भाई, गु० धीर, ज्ञानी।

सं० विदूषक –(दूष्=बुरा कहना) क० पु० निन्दक, भांड़

सं० विदुष–पु० पण्डित।

सं० विदुषी–स्त्री० पण्डिता।

सं० विदेह–(वि=नहीं, देह=शरीर अर्थात् जिसको अपने शरीर का कुछ ध्यान नहीं था, केवल परमेश्वर का ध्यान था) पु० जनक राजा, मिथिला का राजा और सीता का बाप।

सं० विद्ध - (व्यध्=छेदना) र्म० पु० छेदा हुआ, पार किया हुआ, फाड़ा हुआ, ताड़ित।

सं० विद्यमान–(विद्=होना) गु० वर्त्तमान, जो हाज़िर हो, मौजूद।

सं० विद्या –(विद्=जानना) स्त्री० ज्ञान, शास्त्र का ज्ञान, इल्म, चौदह विद्या प्रसिद्ध हैं (चार वेद और छः वेदों के अंग, ११ वीं पुराण, १२ मीमांसा, १३ न्याय, १४ धर्मशास्त्र) २ देवीका मंत्र, ३ दुर्गा।

सं० विद्याधर–(विद्या मंत्र आदि धर रखनेवाला, धृ=रखना) पु० एक प्रकार के देवता।

सं० विद्यार्थी–(विद्या, अर्थी=चाहनेवाला, अर्थ्=चाहना) क० पु० विद्या पढ़नेवाला, छात्र।

सं० विद्यालय–(विद्या + आलय) षि० पु० पाठशाला, स्कूल, कालेज।

सं० विद्यावान्–(विद्या + वान्) गु० पण्डित, ज्ञानवान्, विद्वान्।

सं० विद्युत्–(वि=बहुत, द्युत्=चमकना) क० स्त्री० बिजली, दामिनी, तड़ित।

सं० विद्रावक–(वि+द्रु=जाना) क० पु० चुआनेवाला, टपकानेवाला।

सं० विद्रुम–(वि=विशेष, खास, और द्रुम=वृक्ष) पु० मूंगा, प्रवाल।

सं० विद्रोह–भा० पु० वैर, दुश्मनी।

सं० विद्रोही–(वि+ द्रुह्=अशुभ चिन्तक) क० पु० बैरी, दुश्मन।

सं० विद्वान्–(विद्=जानना) क० पु० पण्डित, विद्यावान्, ज्ञानी।

सं० विद्वेष–(वि+द्विष्=शत्रुता करना)पु० वैरभाव, शत्रुता, विरोध, बैर।

सं० विद्वेषक, विद्वेषी, विद्वेष्टा – क० पु० हिंसक, वैरी, दुश्मन।

प्रा० विध–(सं० विधि) स्त्री० रीति, प्रकार, ढब, भांति, रूप, चाल।

सं० विधातव्य–र्क्म० विधेय, करने योग्य।

सं० विधाता–(वि=बहुत, धा=रखना) पु० ब्रह्मा, सृष्टि बनाने वाला, ईश्वर, भाग, क़िस्मत।

सं० विधात्री–स्त्री० ब्रह्माणी, मुहकमा दीवानी।

सं० विधान–(वि=बहुत, धा=रखना) पु० विधि, रीति, शास्त्र में कहीहुई रीति।

सं० विधायक–क० पु० मुन्सिफ़।

सं० विधि–(वि=बहुत, धा=रखना) पु० ब्रह्मा, २ ईश्वर, सृष्टि बनाने वाला, ३ भाग, क़िस्मत, ४ रीति, शास्त्र में कहीहुई रीति। [वाणी।

सं० विधिगिरा–स्त्री० ब्रह्मा की

सं० विधिवत्–अव्य० यथायोग्य, रीत्यनुसार, बा क़ायदा।

सं० विधु–(व्यध्=छेदना, विरही लोगों के हिरदे को) पु० चांद, चन्द्रमा, २ कपूर, ३ विष्णु, ४ एक राक्षस, ५ ब्रह्मा।

सं० विधुन्तुद–(विधु=चांद को, तुद्=दुःख देना) पु० राहु।

सं० विधूत–(वि+धू=कँपाना) र्क्म० कम्पित, त्यक्त।

सं० विध्वंस–(वि=बहुत, ध्वंस्=गिरना) पु० नाश, विनाश।

सं० विध्वस्त–र्क्म० पु० विनष्ट, नाशकृत, हराया गया।

सं० विनत–(वि+नम्=झुकना) क० पु० प्रणत, नम्र।

सं० विनता–स्त्री० गरुड़ की माता।

सं० विनति–भा० स्त्री० विनय, स्तुति।

सं० विनय–(वि=बहुत, नी=लेजाना, वा पाना) स्त्री० बिनती, शिष्टाचार, नम्रता।

सं० विनश्वर–क० पु० नाश होने वाला, फ़ानी।

सं० विनायक—(वि, नी=लेजाना, वा पाना) पु० गणेश, २ बुध, ३ गरुड़ ।

सं० विनाश—(वि=बहुत, नश्=नाश होना) पु० बहुत नाश, बरबादी ।

सं० विनाशित—क्र्म० पु० नष्ट, विध्वंसित ।

सं० विपात—(वि+पत्=जाना, गिरना) पु० निपात, वज्रपात, नाश, व्यसन, अपमान ।

सं० विनिमय—(वि+नि+मि+अ, मि=फेंकना) पु० विलोम, अस्तव्यस्त, विपरीत, परिवर्तन, अदला बदली करना, ग्रहण, बन्धन ।

सं० विनीत—(वि=बहुत, नी=लेजाना, वा पहुंचाना) क० पु० नम्र, विनयी, सुशील ।

सं० विनेता—क० पु० राजा ।

सं० विनोद—(वि, नुद्=प्रेरणाकरना, चलाना पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ हँसी करना होता है) पु० खेल, हँसी ठट्ठा, कौतुक, क्रीड़ा, खुशी, हर्ष, आनन्द ।

सं० विन्दु-(विद्=जुदा जुदा होना) पु० बिंदी, बूंद, शून्य, २ अनुस्वार, ३ पानी का कन, गु० ४ ज्ञाता, ५ दाता, जानने योग्य, नामानिशचर ।

सं० विन्ध्य-(विध्=छेदना) पु० विन्ध्याचल पहाड़ ।

सं० विन्ध्यवासिनी—(विन्ध्य=विन्ध्याचल, वासिनी=रहनेवाली, वस=रहना) स्त्री० दुर्गा, देवी, भगवती, योगमाया ।

सं० विन्ध्याचल—(विन्ध्य+अचल) पु० एक पहाड़ का नाम ।

सं० विन्न—(विद्=जानना) क्र्म० पु० प्राप्त, ज्ञात, जानागया, स्थित ।

सं० विन्यस्त-क्र्म० पु० यथाक्रम, स्थापित कियागया, तरतीबवार रक्खागया ।

सं० विन्यास—पु० स्थापन करना, रचना करना ।

सं० विपक्ष-(वि=विरुद्ध या उलटा, पक्ष=ओर, तरफ़) पु० शत्रु, वैरी, दुश्मन ।

सं० विपत्ति—(वि=बुरी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० आपदा, विपदा, विपत्, दुःख, तकलीफ़ ।

सं० विपद्, **विपत्**, **विपदा** (वि=बुरी तरह से, पद्=जाना) भा० स्त्री० विपत्ति, आपदा, आफ़त ।

सं० विपरीत—(वि, परि=उलटा, इण्=जाना) गु० उलटा, विरुद्ध ।

सं० विपर्यय (वि+परि+इण्+अ, इण्=जाना) पु० व्यतिक्रम, विपरीत, उलटा पलट ।

सं० विपर्यस्त—क० पु० व्यतिक्रान्त, विपरीत, लौट पौट करनेवाला ।

सं० विपर्य्यास—भा० पु० विलोम, विपरीत, विपर्य्यय ।

सं० विपल—पु० क्षण, लहमा ।

सं० विपश्चित—पु० बुद्धिमान् ।

सं० विपाक—पु० कर्मभोग, फल, नतीजा । [जंगल ।

सं० विपिन—(वप्=बोना) पु० बन,

सं० विपुल—(वि=बहुत, पुल्=बढ़ना, या फैलना) गु० बड़ा, बहुत, फैला हुआ, गंभीर ।

सं० विप्र—(वि=बहुत, प्रा=भरना, वा वप्=बोना) पु० ब्राह्मण ।

सं० विप्रलब्ध—र्म्म० वञ्चित, धोखा दियागया ।

सं० विप्लव—(वि, प्लु=जाना) पु० देशापद्रव, राष्ट्रोपद्रव ।

सं० विप्लुत—र्म्म० व्यसन, ग़दर ।

सं० विफल—(वि=विन, फल=लाभ) गु० निष्फल, वृथा, बेफ़ायदह ।

सं० विबुध—(वि=बहुत, बुध्=जानना) पु० देवता, २ पण्डित, ३ चांद ।

सं० विबुधनदी—(विबुध+नदी) स्त्री० देवताओंकी नदी, श्रीगंगाजी ।

सं० विबुधान—क० पु० पण्डित ।

सं० विबोधन—भा० पु० समझाना, प्रबोध करना ।

सं० विभक्त—र्म्म० पृथक् कृत, बाँटागया, मुन्क़सिम ।

सं० विभक्ति—(वि, भज्=टुकड़े करना, अलग करना) स्त्री० अंश, बाँट, टुकड़ा, हिस्सा, २ व्याकरण में कारकों के चिह्न ।

सं० विभव—(वि=बहुत, भू=होना) पु० संपदा, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य्य, एक संवत्सरका नाम ।

सं० विभाग—(वि=बहुत, भज्=टुकड़े करना) पु० भाग, टुकड़ा, बांट, हिस्सा, अंश, प्रकरण, सरिश्ता, सीग़ह्, मद, भेद, फ़र्क़ तक़सीम, बांट ।

सं० विभाजक—क० पु० अंशकारी, हिस्सेदार । [गया ।

सं० विभाजित—र्म्म० बंटित, बाँटा-

सं० विभावना—(वि, भू=होना) स्त्री० प्रसिद्ध कारणके अभाव से कार्य्य की उत्पत्ति युक्त लक्षण, अलंकारभेद ।

सं० विभावसु—पु० सूर्य, मदारवृक्ष, वह्नि, चन्द्र, हारभेद ।

सं० विभीषण—(वि=बहुत, भी=डराना वैरियों को) पु० रावणका भाई, गु० डरानेवाला, भयानक ।

सं० विभीषा-भा० पु० भय, भयानक ।

सं० विभीषिका—भा० स्त्री० भयप्रदर्शन, भयदिखाना ।

सं० विभु-(वि=बहुत, भू=होना) गु० समर्थ, प्रभु, सर्वव्यापी, पु० मालिक २ शिव ३ ब्रह्मा ४ विष्णु,

सं० विभुक्त—(वि=बहुत भुज्=खाना) र्म्म० पु० बहुत खाया, बहुत भोजन किया ।

सं० विभूति—(वि=बहुत,भू=होना) स्त्री० सम्पदा, ऐश्वर्य्य, सिद्धि, सम्पत्ति, धन, दौलत आदि सुख,२ राख, भस्म ।

सं० विभूषण—(वि=बहुत, भूष्= सिंगार करना) ग० पु० गहना,अ-लंकार, जेवर, शोभा, आभूषण ।

सं० विभूषित—(वि=बहुत, भूष्= सिंगारना)र्म०पु० शोभित, सँवा-राहुआ, शोभायमान, फबता हुआ, मुज़ैयन ।

सं० विभेदक—(वि, भिद्+अक भिद्=तोड़ना) क० पु० विक्षेपक, तोड़नेवाला ।

सं० विभ्रम—(वि=बहुत भ्रम्=भूलना) पु० चेष्टाभेद, सन्देह, कटाक्ष, एक अङ्गका आभूषण) दूसरे अंगमें धारणकरना,भ्रान्ति,भ्रमण,शोभा ।

सं० विभ्राज—क० पु० शोभायमान, भ्राजिष्णु, शृङ्गारसे सुशोभित ।

सं० विमर्श, विमर्शन—(वि,मृश्=छूना, ध्यान करना) पु० विचार, परामर्श ।

सं० विमर्ष—(मृष्=क्षमा करना) क० पु० मौनी, विचारी, क्रोधी ।

सं० विमल—(वि=बिन, मल=मैल) गु० निर्मल, स्वच्छ, साफ़, शुद्ध ।

सं० विमाता—(वि=दूसरी, माता= मा) स्त्री० सौतेली मा ।

सं० विमान—(वि=बहुत मा=आदर करना या मान्=पूजना) पु० देव-ताओंका रथ ।

सं० विमुक्त—(वि, मुच्=छूटना, छो-ड़ना) र्म० छूटाहुआ, रिहा ।

सं० विमुख-(वि=उलटा,मुख=मुँह) गु० विरोधी, फिरा हुआ ।

सं० विमुग्ध—गु० अज्ञान, मूढ़ ।

सं० विमूढ़-(वि=बहुत, मूढ़=मूर्ख) गु० बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ़ ।

सं० विमोचन—(वि,मुच्=छुड़ाना) पु० छोड़ना, मुक्तकरना, क० दूर करनेवाला, छुड़ानेवाला ।

सं० विम्ब-(बी=चमकना,या=जाना) पु० मूरत, छवि, तसवीर, छाया, प्रतिबिम्ब, २ सूर्य अथवा चन्द्रमा का मण्डल, ३ बिम्बाफल, एक ला-लफल, कुंदरू ।

सं० वियोग-(वि=नहीं, योग=मेल) भा० पु० विरह, जुदाई, बिछवा, बिछड़ना, जुदा रहना ।

सं०वियोगी-(वियोग) क०पु०विरही, जुदा रहनेवाला,बिछड़ाहुआ ।

सं० विरक्त—(वि=नहीं,रञ्ज्=रंगना) क० पु० वैरागी, उदासी ।

सं० विरचित—(वि, रच्=बनाना) र्म० पु० बनायाहुआ, रचाहुआ ।

सं० विरञ्च } (वि=बहुत, रच्=
विरञ्चि } बनाना) पु० सृष्टि बनाने वाला, ब्रह्मा ।

सं० विरज-गु० क्रोधरहित, बेतमकनत ।

सं० विरत-(वि=नहीं, रम्=खेलना) क० पु० वैराग्यवान्, जिसने संसार छोड़ दिया हो, रिहा, बेगम ।

सं० विरति-(वि=नहीं, रम्=खेलना) भा० स्त्री० वैराग्य, त्याग, संसार को छोड़ देना ।

सं० विरद्-(वि=नहीं, रद्=खोदना) पु० यश, नामवरी, बाना, लिबास, हथियार, अस्त्र शस्त्र ।

प्रा० विरदैत-गु० बीर, बाना वाले ।

सं० विरह-(वि=बहुत, रह=छोड़ना) पु० जुदाई, बिछोह, बिछुड़ना, वियोग ।

सं० विराग-(वि=नहीं, रञ्ज्=रंगना) पु० वैराग, लोभ मोह को छोड़ना ।

सं० विराज-पु० क्षत्रिय, आदि पुरुष, विष्णु का स्थूलरूप ।

सं० विराजमान-(वि=बहुत, राज् =शोभना) क० पु० शोभायमान, सोहता हुआ ।

सं० विराजित-क० पु० दीप्त, रोशन ।

सं० विरुज-गु० नीरोग, तन्दुरुस्त, रोगरहित ।

सं० विराट्-(वि=बहुत, राज्=शोभना) पु० विष्णु की बड़ी मूरत, विश्वरूप, २ एक देश का नाम ।

सं० विराध-(वि=बुरी तरहसे, राध् =पूरा करना, सिद्ध करना) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० विराम-(वि=बहुत, रम्=आनन्द करना) पु० ठहराव, विश्राम, शान्ति, अन्त, अवसान, निवृत्ति, समाप्ति ।

सं० विराम-(वि=नहीं, रम्=चैन करना) गु० व्याकुल, दुःखी, बेचैन ।

सं० विरामक-क० पु० लौटानेवाला ।

सं० विरुद्ध-(वि=बहुत, रुध्=रोकना) गु० उलटा, विपरीत, खिलाफ़ ।

सं० विरूप-(वि=बुरा, रूप=डौल) गु० कुरूप, भोंड़ा, अनसुहावना, बदसूरत ।

सं० विरेचक-(रिच्=गिराना) क० पु० दस्तावर, मलभेदक ।

सं० विरेचन-भा० पु० जुलाब, मलनिस्सारण ।

सं० विरेचित-र्म० मुसहिल, रेचित ।

सं० विरोचन-(वि=बहुत, रुच्=चमकना) पु० प्रह्लादका बेटा और राजा बलिका बाप, २ सूर्य, ३ चांद ।

सं० विरोध-(वि, रुध्=रोकना) भा० पु० वैर, द्वेष, शत्रुता, दुश्मनी, २ झगड़ा, लड़ाई ।

सं० विरोधक-क० पु० विवादी, वैरी ।

सं० विरोधी-(विरोध) क० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन, २ झगड़ालू ।

सं० विल (विल=छेद करना) र्म्म० पु० छिद्र, गर्त, गड़हा ।

सं० विलक्षण-(वि=बहुत, लक्ष= देखना, या चिह्न करना) गु० विचक्षण, अनूप, उत्तम, भला, श्रेष्ठ, २ जुदा, भिन्न ।

प्रा० विलगावना-क्रि० स० अलग करना, निकाल देना ।

प्रा०विलपना-क्रि०अ०रोदन,रोना।

विलपत—गु० रोते हुये ।

सं० विलम्ब-(वि=बहुत,लवि=ठहरना) स्त्री० देरी, अबेर,टालमटोल, अर्सा ।

सं० विलाप-(वि=बुरी तरहसे लप्=बोलना,अर्थात् रोना) पु० रोना, बिलकना,शोच,शोक,सन्ताप,दुःख।

सं० विलास-(वि=बहुत, लस्=खेलना) पु० खेल क्रीड़ा, केलि, विहार, भोग, सुख, आनन्द, हर्ष,ऐश।

सं० विलासिन—गु० पु० भोगी,ऐय्याश, पु० सर्प २ कृष्ण ३ वह्नि ४ कामदेव ५ महादेव ६ चन्द्र ।

सं०विलासिनी-स्त्री०नारी, वेश्या ।

सं०विलासी-क०पु०भोगी,ऐय्याश ।

सं० विलीन —(ली=लगना) क० पु० विरत, नष्ट, लयप्राप्त ।

सं० विलुप्त—(लुप्=अदृश्य होना) क० पु० अदृष्ट, नष्ट, गुप्त । [का।

प्रा०विलूलन-पु० बुदबुद बुल्लापानी-

सं० विलोकन—(वि,लो=देखना) पु० दृष्टि, दीठ, नजर, ताक ।

सं०विलोकना—(सं० विलोकन) क्रि० स० देखना, ताकना ।

सं० विलोकित-र्म्म० देखा हुआ ।

सं० विलोचन-(वि, लोच्=देखना) गु० पु० आँख, नयन, नेत्र ।

सं०विलोप-भा०पु० अदर्शन,नाश ।

सं० विल्व—(विल्=ढकना)पु०बेल का पेड़ या फल ।

सं० विवर-(वि=नहीं, वृ=ढकना) पु०बिल, छेद, गढ़ा, सेंध, २ दोष ।

सं० विवरण-(वि, नहीं, वृ=ढकना अर्थात् शब्द के अर्थ आदि का खोलना) पु० टीका, व्याख्या,बखान, २ हिज्जा, ३ रिपोर्ट, बहस ।

सं० विवर्ण-गु०अधम,नीच,२रंगहीन, रूप रहित, निश्चेष्ट ।

सं० विवस्वत्—पु० सूर्य, अर्क वृत्त, अरुण, काल ।

सं० विवाद —(वि=बहुत, वाद= झगड़ा) पु वाद, झगड़ा, उलटा कहना, विरोध ।

सं० विवाह-(वि=आपसमें,वह=लेजाना) ब्याह, पु० गठबंधन, शादी ।

सं०विवाहित-(विवाह) र्म्म० पु० ब्याहा हुआ,जिसकी शादीहोगई हो।

सं०विवाहिता-(विवाहित) र्म्म० पु० स्त्री० ब्याही हुई ।

सं०विविक्त–(वि, विच्=जुदा करना) गु० छोड़ाहुआ, २ एकान्त, निर्जन, ३ पवित्र ।

सं०विवृत्ति–स्त्री०विस्तार,व्याख्यान।

सं०विविध–(वि=बहुत, विध=प्रकार) गु० नानाप्रकार का, भांति २ का।

सं०विवेक (वि=बहुत, विच्=जुदा करना,विचारना,)पु०विचार,ज्ञान।

सं०विवेकी–(विवेक) क० पु० विचारकरनेवाला, ज्ञानवान्,ज्ञानी।

सं०विवेचना–वि=बहुत, विच्=जुदा जुदा करना,विचारना) स्त्री० भूठ सचका विचार,विवेक,तमीज।

सं०विवेचित / विवेचितव्य / विवेच्य } कर्म० विचारित, विचारने योग्य ।

सं०विवोढ़ा–पु० जामाता, दामाद, वर, दूलहा, नौशा ।

सं०विशद–(वि, शद्=जाना) गु० धौला, सफ़ेद, श्वेत, निर्मल,साफ़, उज्ज्वल ।

सं०विशाखा–(वि=बहुत, शाखा=प्रकार) स्त्री० सोलहवां नक्षत्र ।

सं०विशारद–(विशाल=बहुत,द=देनेवाला, दा=देना यहां विशाल के ल को र हो गयाहै)गु०पण्डित, विद्वान्, निपुण, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध ।

सं०विशाल–(वि=बहुत,शलृ=जाना) गु० बड़ा, बहुत, चौड़ा,फैला हुआ ।

सं०विशिख–(वि=बहुत, अथात् तीखी, शिखा=चोटी अथवा अणी, या वि=नहीं, शिखा=चोटी) पु० तीर, बाण, शर, गु० बिन चोटीका, शिखारहित ।

सं०विशिखासन–(विशिखा + आसन) पु० धनुष, कमान ।

सं०विशिप–धि० पु० मन्दिर ।

सं०विशिष्ट–(वि=बहुत, शिष्=गुण सहित होना)क० पु० साथ, संयुक्त, सहित, जुड़ाहुआ, २ उत्तम, बड़ा ।

सं०विशुद्ध–वि=बहुत,शुद्ध=पवित्र) गु० बहुत पवित्र, निर्मल, विमल, उज्ज्वल, उज्जल ।

सं०विशुद्धि—भा०स्त्री०शोधन,दोष दूर करना ।

सं०विशेष–(वि=बहुत,शिष्=गुण के साथ होना) पु०प्रकार,भेद, जाति, गु० मुख्य, खास, निज, २ बहुत, अधिक ।

सं०विशेषोक्ति–स्त्री०यत्नोक्ति,विशेष वाक्य, अर्थालङ्कार भेद ।

सं०विशेषण–(वि=बहुत,शिष्=गुण के साथ होना) क०पु० गुण, धर्म, स्वभाव, तारीफ़ ।

सं०विशेष्य–(वि + शिष्)पु० नाम, संज्ञा, कर्म० खास, प्रधान ।

सं०विशोक-(वि=बिन,शोक=शोच) गु०जिसकोकिसीबातकाशोचनहो।

सं०विश्रम्भ-पु० विश्वास, प्रत्यय, निश्चय, एतबार।

सं०विश्रान्त-(वि=नहीं, श्रान्त=थकाहुआ) क्रि० चैन से, सुस्थिर, आराम कियाहुआ, बेथकाहुआ।

सं०विश्रान्तघाट-(विश्रान्त+घाट) पु० यमुना नदी पर का एक घाट जहां श्रीकृष्ण और बलदेवजी ने कंसको मारके आरामकियाथा।

सं०विश्राम-(वि=नहीं, श्रम्=थकना)भा०पु०चैन, आराम, ठहराव।

सं०विश्लिष्ट-(श्लिष्=मिलना) क० पु० अयुक्त, शिथिल।

सं०विश्लेष-पु० वियोग, विच्छेद, विभाग, शैथिल्य। [विभाजक।

सं०विश्लेषक-क० पु० विच्छेदक,

सं०विश्व-(विश्=घुसना) पु०जगत्, संसार, जग, दुनिया, २ एक प्रकार के देवता जिन को श्राद्ध में पिण्ड और बलिआदिदेतेहैं,गु०सब, सम्पूर्ण।

सं०विश्वकर्म्मा-(विश्व=संसार, कर्म्म, काम, अर्थात् जिसका काम सब संसार में है) पु० देवताओं का राजा, औरब्रह्माकाबेटा, २सूर्य्य।

सं०विश्वक्सेन } विष्वक्सेन } (विश्वक्=सब संसारमें जानेवाली (विश्व=संसार,अञ्च्=जाना) सेना, फौज (है जिसकी) पु० विष्णु, नारायण।

सं०विश्वनाथ-(विश्व+नाथ) पु० शिव, महादेव जिनका मंदिर बनारस में है।

सं०विश्वप-(विश्व=संसार, पा=रक्षा करना) क्रि०पु०विश्वपालक।

सं०विश्वम्भर-(विश्व=संसार को भर=पालनेवाला,भृ=पालना)पु० विष्णु, २ इन्द्र।

सं०विश्वरूप-(विश्व+रूप)पु० विष्णु, सर्व्वव्यापी।

सं० विश्वसित-क० पु० विश्वास पात्र, मुअतमिद।

सं० विश्वस्त-क०पु०प्रत्ययित, विश्वासकर्त्ता,मुअतमिद,जातविश्वास।

सं०विश्वामित्र-(विश्व=संसार, अथवा सब, मित्र=प्यारा, जिसके सब संसार मित्र है)-पु० गाधि राजा का बेटा जो राजऋषि से ब्रह्मऋषि होगया।

सं०विश्वास-(वि, श्वस्=जीना, पर वि, उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ भरोसा करना हो जाता है) पु० भरोसा,पतीत,एतमाद।

सं०विश्वासी-क० पु० भरोसा करनेवाला, विश्वासक।

सं०विश्वासघातक-(विश्वास+

(१) मित्रेचर्षौ।६।३।१३०। इससूत्र से विश्वको दीर्घ कियागया॥

घातक) कृ० पु० कपटी, छली, दगाबाज़, ठग ।

सं० विश्वासपात्र-(विश्वास + पात्र) पु० भरोसावाला, काबिलएतमाद ।

सं० विश्वासविशिष्ट-गु० विश्वास योग्य, प्रतीति योग्य, जिस पर भरोसा किया जाय ।

सं० विश्वेश } (विश्व=संसार, विश्वेश्वर } ईश वा ईश्वर= मालिक) पु० महादेव, शिव ।

सं० विष (विष्=फैलना) पु० ज़हर, माहुर, हलाहल, गरल ।

सं० विषण्ण-कृ० दुःखी, विषादप्राप्त ।

सं० विषधर-(विष=जहर, धृ=रखना) पु० सांप, सर्प, भुजंग ।

सं० विषम-(वि=नहीं, सम=बराबर) गु० ना बराबर, असमान, अतुल्य, बराबर नहीं, २ कठिन, कठोर, दुःखदायी, ३ भयंकर ।

सं० विषमज्वर-(विषम + ज्वर) पु० कठिन तप, एक प्रकारकी तप ।

सं० विषमता-स्त्री० राग, द्वेष, मुख़ालिफ़त, बे एतदाली, २ कठिनता, सख़्ती ।

सं० विषमबाण-(विषम + बाण, अर्थात् जिस का तीर कठिन है) पु० कामदेव ।

सं० विषय-(वि=बहुत, षि=बांधना अर्थात् जिस में मन लगना) पु० चीज, वस्तु, पदार्थ, जो चीज इंद्रियों से जानी जाय, (जैसे रंग रूप, रस, सुगन्ध, शब्द, छूना) २ काम, ३ बात, ४ भोगविलास, ५ बाबत, वास्ते, लिये । [ऐय्याश ।

सं० विषयिण-कृ० पु० भोगी,

सं० विषयी-(विषय) कृ० पु० संसारी, भोगी ।

सं० विषाण-(वि=बहुत, षा=नाश करना, अथवा विष्=फैलना) पु० सींग, २ हाथीदांत, ३ सूअरकादांत।

सं० विषाद-(वि=बहुत, षद्=दुःख देना) भा० पु० शोक, दुःख, ताप, उदासी ।

सं० विषादक-कृ० पु० दुःखदाता ।

सं० विषादित कर्म० पु० कष्टित, दुःखी।

सं० विषुव } (विषु=बराबर विष्= विषुवत् } फैलना) और वा आना अर्थात् जिस में दिन रात बराबर होते हैं पु० वह समय जब दिन रात बराबर होते हैं ।

सं० विषुवतरेखा-(विषुवत् + रेखा) स्त्री० धरती के बीच की लकीर, मध्य रेखा, मध्यसूत्र, भूमध्यरेखा, खत उस्तवा ।

सं० विष्टब्ध-कर्म० प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध।

सं० विष्टभ्य गु० सम्हार कर ।

सं० विष्ठा-(वि, स्था=ठहरना) स्त्री०

गृह, मल, पुरीष ।

सं० विष्णु—(विष्=फैलना, जो सब सृष्टि में फैला हुआ है) पु० परमेश्वर भगवान्, सृष्टि को पालने वाला, व्यापक ।

सं० विष्णुवल्लभा—(विष्णु=भगवान् वल्लभा=प्यारी) स्त्री० तुलसी, २लक्ष्मी, हरिप्रिया ।

सं० विसर्ग—(वि, सृज्=छोड़ना) पु०स्वर के आगेकी दो बिंदी, २दान, ३ छोड़ना ।

सं० विसर्जन—(वि,सृज्=छोड़ना) भा०पु० बिदा, भेजना, छुट्टीकरना, जानेदेना, २ छोड़ना, ३ देना ।

सं० विसर्ज्जित—र्म्म० पु० रुखसत किया, बरखास्तहुआ, भेजा गया ।

प्रा० विसासिनि—स्त्री०हाभिदा डाहिनि, सौतिनी ।

सं० विसूचिका—(वि=कठोर, सूची =सुई जो सुई के ऐसा कठोर अथवा तीखा अर्थात् बहुत दुःख देने वाला रोग) स्त्री० एक प्रकार का हैजे का रोग ।

सं० विस्तर—(वि स्तृ=ढापना)पु० प्रचुर, बहुत, समूह, विस्तार, २ आधार, पीढ़ा बिछौना ।

सं० विस्तार(वि=बहुत, स्तृ=ढकना, फैलाव, चौड़ाई, स्तम्भ, कालम, शफा का, आधा ।

सं० विस्तारक } क० पु० फैलाने
विस्तारी } वाला । [गया ।

सं० विस्तारित र्म्म० पु० फैलाया।

सं० विस्तीर्ण क० पु० फैलाहुआ, विस्तृत ।

सं० विस्तृत—(वि=बहुत, स्तृ=ढकना, फैलाना) क० पु० फैला हुआ, विस्तीर्ण ।

सं० विस्फुलिंग—पु० चिनगारी ।

सं० विस्फोट—(वि, बहुत स्फुट्=फूटना, या फटना) पु० फोड़ा, घाव।

सं०विस्फोटक—क० पु० फूटनेवाला अर्थात् बहुतफोड़ा, शीतला, चेचक।

सं० विस्मय—(वि=कुछ, स्मि=मुसकुराना) पु० अचरज, आश्चर्य, अचंभा, चमत्कार, तअज्जुब ।

सं० विस्मरण—(वि=नहीं, स्मरण =याद)भा०पु०भूलना, बिसरना।

सं० विस्मित—(वि, स्मि=मुसकुराना) क० पु० अचंभे में चकित, अचंभित ।

सं० विस्मृत—(वि=नहीं, स्मृ=याद रहना) क० भूला हुआ ।

फ़ा० विस्मृति—स्त्री० भूल, गफ़लत ।

सं० विस्मृतता—भा० स्त्री० बेहोशी, बे सुधि, बे खबरी ।

सं० विहग } (विहायस्=आकाश
विहङ्ग } वि=बीच में, हा छो-
विहङ्गम } ड़ना, वा हय्=जाना)

और गम्=जाना अर्थात् आकाश में उड़नेवाला) पु० पखेरू, पक्षी, २ बादल, ३ तीर, ४ सूर्य, ५ चांद, ६ ग्रह ।

सं० विहरण-(वि, हृ=लेना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इस धातु का अर्थ खेल करना, या आनंदकरना होताहै) भा० पु० विहार करना, खेलकरना, क्रीड़ा करना, घूमना, सैरकरना ।

सं० विहार-(वि, हृ=लेना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इस धातु का अर्थ खेल करना होताहै) भा० पु० विलास, खेल, क्रीड़ा, २ आनंद से फिरना ।

सं० विहारी- बिहार)क०पु०विहार करनेवाला, आनंद करनेवाला, पु० श्रीकृष्ण ।

सं० विहित (वि=बहुत, धा=रखना म्मि० ठीक, उचित, करने योग्य, ठहराया हुआ ।

सं० विहीन-(वि=बहुत, हा=छोड़ना) म्मि० विना, जुदा, रहित, छोड़ा हुआ ।

सं० विह्वल-(वि=बहुत, ह्वल्=हिलना, चलना) क० पु० व्याकुल, घबराया हुआ, चंचल ।

सं० वी-पु० विकाश, दीर्घ, एका ।

सं० वीक्षण-(वी+ईक्ष+अन, ईक्ष=देखना) पु० दर्शन, देखना ।

सं० वीक्ष्य-गु० देखकर, निहारकर ।

सं० वीक्षित-म्मि० देखाहुआ, दृष्ट ।

सं० वीचि-(वे=फैलना) स्त्री० लहर, तरंग, मौज, ढऊ ।

सं० वीज-(वि=बहुत, जन्=पैदा होना) पु० ब्यथा, दाना जो बोया जाता है, २ मूल, कारण, ३ अंकुर, ४ वीर्य्य, ५ मंत्र, ६ बीजगणित, गणित का एक भाग जिसमें अङ्कों, की जगह अक्षर लिखकर हिसाब बनाते हैं इसको संस्कृत में अव्यक्तगणित कहते हैं ।

सं० वीणा-(अज=जाना, वा वी=जाना) स्त्री० एक प्रकार का बाजा जिसको नारदजीने निकाला, -वीण शब्दको देखो ।

सं० वीत-(वी=जाना, या वि, इण्=जाना) गु० बीताहुआ, गुजरा हुआ, चलागया ।

सं० वीथि-(वी=जाना, वा विथ्=मांगना) स्त्री० गली, रस्ता, २ पंक्ति, श्रेणी ।

सं० वीप्सा-(वि=बहुत, आप्=फैलना, काम) भा० स्त्री० व्याप्तीच्छा, फैलना, २ आदर ।

सं० वीर-(वीर्=पराक्रम करना वा अज्=जाना) पु० शूर, बहादुर, शूरमा, योद्धा, काव्य के नौरस में से एक रस ।

सं० वीरप्रसू–(प्र,सू=पैदाकरना) स्त्री० वीरजननी, वीर पुत्र की माता।

सं० वीरण } (ईर्=कहना) पु०
प्रा० वीरन } बेना, गाँड़, खस, गु० प्यारा, प्याराभाई।

सं० वीरता–(वीर) स्त्री० बहादुरी, शूरमापन।

सं० वीरभद्र–(वीर=बहादुर, भद्र=बहुत अच्छा) पु० महादेव के एक गण का नाम जिसने यज्ञसमेत दक्ष का विनाश किया।

सं० वीरवृत्ति–स्त्री० शूरों का बाना, शूरों का पैंधावा।

सं० वीरा–स्त्री० वीर पुत्र की माता, पीपर औषध।

सं० वीर्य्य–(वीर) पु० बीज, धातु, पुरुषार्थ, बल, ज़ोर, ३ प्रताप, प्रभाव, तेज।

सं० वृक–(वृक्=लेना) भेड़िया, हुंडार, ल्यारी।

सं० वृकोदर–पु० भीमसेन, ब्रह्मा।

सं० वृक्ष–(व्रश्च्=काटना) पु० पेड़, रूख, गाछ, तरवर, पादप।

सं० वृत्त–(वृत्=होना या ढकना) पु० घेरा, मंडल, चक्कर, गोलखेत, २ छंद, ३ रीत गु० हुआ, पैदा हुआ।

सं० वृत्तान्त–(वृत्=पैदाहुआ, अन्त=निर्णय अथवा निश्चय अर्थात् जिस के सुनने से किसी बात का निर्णय होजाता है) पु० समाचार, बात, हाल हक़ीक़त, पता।

सं० वृत्ति–(वृत्=होना या पैदा होना) स्त्री० आजीविका, जीविका, रोज़गार, रोज़ी, वज़ीफ़ा।

सं० वृत्य–म्पं०वर्णनीय,कहनेयोग्य।

सं० वृत्र } (वृत्=होना) पु० एक
वृत्रासुर } राक्षसजिसकोइन्द्रनेमारा।

सं० वृथा–(वृ=ढकना) क्रि० वि० बेफ़ायदह, निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ, योंहीं [पुराना।

सं० वृद्ध–(वृद्ध=बढ़ना) गु० बूढ़ा,

सं० वृद्धि–(वृध्=बढ़ना) स्त्री० बढ़ती, बढ़न्ती, तरक़्क़ी, लक्ष्मी, ऋद्धि, सिद्धि।

सं० वृन्द–(वृण्=प्रसन्न होना) पु० समूह, भीड़ भाड़, ढेर, थोक।

सं० वृन्दा–(वृण्=प्रसन्नहोना) स्त्री० तुलसी, २ राधिका, ३ एक देवी का नाम। [मनोहर।

सं० वृन्दारक–पु० देवता गु० मुख्य,

सं० वृन्दारिका–स्त्री० देवतोंकीस्त्री।

सं० वृन्दावन–(वृन्दा+वन) पु० मथुरा के पास एक वन जहां वृन्दा देवी का मंदिर था और जहां गोकुलसे नन्दजी और श्रीकृष्णआदि सब ग्वाल जा बसे थे।

सं० वृश्चिक–(व्रश्च्=काटना) पु० बिच्छू, २ आठवीं राशि।

सं० वृष–(वृष्=सींचना वा पैदा कर

ना) पु० बैल, २ दूसरीराशि ।

सं० वृषकेतु—(वृष+केतु)पु० महादेव, शिव ।

सं० वृषण—पु० अण्डकोष, फोता ।

सं० वृषभ—(वृष्=सींचना, या पैदा करना) पु० बैल ।

सं० वृषल—पु०शूद्र२गञ्जन, गाजर, प्याज, ३ घोड़ा, ४ अधार्मिक, ५ चन्द्रगुप्त नृप ।

सं० वृषली—स्त्री० शूद्री, जो पिता के घर में कन्या रजोधर्म को प्राप्त हुई उसे भी कहते हैं ।

सं० वृषाकपि—(वृष=धर्म, अ=नहीं, कपि=कँपाना) जो धर्मको न कँपावे, महादेव, विष्णु, अग्नि, इन्द्र ।

सं० वृषोत्सर्ग—(वृष्+उत्सर्ग) पु० मृतक के हेतु बैल को दाग के छोड़ देना, सांड़ ।

सं० वृष्टि—(वृष्=सींचना, बरसना) स्त्री० मेह, वर्षा, पानी का गिरना ।

सं० वृहत्—(वृह्=बढ़ना)गु० बड़ा ।

सं० वृहत्पाद—पु० बटवृक्ष, बर्गद ।

सं० वृहस्पति—(वृहती=बोली, पति =मालिक अथवा वृहत्=बड़ा अर्थात् देवता, पति=मालिक या गुरु) पु० देवताओं का गुरु पांचवां ग्रह, २ वृहस्पतिवार, बीफै, जुमेरात ।

सं० वेग—(विज्=कँपाना)पु० प्रवाह, धारा, जव, महाकाल ।

प्रा० वेगि—स्त्री० शीघ्र, जल्दी ।

सं० वेणी—(वेण्=जाना) स्त्री० चोटी, बालों को सँवारना, २ नदियों के मिलने की जगह, जैसे त्रिवेणी आदि ।

सं० वेणु—पु०बांस, बांसुरीकाबाजा, मुरली, २ राजा का नाम ।

सं० वेतन—(अज्=जाना, या वी= जाना) पु० मजदूरी, महीनेकी तनख़्वाह, मासिक, जीविका ।

सं० वेताल—(अज्=जाना) पु०वह मुर्दा जो भूत के घुसने से जीता सा जाना जाय, पिशाच, २ शिव के नौकर ।

सं० वेत्ता-(विद्=जानना)क०पु० जानेवाला, पण्डित ।

सं० वेत्र—पु० बेत, बेतवृक्ष ।

सं० वेद[2]—(विद्=जानना)पु० श्रुति, हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक—मुख्य वेद तीनहैं (१ ऋग्वेद, २ सामवेद, ३ यजुर्वेद) और कहते हैं कि चौथा अथर्व वेद पीछे से मिलाया गया है और इतिहास और पुराणों को पांचवां वेद भी कहते हैं, ज्ञान, शास्त्रज्ञान, चारकी संख्या, चतुर्थांश ।

सं० वेदगर्भ—पु० ब्रह्मा, ब्राह्मण ।

सं० वेदना—(विद्=जानना) स्त्री० पीड़ा, दुःख, व्यथा, २ जानना, सुख दुःख का ज्ञान ।

---

१ वर्षयति कामानिति वृषः आकम्पयति पापानिति आकपिः वृषश्चासावाकपिश्चेति वा २ " तत्रापौरुषेयं वाक्यं वेदः" —इतिहासपुराणाभ्यांवेदार्थमुपबृंहयेत् । बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदोमामयंप्रहरिष्यतीति १ ॥

सं० वेदपारग -पु० सर्ववेदज्ञाता ।

सं० वेदमाता-(वेद+माता) स्त्री० गायत्री ।

सं० वेदव्यास-(वेद, वि+अस=फैलाना अर्थात् वेदों को फैलाने वाला) पु० व्यासजी ।

सं० वेदाङ्ग-(वेद=अङ्ग) पु० वेद के अंग अथवा भाग जो छः हैं (१ शिक्षा जो अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण सिखलाता है, २ कल्प जिसमें यज्ञ आदि कर्म्मों की विधि लिखी है, ३ व्याकरण, ४ छन्द, ५ ज्योतिष, ६ निरुक्त, जिसमें वेद के कठिन और गूढ़ शब्द और वाक्योंका अर्थहै)।

सं० वेदान्त-(वेद+अन्त) पु० वेदव्यासजीका बनायाहुआ शास्त्र ।

सं० वेदि, वेदिका (विद्=जानना) स्त्री० होम करने की चबूतरी, यज्ञ अथवा बलिदान करने की जगह, २ पीठि ।

सं० वेद्य-र्म्म० पु० जानने योग्य ।

सं० वेधक-(विध्=छेदना) क० पु० छेदक, वर्म्मा ।

सं० वेपथु (वेप+अथु) कंपना, हिलना।

सं० वेला-(वेल्=जाना) स्त्री० समय, वक्त, काल ।

सं० वेश-(विश्=घुसना) पु० गहना, कपड़ा, भेष, भूषण, शोभा ।

सं० वेशर, वेसर पु० अश्वतर, खच्चर ।

सं० वेश्म, वेश्मन धि० पु० गृह, घर ।

सं० वेश्या-(वेश) स्त्री० नगरनारी, गणिका, कंचनी, पतुरिया ।

सं० वेष-(विष्=फैलना) पु० कपड़ा, गहना, २ स्वरूप, डौल, चाल ।

सं० वेष्टन-(वेष्ट=लपेटना) भा० पु० उष्णीष, पगड़ी, मुकुट ।

सं० वेष्टित-र्म्म० पु० लपटा हुआ, लपेटा गया ।

सं० वैकुण्ठ-(वि.कुण्ठा=शुभ्र ऋषि की स्त्री और विष्णु की किसी अवतार में मा उसी के नाम से वैकुण्ठ हुआ या वि=कई प्रकार की कुण्ठा माया जिसकी) पु० विष्णु, २ विष्णुलोक, परमपद ।

सं० वैखानस-(वि, खन्=खोदना, जो संसार की सब इच्छाको छोड़ देता है) पु० वानप्रस्थ, तपस्वी, (आश्रम शब्द को देखो)।

सं० वैतरणी-(वितरण=दान, अर्थात् जो दान पुण्य करने से लांघीजाती है या वि=बुरीतरह से, वा कठिनता से, तृ=पार होना) स्त्री० नरककी नदी ।

सं० वैदिक-(वेद) पु० वेद पढ़ा हुआ ब्राह्मण, वेदपाठी ब्राह्मण, गु० वेद में कहाहुआ, वेद के अनुसार, वेद की रीति से ।

सं० वैदेही (विदेह) स्त्री० जनक राजा की बेटी, सीता, जानकी।

सं० वैद्य—(विद्=जानना) पु० हकीम, बैद, दवा दारू करनेवाला, चिकित्सक।

सं० वैद्यक—(वैद्य) पु० वैदककविद्या।

सं० वैद्यनाथ—(वैद्य+नाथ) पु० वैद्यराज, धन्वन्तरि, २ शिव, बैजनाथ, महादेव जिनका मंदिर झाड़खण्ड में है।

सं० वैनतेय—(विनता, कश्यपमुनि की स्त्री, वि=बहुत, नम्=नवना) भा० पु० विनता का बेटा, गरुड़, पखेरुओं का राजा।

सं० वैभव—(विभव) भा० पु० ऐश्वर्य, सम्पदा, धन, दौलत।

सं० वैमनस्य—भा० पु० उदासीनता, बिगाड़, रंज, नाइत्तिफ़ाक़ी।

सं० वैयाकरण—(व्याकरण) भा० पु० व्याकरण पढ़ा हुआ पण्डित।

सं० वैयात्य—भा० पु० निर्लज्जता, बेहयाई, बेशर्मी।

सं० वैर—(वीर) पु० दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, बिरोध।

सं० वैराग } (विराग) भा० पु० संसार
वैराग्य } की विषय वासना का छोड़ना, बेमुहब्बती।

सं० वैरागी—(वैराग) गु० जिस ने संसार की विषय वासना को छोड़ दियाहै, उदासीन, साधु। [शत्रु।

सं० वैरी—(वैर) क० पु० दुश्मन,

सं० वैशाख—(विशाखा, एकनक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन विशाखा नक्षत्र होताहै) पु० बरस का दूसरा महीना।

सं० वैश्य—(विश्=घुसना, अपने खेती, बनिज आदि धंधे में) पु० बनिया, महाजन तीसरेवर्णके लोग।

सं० वैश्वानर—पु० अग्नि गु० कृपण, स्थूल, सब, वक्ता।

सं० वैष्णव—(विष्णु) पु० विष्णुका भक्त, विष्णु उपासक, गु० विष्णुका।

सं० व्यक्त—(वि, अञ्ज=जाना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ प्रकट होना होताहै) कर्म० पु० जाना हुआ, स्पष्ट, प्रकट।

सं० व्यक्ति—(वि, अञ्=जाना) स्त्री० एकता, एक एक करके, २ जन, मनुष्य। [विकल।

सं० व्यग्र—गु० व्याकुल, परेशान,

सं० व्यङ्ग—गु० अंगहीन, व्याकुल।

सं० व्यजन—(वि, अञ्=जाना) पु० तालवृन्तक, पङ्खा, बेना।

सं० व्यञ्जक—क० पु० प्रकाशक, नर्तक, भावबोधक।

सं० व्यञ्जन—(वि=बहुत, अञ्ज=जाना,

वा मिलना या प्रकट करना) पु० तरकारी, साग, २ खाने की अच्छी चीज़, ३ चिह्न, ४ वह अक्षर जिसमें स्वर न हो, जैसे क से ह तक ।

सं० व्यञ्जना—भा० स्त्री० श्लेष, शब्द, शक्तिभेद, शब्दके अर्थ से विशेष अर्थको बोधकरे जैसे जहां धुआँ है वहां अग्नि अवश्य होगी ।

सं० व्यतिक्रम—पु० विलोम, विपर्य्यय विपरीत, उलटा पुलटा ।

सं० व्यतिरिक्त—(रिच्+त, रिच्=छोड़ना) कृ० भिन्न, जुदा जुदा, अलावा, सिवाय ।

सं० व्यतिरेक—(रिच्=त्यागना) भा० पु० वियोग, भिन्नता, पृथक्त्व, विशेष, अतिक्रम, अलङ्कारभेद ।

सं० व्यतीत-(वि, अति, इण्=जाना) गु० बीता हुआ, गुजरा हुआ ।

प्रा० व्यतीपात—(वि, अति, पत्=गिरना) पु० बड़ा भारी उपद्रव, २ ज्योतिष में सतरहवां योग ।

सं० व्यथक—कृ० पु० दुःखदाता, तकलीफ़ देह ।

सं० व्यथा—(व्यथ्=पीड़ा देना) स्त्री० पीड़ा, पीर, दर्द, दुःख ।

सं० व्यथित-कृ० पु० पीड़ित, दुःखत ।

सं० व्यधन—(व्यध्=ताड़ना) भा० पु० वेधन, ताड़न, पीड़न ।

सं० व्यपदेश—(वि+अप, दिश्+अ) पु० संज्ञा, नाम, आरम्भ, मिष, छल, क़िस्सा ।

सं० व्यभिचार—(वि=बुरी तरह से, अभि=चारों ओर से, चर्=चलना) भा० पु० पुरुषका पराई स्त्री के पास जाना, स्त्री का पराये पुरुष के पास जाना, बुरा काम, भ्रष्टाचार, निन्दितकाम, रण्डीबाज़ी ।

सं० व्यभिचारी—कृ० पु० कुमार्गी, गुमराह ।

सं० व्यय—(वि=बहुत, इण्=जाना) पु० खर्च, लागत, २ नाश, क्षय ।

सं० व्यर्थ—(वि=नहीं, अथवा चला गयाहै, अर्थ, मतलब, या प्रयोजन) गु० वृथा, निरर्थक, बेफ़ायदह, विफल, निष्फल, निकम्मा ।

सं० व्यवकलन—(वि=अव्, कल्=गिनना और इन दोनों उपसर्ग के साथ आने से अर्थ घटाना हुआ)पु० घटाना, बाक़ी निकालना ।

सं० व्यवकलित—र्म० वियोगित, घटाया गया ।

सं० व्यवधान—(वि, अव्, धा=रखना) पु० आच्छादन, आड़, अन्तर्द्धि, बीच में रोक ।

सं० व्यवसाय—वि, अव् (सै=नाश होना)पु० उद्यम, अनुष्ठान, अवधारण, विचार, अभिप्राय, उद्योग ।

सं० व्यवस्था—(वि, अव्, स्था=ठह-

रना) स्त्री० धर्म, निर्णय, शास्त्र, क़ानून, हाल ।

सं० व्यवस्थित-क० व्यवस्थाप्रमाणक, पाबन्द क़ानून ।

सं० व्यवहार-(वि, अव, हृ=लेना) पु० काम, धन्धा, व्यौहार, लेन देन, चाल चलन ।

प्रा० व्यवहरिया-(व्यवहारी) क० पु० व्यवहारकर्त्ता, महाजन, व्यौहार ।

सं० व्यवहित-र्म्म० पु० व्यवधान युक्त, रोंक, रोंकागया ।

सं० व्यसन-(वि=बहुत, अस्=फेंकना) पु० विपत् २ दोष, बुरा काम (जैसे जूआ खेलना, दिनको बहुत सोना, झूठ बोलना, शराब पीना अथवा और अफ़ीमआदिनशा करना, डांवाडोलफिरना, दांत पीसना आदि व्यसन हैं) चसका, लत ।

सं० व्यस्त-क० व्याकुल, व्याप्त, विपरीत, विलोम, हीन, असमग्र ।

सं० व्याकरण-(वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, कृ=करना) पु० शब्दों काशास्त्र, शब्द और धातुका बोधक ।

सं० व्याकुल-(वि=बहुत, आकुल घबरायाहुआ) गु० घबराया हुआ, दुःखी ।

सं० व्याख्या-(वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, ख्या=प्रसिद्ध करना) स्त्री० वर्णन, व्याख्यान, टीका ।

सं० व्याख्यात-र्म्म० पु० कथित, कहा हुआ ।

सं० व्याख्यान-भा० पु० कथन, वर्णन, टीका ।

सं० व्याघ्र-(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, घ्रा=सूंघना) पु० बाघ, शेर, नाहर, लालरेंड वृक्ष, कंजावृक्ष ।

सं० व्याज-(वि, अज्=जाना) पु० कपट, छल, मिष, बहाना ।

सं० व्याध-(व्यध्=ताड़ना, दुःख देना) पु० शिकारी, अहेरी, बहेलिया, जानवरों को मारनेवाला ।

सं० व्याधि-(व्यध्=दुःख देना) स्त्री० रोग, पीड़ा, बीमारी, दुःख, सन्ताप ।

सं० व्यापक } (वि=बहुत, आप्=फैलना) क० पु० फैलनेवाला, प्रभु, सर्वव्यापी, परमेश्वर ।
व्यापी }

सं० व्यापकता-(व्यापक) भा० स्त्री० प्रभुता, फैलाव ।

सं० व्यापादन-भा० पु० मारण, क़तल ।

सं० व्यापादित-र्म्म० पु० मारा हुआ, मक़तूल ।

सं० व्यापार-(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, पृ=काम में लगना) पु० व्यौपार, धन्धा, सौदागरीकाम ।

सं० व्याप्त-(वि=बहुत, आप्=फैलना) गु० फैला हुआ ।

सं० व्याप्य-र्म्म० पु० व्यापनीय,

फैला हुआ ।

सं० व्यायाम-(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, यम्=रोकना) पु० परिश्रम, कुश्ती करना, मुद्गर, मोगरी उठाना आदि कसरत ।

सं० व्याल-(वि=बहुत, अड्=फैलना, वा वि=बहुत, आ=चारों ओर से, ला=लेना) पु० सांप, सर्प, नाग, भुजंग, २ दुष्ट हाथी, ३ मारने वाला जानवर, ४ धूर्त, दुष्ट ।

सं० व्याली-क० पु० सर्पधारी, वेगी, महादेव ।

सं० व्यास-(वि=बहुत, अस्=फैलाना) पु० एक प्रसिद्ध मुनिका नाम जिसने वेद पुराणोंको इकट्ठा किया, और वेदान्त शास्त्र को बनाया, २ विस्तार, फैलाव, ३ चक्करका आध काट, गोल खेतके बीचकी लकीर, विस्तार ।

सं० व्याहति-भा० स्त्री० आघात, चोट ।

सं० व्याहृति-(वि, आ, हृ=लेना) स्त्री० उक्ति, कथन, वर्णन, व्याहृतयः सप्त भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम् ।

सं० व्युत्पत्ति-(वि=बहुत, उद्=ऊपर, पद्=जाना) स्त्री० शास्त्र के समझने की शक्ति, शास्त्रज्ञान, वजह तस्मिया ।

सं० व्युत्पन्न-(वि=बहुत, उद्=ऊपर पद्=जाना) गु० शास्त्र में प्रवीण, पण्डित, विद्वान् ।

सं० व्यूढ-(वि, वह्=प्राप्त करना) गु० विस्तृत, दीर्घ, संहति, विपुल, विन्यस्त, समूह, सन्नद्ध, तैय्यार ।

सं० व्यूह-(वि, ऊह्=तर्क करना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ सेनाको सँवारना होता है) पु० सेनाकी रचना, २ भीड़, समूह, तर्क, बल, विन्यास, निर्माण ।

सं० व्यूहन-भा० पु० सैन्यस्थान, किलाबन्दी । [आकाश, आस्मान ।

सं० व्योम-(व्ये=ढकना, घेरना) पु०

सं० व्योमयान-पु० विमान ।

सं० व्रज-(व्रज=जाना) पु० गोस्थान, मार्ग, ३ वृन्द, ४ ग्राम ।

सं० व्रजन-भा० पु० पर्य्यटन, भ्रमण, घूमना ।

सं० व्रज्या-स्त्री० पर्य्यटन, प्रस्थान, वर्ग, रंगभूमि, क्रीड़ास्थान, संन्यास ।

सं० व्रण-(व्रण=घाव करना) पु० घाव, फोड़ा ।

सं० व्रत-(व्रज्=जाना, अथवा वृ=पसन्द करना) पु० उपास, उपवास, पवित्र काम, नियम, पुण्यकर्म ।

सं० व्रात-(वृ=ढकना, घेरना या व्रत+घञ्) पु० समूह, भीड़ ।

सं० व्रीड़ा (व्रीड्=लजाना) स्त्री० लाज, लज्जा, शर्म, संकोच।

सं० व्रीड़ित—क्र० पु० लज्जित, शर्माया हुआ।

(श)

सं० श—(शी=सोना) पु० शिव, २ शस्त्र, हथियार, ३ कल्याण, मङ्गल, ४ शयन, ५ हृदय।

सं० शंयु—(शम्=दमनकरना) गु० प्रसन्न, हर्षित।

सं० शंव—गु० सुकृती, पुण्यात्मा।

सं० शंवर—पु० जल, शंख।

सं० शंसा—स्त्री० प्रशंसा, स्तव।

सं० शंसित—र्म्म० कथित, निश्चित, स्तुत।

सं० शंस्य—र्म्म० स्तुत्य, प्रशंसनीय।

सं० शक—(शक्=समर्थ होना) पु० एक म्लेच्छ जातिके लोग, २ एक देश का नाम, ३ संवत् जो शालिवाहन राजा ने चलाया ४ सामर्थ्य।

सं० शकट—(शक्=सकना, या सहना, अथवा लेजाना) पु० गाड़ी, छकड़ा।

सं० शकटासुर—(शकट+असुर) पु० एक राक्षस जिसको श्रीकृष्ण ने मारा।

सं० शकल—पु० खण्ड, टुकड़ा, २ स्वरूप, चर्म, चिह्न, वल्कल, मछली का सेहरा या छिलका।

सं० शकारि—(शक+अरि) पु० विक्रमादित्य राजा।

सं० शकुन—(शक्=समर्थ होना) पु० बुरे भले का जतलानेवाला, सगुन, २ एक पखेरू का नाम।

सं० शकुन्त—पु० सासपक्षी।

सं० शकुन्तला—स्त्री० दुष्यन्तराजा की स्त्री, नाटक विशेष। [एक बार।

सं० शकृत्—पु० विष्ठा, मलमूत्र अव्य०

सं० शक्त—पु० समर्थ, दृढ़, पुष्ट।

सं० शक्ति—(शक्=बलवान् या समर्थ होना) स्त्री० बल, जोर, पराक्रम, पुरुषार्थ, २ बर्छी, सांग, ३ देवी, माया, लक्ष्मी, गौरी आदि आठ शक्ति (१ इन्द्राणी, २ वैष्णवी अथवा लक्ष्मी, ३ ब्रह्माणी, ४ कौमारी, ५ नारसिंही ६ वाराही, ७ माहेश्वरी, अथवा गौरी ८ भैरवी)।

सं० शक्तिमान्—(शक्ति+बल, मत्=वाला) गु० बलवान, जोरावर।

सं० शक्तिहीन—(शक्ति+हीन) गु० दुबला, दुर्बल, निर्बल, कमजोर।

सं० शक्तु—पु० सतुआ, सत्तू।

सं० शक्न—गु० समर्थ, पुष्ट।

सं० शक्य—र्म्म० पु० समर्थ, पुष्ट, गोप्य, भविष्य, होनहार, मुमकिन।

सं० शक्र—(शक्=बलवान्, अथवा समर्थ होना) पु० इन्द्र, देवताओं

का राजा, सुरपति।

सं० शक्रजित्–(शक्र=इन्द्र, जि=जीतना)पु० रावण का बेटा, इन्द्रजित्, मेघनाद।

सं० शक्रसुत–(शक्र+सुत)पु०इन्द्र का बेटा, जयन्त, २ बालि बानर।

सं०शक्राणी–स्त्री०पुलोमजा,शची।

सं० शङ्कर–(शम्=कल्याण या भला, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० महादेव, शिव, २ शङ्कराचार्य्य।

सं० शङ्का–(शकि=संदेह करना या डरना)स्त्री०सन्देह,शक,२डर, भय।

सं० शङ्कित–क०पु०डराहुआ,भीत, २ संदिग्ध, वितर्कित।

सं० शंकु–पु० आठ अंगुल की लकड़ी, ठूंठ वृक्ष, खूंटा, भाला, गांसी, शल्य, पाप, महादेव, अंश।

सं० शङ्ख–(शम्=ठंढा करना)पु० एक जल के जीव की हड्डी जिसको हिंदू पवित्र समझते हैं और देवता के साम्हने और लड़ाई में बजाते हैं २ सौ पदम (गिनती में)।

सं०शङ्खध्मा–(शङ्ख+ध्मा=बजाना) क०पु० शङ्खबजानेवाला।

सं० शचि–(शच्=बोलना) स्त्री०इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी।

सं० शचीपति–(शची+पति)पु० इन्द्र देवताओं का राजा।

सं० शठ–(शठ्=छल करना)गु० छली, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठग।

सं० शठता–(शठ)भा०स्त्री० दुष्टता, कपट, छल, ठगाई, मूर्खता।

सं० शण–पु०सनका वृक्ष, पटुआ।

सं०शण्ठ-पु०नपुंसक,हिजड़ा,२साँड़।

सं० शत–गु० एकसौ, १००।

सं० शतक–(शत) गु० सैकड़ा।

सं० शतकोटि–पु० इन्द्र का वज्र, स्त्री० सौकरोड़, अरब संख्या।

सं० शतक्रतु–पु० इन्द्र, सौ यज्ञ करनेवाला।

सं० शतघ्नी-(शत=सौ, हन्=मारना) स्त्री० एक तरह का हथियार, तोप अथवा, धनुष, २ एक रोग का नाम।

सं० शतद्रु–(शत=सौ, द्रु=जाना अथवा बहना जो सौ अर्थात् बहुत सी धारा से बहती है) स्त्री० सतलज नदी जो पंजाब में है।

सं० शतपत्र–(शत=सौ, पत्र=पत्ती या पंखड़ी) पु०कमल। [वैद्य।

सं० शतमारी–(मृ=मरणा) क०पु०

सं० शताब्द–पु० सौ वर्ष।

सं० शताब्दी–गु० सदी।

सं० शत्रु–(शद्=नाश करना) पु० वैरी, दुश्मन, रिपु, अरि, द्वेषी, विरोधी। [जीतनेवाला।

सं शत्रुविजयी–क० पु० शत्रुका

सं०शत्रुघ्न—(शत्रु=बैरी, हन्=मारना) पु० लक्ष्मण का छोटा भाई, रिपुसूदन। [विरोध, दुश्मनी।

सं०शत्रुता—(शत्रु) भा०स्त्री०बैर,

सं०शनि—(शो=तीखा होना, या तेज होना) पु० सातवां ग्रह, शनैश्चर, ग्रहनायक, छायापुत्र, सूर्य का बेटा।

सं०शनिवार—(शनि+वार) पु० सातवां दिन, शनीचर।

सं०शनैश्चर—(शनैस्=धीरे, चर्=चलना) पु० शनिग्रह, शनिवार।

सं०शप—भा०पु० तिरस्कार, निरादर, शाप।

सं०शपथ—(शप्=सौगन्द खाना, या सरापना) स्त्री० सौगन्द किरिया, सोंह, दुहाई, प्रतिज्ञा, २ सराप, शाप।

सं०शब्द—(शब्द्=शब्द करना, या शप्=पुकारना) पु० ध्वनि, आहट, आवाज़ जो कान से सुना जाय, २ (व्याकरणमें) जो मुंहसे बोला जाय, बोल, वचन, पद, लफ़्ज़।

सं०शब्दशास्त्र—(शब्द+शास्त्र) पु० व्याकरण आदि शास्त्र जिनसे शब्दका ज्ञान होता है।

सं०शम—(शम्=शान्तहोना, या ठंढा होना) पु० मन की शान्ति, चैन, २ इन्द्रियों को और मन को रोकना।

सं०शमन—(शम्=ठंढा करना) पु० शान्ति, ठंढा करना, २ यमराज, गु० दूर करनेवाला ठंढा करनेवाला।

सं०शमित—क० पु० शान्त, मुतहम्मिल, सहनेवाला।

सं०शम्बल—पु० कूल, किनारा, २ पाथेय, राहखर्च, ३ मत्सर।

सं०शम्बुक—स्त्री०सीपी पु० घोंघा, शूद्र तपस्वी, शंख, दैत्य।

सं०शम्भु—(शम्=कल्याण रूप, भू=होना) पु०महादेव, शिव।

सं०शयन—(शी=सोना) पु० सोना, नींद लेना, नींद, २सेज, बिछौना।

सं०शय्या—(शी=सोना) स्त्री० सेज, बिछौना, पलंग, खाट।

सं०शर—(शॄ=मारना) पु० तीर, बाण, २ सरकण्डा।

सं०शरण—(शॄ=मारना जो शरण में आवे उसके बैरी को मारना) पु० बचाव, रक्षा, २ बचानेवाला, रक्षक, ३ घर, आसरा।

सं०शरणागत—(शरण+आगत) क० पु० शरण में आया हुआ, जो बचाव के लिये आवे, शरणार्थी, आश्रित। [रक्षक।

सं०शरण्य—क० रक्षक, शरणागत,

सं०शरण्यु—पु० मेघ, वायु, रक्षक।

सं०शरद्—(शॄ=नाश करना, बादल

और गर्मी को) स्त्री० एक ऋतु का नाम जो कुंआर और कार्तिक में रहती है । [आइट ।

प्रा०शराटा—पु० शब्द, आवाज़,

प्रा०शराबोर—पु० खूब भीगाहुआ ।

सं०शराव—पु० संपुट, डब्बा, डबिया, परई, सरवा, कोसा ।

सं०शरासन-(शर=तीर, आसन= ठहरने की जगह)पु० धनुष, कमान ।

सं०शरीर—(शृ=नाश होना) पु० देह, तन, काया, जिस्म ।

सं०शरि—क०पु० धूर्त, मूर्ख ।

सं०शर्करा—(शृ=नाश करना, अर्थात् गन्ने को पेरना) स्त्री० शक्कर, चीनी, खांड़ ।

सं०शर्म्मा—(शृ=नाशकरना, दुःख को)पु० सुख, २ब्राह्मणों की पदवी ।

सं०शर्व्वरी—(शृ=नाश करना थकावट को) स्त्री० रात, रात्री, २ स्त्री, ३ हल्दी ।

सं०शलभ—(शल्=जाना) पु० टिड्डी, पतंगा ।

सं०शलाका—(शल्=जाना) स्त्री० सुर्मे की सलाई, कूंची, तुली शूल ।

प्रा०शलीता—पु० टाट का बोरा या थैला जिसमेंचीज़वस्तुबांधीजाती है ।

सं०शल्य—(शल्=जाना) पु० एक राजाका नाम जिसका बर्णन महाभारत में है, २ सेल, ३वाण, गांसी ।

सं०शव—(शव्=बदलना, या नाश होना) पु० मुर्दा, मरा, लोथ, लाश, बिनजीवकीदेह, मराशरीर ।

सं०शवर-(शव्=जाना, या बदलना) पु० भील, बनबासी जंगली आदमियों की एक जात पहाड़ी, २ शिव, महादेव ।

सं०शबरी—(शवर)स्त्री० भीलनी, नीचजात की स्त्री ।

सं०शवाधार—(शव + आधार) वि० पु० टिकटी, रथी ।

सं०शश }
शशक } (शश्=उछल कर चलना, पु० ससा, खरहा, खर्गोश, २ चांद में का दाग़ जो खर्गोशके ऐसा दिखाई देताहै ।

सं०शशाङ्क—(शश=खर्गोश, अंक= चिह्न, अर्थात् जिस में खर्गोश के ऐसा दाग़ है) पु० चांद, चन्द्रमा ।

सं०शशि }
शशिन् }
शशी } (शश) पु० इन्दु, चांद, चन्द्रमा ।

सं०शश्वत्—(शश्=खर्गोश, वत् =बराबर) क्रि० वि० बारबार, फिर फिर, पुनः पुनः, लगातार, निरन्तर, हमेशा ।

सं०शस्त—र्म० पु० स्तुत, प्रशंसा किया गया ।

सं० शस्त्र (शस=मारना) पु० हथियार, आयुध, ऐसा हथियार जिसको हाथ में रखकर मारें जैसे तलवार आदि।

सं० शस्त्रधारी–(शस्त्र=हथियार, धारी=रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० हथियारबन्द, शस्त्ररखनेवाला।

सं० शस्त्रशम्मार्जन–भा० पु० सैकिल करना, हथियारों का साफ करना।

सं० शस्त्राधार–(शस्त्र+आधार) पु० अस्त्रगृह, सिलाखाना।।

सं० शस्य–(शस्=नाश करना जो चौपायों से नाश किया जाता है) पु० धान, फल आदि।

सं० शाक–(शक्=सकना) पु० साग, तरकारी, भाजी, फल, मूल फूल पत्ते आदि, २ एकद्वीप का नाम, ३ सालिवाहन राजा का संवत्, शाका।

सं० शाकम्भरी–(शाक=साग वनस्पति आदि, भरी भरनेवाली, भृ=भरना) अर्थात् पृथ्वी पर सब चीज़ पैदा करनेवाली स्त्री० दुर्गा, देवी, भगवती जिसका मन्दिर साम्भर नाम नगर के पास पहाड़ पर है और राजपूताने के लोगों का विश्वास है कि इसी देवी के वरदान से साम्भर नाम झील में नमक पैदा होता है दुर्गा पाठ में लिखा है कि "भविष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः, शाकम्भरीति विख्याता" अर्थ–दुर्गा कहती है कि हे देवता! जब तक पानी नहीं बरसे तब तक प्राण को बचाने वाले साग से सब को पालूंगी तब मेरा नाम शाकम्भरी होगा।

प्रा० शाकल–(सं० शाकल्य) पु० तिल, जौ, घी, शक्कर, फल आदि मिली हुई होम की सामग्री।

सं० शाकिनी–(शक्=बलवान्, या समर्थ होना) स्त्री० दुर्गा के साथ रहनेवाली, योगिनी, पिशाचिनी।

सं० शाक्त–(शक्ति) पु० शक्ति उपासक, देवी को पूजनेवाला, दुर्गापूजक।

सं० शाखा–(शाख्=फैलना) स्त्री० पेड़ की डाली, टहनी, डाल, २ वेद का विभाग, ३ भाँति, प्रकार, ४ भाग, हिस्सा।

सं० शाखामृग–(शाखा+मृग) पु० वानर, बन्दर।

सं० शाखी–क० पु० वानर, गवाही।

सं० शाटिका, शाटी (शट्=जाना, या सराहना) स्त्री० साड़ी, स्त्रियों के ओढ़ने का एक भांति का कपड़ा।

सं० शाठ्यता–भा० स्त्री० मूर्खता,

जाहिली, अहमकी ।

सं० शाणन—(शाण=पैनाना) भा० पु० तीक्ष्णकरना, शाणयंत्र, जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं ।

सं० शाणित—र्म० पु० तीक्ष्णकृत, पैनाया गया ।

सं० शाण्डिल्य—पु० शण्डिल मुनि का पुत्र, शक्तिशास्त्र कारक, बेल, एक अग्नि का नाम ।

सं० शात—पु० सुख, गु० २ छिन्न, कृश, दुर्बल, निशित ।

सं० शान्त—(शम्=ठंढा होना) गु० ठंढा, स्थिर, २ नम्र, ३ चुप, बंद, मुतमैअन (जैसा हवा) ४ साहित्य में नौ रसों में का एक रस ।

सं० शान्तन—पु० चन्द्रवंशी प्रतीप का पुत्र, भीष्मपितामह का पिता ।

सं० शान्ति-(शम्=ठंढा होना) स्त्री० ठंढाई, थिरता, चैन, सुख, काम क्रोध आदि को जीत लेना अर्थात् काम क्रोध आदि नहीं रखना ।

सं० शाप—(शप्=शाप देना) पु० शाप, धिक्कार, दुराशीष, बुरादुआ, कोसना, २ शपथ, सौगंद ।

सं० शाब्दिक—गु० शब्द से हुआ, वैयाकरण ।

सं० शामित—(शम्=शान्त होना) र्म० शान्त कियागया ।

सं० शाम्बरी—स्त्री० माया, करशमा, इन्द्रजाल, फ़रेबफ़न ।

सं० शाम्भव—(शम्भु) पु० शिव का भक्त, महादेव का उपासक, शिवको पूजनेवाला, गुग्गुल, गूगुर, कपूर, शम्भुपुत्र ।

सं० शाम्य—क० पु० क्षमायुक्त ।

सं० शायक—(शो=नाश करना, या तीखा करना अथवा शी=सोना, अर्थात् जिसके लगने से मनुष्य सो जाता अर्थात् गिर पड़ता है) पु० तीर, बाण, तलवार, खड्ग ।

प्रा० शायर—पु० शूर, बहादुर ।

सं० शायी—(शी=सोना) क० पु० सोनेवाला ।

सं० शारदी—(शरद्) स्त्री० गु० शरद्ऋतु की ।

सं० शारीरिक—(शरीर) गु० शरीर का, दुःखादिक ।

सं० शारङ्ग—पु० पपीहा, २ मृग, ३ गज, ४ भ्रमर, भौंरा, ५ मयूर, ६ धनुष, ७ मधुमक्खी, दीपक ।

सं० शार्ङ्ग—(शृङ्ग) गु० सींग का बना हुआ, पु० धनुष, २ विष्णु का धनुष, ३ एक पखेरूका नाम ।

सं० शार्दूल—पु० व्याघ्र, पक्षीभेद, पशुभेद, सिंह, श्रेष्ठ ।

सं० शाल—(शल्=जाना) पु० एक तरहकी मछली, २ एक पेड़का नाम ।

सं० शालग्राम—(शाल एक तरह

का पेड़, ग्राम समूह जहां बहुत से शाल वृक्ष हैं) पु० एक पहाड़ का नाम, २ उसी पहाड़ पर एक पत्थर होताहै जिसको हिन्दू विष्णु की मूरत मानकर पूजते हैं ।

सं० शाला–(शल्=जाना, या शाल् =बोलना या सराहना) स्त्री० घर, कमरा, स्थान, जगह ।

सं० शालार–पु० हाथी का नख, सोपान, सीढ़ी, पिंजरा ।

सं० शालि–(शल्=जाना)पु०धान।

सं० शालूर–पु० मंडूक, मेढक ।

सं० शाल्मली–(शाल्=जाना, या शाल्=सराहना) पु० सेमल का पेड़, २ एकद्वीपका नाम ।

सं० शावक–(शव्=जाना, या बदलना) पु० बच्चा, बालक ।

सं० शावर–(शवर) गु० शिव का बनाया हुआ मंत्र, पु० पाप, अपराध, २ लोध का पेड़ ।

सं० शाश्वत–(शश्वत्)क्रि० वि० लगातार, निरन्तर, २ नित, हमेशह, सदा ।

सं० शासन–(शास्=सिखाना, आज्ञा देना, या राज करना) पु० आज्ञा, हुक्म, २ राज करना, ३ दंड, सज़ा, ४ शिक्षा, सीख, नसीहत, हुकूमत ।

सं० शासनपत्र–पु० फर्मान ।

सं० शाशित–र्म्म० सिखाया गया, महकूम ।

सं० शाशिता, शास्ता– क० पु० हाकिम, शिक्षक ।

सं० शास्य–र्म्म० पु० शिक्षणीय, सिखाने योग्य, महकूम ।

सं० शास्ति–(शास्=सिखाना, आज्ञा देना, या राज करना) स्त्री० आज्ञा, २ राज करना, हुकूमत करना, ३ दंड, सज़ा ।

सं० शास्त्र–(शास्=सिखाना)पु० किसी देवता या मुनि का बनाया हुआ ग्रन्थ, पुस्तक, पोथी, पवित्र पुस्तक, (वेदान्त, न्याय, साङ्ख्य, मीमांसा पातञ्जल, और वैशेषिक आदि षट् शास्त्र) काव्य और कानून और और विद्याओं की पुस्तकों को भी शास्त्र कहते हैं (जैसे काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, शिल्पशास्त्र और अलंकारशास्त्र आदि) ।

सं० शास्त्रार्थ–(शास्त्र+अर्थ) पु० चर्चा, वादविवाद ।

सं०शास्त्रज्ञाता-क०पु०शास्त्री, पंडित।

सं० शास्त्री–(शास्त्र)पु० शास्त्र जाननेवाला पण्डित, २ ब्राह्मणों की एक पदवी ।

सं० शिंशपा–(शिशु=बालक, पा=पालना) पु० एक पेड़ का नाम ।

सं०शिक्य-पु०सिकहर, सींका, छींका ।

सं० शिक्षक—(शिक्ष्=सीखना, या सिखाना) क०पु० सिखानेवाला, पढ़ानेवाला, गुरु, अध्यापक, उपदेशक।

सं० शिक्षा—(शिक्ष्=सीखना या सिखाना) भा० स्त्री० सीख, सिखाई, तालीम, नसीहत, उपदेश, २ वेद का एक भाग, वेदांग।

सं० शिक्षापत्र—पु० वसीयतनामा।

सं० शिक्षाप्रकरण—पु० शिक्षा विभाग, सरिश्तातालीम।

सं० शिक्षित—(शिक्ष्=सीखना, या सिखाना) कर्म० पु० सीखाहुआ, पढ़ाहुआ, निपुण, प्रवीण।

सं० शिखर—(शिखा) पु० पहाड़ की चोटी, शृङ्ग।

सं० शिखा—(शी=सोना) स्त्री० चोटी, शिरके बीच के बाल, जो हिंदूलोग रखते हैं २ आग की ज्वाला।

सं० शिखी—(शिखा) पु० मोर, मयूर, २ आग, ३ एकपेड़ का नाम।

सं० शिञ्जा, शिञ्जिनी—स्त्री० रोदा, धनुष की डोरी।

सं० शिथिल—(श्लथ्=ढीला या दुबला होना) गु० ढीला, खुला, २ धीमा, सुस्त, आलसी, ३ दुबला, निबल, कमजोर।

सं० शिर, शिरस—(शॄ=नाश होना) पु० मस्तक, माथा, शिर, कपाल।

प्रा० शिरधरा—क० पु० जिम्मादार-वारिस।

[नाड़ी, नस।

सं० शिरा—(शॄ=नाशहोना) स्त्री०

सं० शिरोमणि—(शिरस्+मणि) स्त्री० शिर का गहना, शिर में पहनने का रतन, गु० उत्तम, सबसे बड़ा श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया।

सं० शिरोरुह—(शिरस्+रुह=जमना, निकलना) क० पु० बाल, केश।

सं० शिला—(शिल्=कण, कण=इकट्ठा करना, या चुनना) स्त्री० सिल, चट्टान, पत्थर, पाषाण, २ साफ और बराबर, पत्थर जिसपर लोढ़े से मसाला पीसाजाता है।

सं० शिलाजित, शिलाजीत—(सं० शिलाजतु शिला पहाड़ की चट्टान में पैदाहुई, जतु लाख, या लाल रंग की धातु) पु० शिलारस, कहते हैं कि पहाड़ों की चट्टानों का रस चूकर जम जाता है और पत्थर सा कड़ा होजाताहै उसको शिलाजीत कहते हैं और उसके खानेसे शरीरमें जोर आताहै।

सं० शिलीमुख—(शिली=तीखीनोक मुख=मुंह, जिसके मुंह पर तीखा फल लगा रहता है) पु० तीर, बाण, भ्रमर, भौंरा।

सं० शिलोच्चय—पु० पर्वत, पहाड़।

सं० शिल्प—(शिल्=चुनना, या शिल्प् कारीगरी का काम करना) पु०

कलविद्या, हुनर, गुण, कारीगरी।
सं०शिल्पशाला—स्त्री० कारीगरों का कारखाना।
सं०शिल्पक } शिल्पित } क० पु० कारीगर।
सं०शिव—(शी=सोना, या शो=नाश करना दुःख को, या प्रलय में सब सृष्टिको) पु० महादेव, महेश, २ मंगल, कल्याण, शुभ, सुख, ३ वेद।
सं०शिवपुरी—(शिव+पुरी) स्त्री० काशी, बनारस।
सं०शिवरात्री—(शिव+रात्री) स्त्री० शिवचतुर्दशी, फागुन बदी १४।
सं०शिवसेनानी—पु० स्वामिकार्तिकेय, कीर्तिमुख।
सं०शिवा—(शिव) स्त्री० पार्वती, उमा, दुर्गा।
प्रा०शिवाला—(सं०शिवालय, शिव+आलय) पु०शिवका मन्दिर।
सं०शिवि } शिबि } पु० एकराजाका नाम।
सं०शिविका } शिबिका } (शिव=सुख, अर्थात् जिसमें बैठने से सुख मिले, या शी=सोना जिसमें) स्त्री० पालकी, डोली। [छावनी।
सं०शिविर } शिबिर } पु०सैन्य निवासस्थान,
सं०शिशिर—(शश=उछल कर चलना, अर्थात् पत्तों का झड़ना) स्त्री० एकऋतु जो माघ और फागुन में रहती है।
सं०शिशु—(शा=पतला होना, या शिव=बढ़ना) पु०बालक, बच्चा।
सं०शिशुपाल—पु० चँदेरी का राजा, जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने मारा।
सं०शिष—(शिष्=अन्तहोना) भा० स्त्री० सिखाना, शिक्षा, उपदेश।
सं०शिश्न—पु० मेढ़्र, लिंग, पुरुषचिह्न।
सं०शिष्ट—(शास्=सिखाना) क्र्मं० सीखनेयोग्य, सभ्य, २ आज्ञाकारी, ३ अच्छा, उत्तम, भला, काफ़ी।
सं०शिष्टाचार—(शिष्ट+आचार) पु० अच्छाचलन, सन्मान, आदर, विनय, विनती।
सं०शिष्टि—स्त्री० आज्ञा, शासन, सज़ा।
सं०शिष्य—(शास्=सिखाना) पु० उपदेश्य, चेला, विद्यार्थी, छात्र, पढ़नेवाला, २ किसी धर्म को माननेवाला।
सं०शीकर—(शीक्=सींचना, या गीला करना) पु० जलकन, फुहारा, सरलद्रव्य, वायु।
सं०शीघ्र—(शीघ्=सूंघना) गु० उतावला, जल्द, फुर्तीला, क्रि०वि० तुरन्त, झटपट जल्दी से।
सं०शीघ्रगामी—(गम्=चलना) क० पु० जल्दी चलनेवाला।
सं०शीघ्रता—(शीघ्र) भा० स्त्री०

जल्दी, उतावली, फुर्ती।

सं०शीत—(श्यै=जाना) गु० ठंढा, सर्द, २ सुस्त, पु० जाड़ा, सर्दी, ठण्ढ ३ हिम, पाला।

सं०शीतकर—(शीत=ठंढी, कर=किरण) पु० चांद, २ कपूर।

सं०शीतकाल—(शीत+काल) पु० जाड़ा, सर्दी, हिमन्तऋतु।

सं०शीतज्वर—(शीत+ज्वर) स्त्री० जाड़ा, जाड़ेकी तप।

सं०शीतल—(शीत=ठंढ, ला=लेना) गु० ठंढा, सर्द।

सं० शीतलता—(शीतल) भा० स्त्री० ठंढाई ठंढापन।

प्रा०शीतलताई } (सं० शीतलता) भा० स्त्री० ठण्ढाई,
शीतलाई } ठण्ढापन।

सं०शीतला—(शीतल) स्त्री० देवी, माता, चेचक।

सं०शीतांशु—शीत=ठण्ढी, अंशु=किरण, जिसकी किरणें ठंढी हैं) पु० चांद, २ कपूर।

सं०शीताङ्ग—(शीत+अंग) पु० पक्षाघात, अर्द्धांग, एक बीमारी का नाम।

सं०शीर्ण—(श्री=मारना) गु० कृश [दुर्बल, शुष्क, सूखा।

सं०शीर्ष—(शृ=नाशहोना) पु० शीस, सिर, माथा, मस्तक।

सं०शील—(शील्=सोचना, या अभ्यास करना) पु० अच्छा स्वभाव, अच्छा चाल चलन।

सं०शीलवान्—(शील+वान्) गु० अच्छे स्वभाववाला, जिसका चाल चलन अच्छा हो, सुशील, नेक चलन।

सं०शीलचक्षु—गु० मुरौवतदार।

सं०शीलित—कर्म० अभ्यस्त, रक्त, रत, रंजित।

प्रा०शीशम—(सं० शिंशपा) पु० एकपेड़ औरउसकी लकड़ीकानाम।

प्रा०शीस } (सं० शीर्ष) पु० शिर,
सीस } माथ, मस्तक, कपाल।

सं०शुक—(शुक्=जाना, या शुभ्=चमकना) पु० तोता, सूगा, सूआ-२ शुकदेवमुनि जिन्होंने राजा परीक्षितको श्रीमद्भागवत सुनाई।

सं०शुक्ति—स्त्री० सीपी, सूती, चक्षु, रोग, अर्शरोग।

सं०शुक्र—(शुच्=पवित्र होना, या सोचना) पु० छठा ग्रह, २ एक मुनिका नाम जो भृगु ऋषि का बेटा और राक्षसों का गुरु था, ३ आग, अग्नि, ४ वीर्य, बीज।

सं०शुक्रवार—(शुक्र+वार) पु० छठादिन, शुक्रवार, जुमा।

सं०शुक्राचार्य्य—(शुक्र+आचार्य्य)

पु० एक मुनिका नाम जो राक्षसों का गुरु था।

सं० शुक्ल-(शुच्=साफ होना) गु० धौला, उजला, सफेद, श्वेत, पु० धौलारंग, श्वेतवर्ण।

सं० शुक्लपक्ष-(शुक्ल+पक्ष) पु० उजाला पक्ष, सुदी।

सं० शुचा-भा० स्त्री० पवित्रता, सफाई।

सं० शुचि-(शुच्=पवित्र होना, साफ होना) स्त्री० पवित्रता, सफाई, शुद्धता, गु० साफ, स्वच्छ, शुद्ध, धौला सफेद।

सं० शुण्ड-पु० सूंड़।

सं० शुद्ध-(शुध्=साफ होना, या करना) गु० पवित्र, साफ, स्वच्छ, सफेद, उज्ज्वल, २ निर्दोष, ३ सही।

सं० शुद्धता-(शुद्ध) भा० स्त्री० पवित्रता, सफाई, स्वच्छता।

सं० शुद्धि-स्त्री० पवित्रता, शुद्धता, शोधन, सफाई।

सं० शुद्धिपत्र-पु० मुआफीनामा, साफीनामा।

सं० शुन्य } (श्वि=बढ़ना) गु० खाली,
शून्य } स्त्री० या पु० बिन्दी, सिफर, २ आकाश, आस्मान।

सं० शुभ-(शुभ्=चमकना) गु० अच्छा, भला, कल्याणकारी, मंगलदायक।

सं० शुभग-(शुभ=भला, गम्=जाना) गु० कल्याणकरनेवाला, सुखदायी, मंगलीक, २ सुन्दर।

सं० शुभगता-भा० स्त्री० मनोहरता, सुन्दरता, उम्दगी।

सं० शुभचिन्तक-क० पु० भला चाहनेवाला, खैरख्वाह।

सं० शुभचिन्तकता-भा० स्त्री० भलाई, खैरख्वाही।

सं० शुभलग्न-(शुभ+लग्न) पु० अच्छासमय, मंगलीक समय।

सं० शुभाकांक्षी-क० पु० मंगलाभिलाषी, भलाई चाहनेवाला, खैरख्वाह।

सं० शुभ्र-(शुभ्=चमकना) गु० उजला, सफेद, धौला, निर्मल, २ चमकीला, चमकदार, ३ पु० धौला रंग, श्वेतवर्ण।

सं० शुम्भ-(शुम्भ्=मारना) पु० एक राक्षसकानाम जिसको दुर्गाने मारा।

सं० शुल्क-पु० चुंगी, फीस।

सं० शुश्रूषक-(श्रु=सुनना) क० पु० सेवक, परिचारक, टहलू।

सं० शुश्रूषा-स्त्री० सेवा, टहल।

सं० शुष्क-(शुष्=सूखना) गु० सूखा, निरस, खुश्क।

सं० शुष्ण-पु० सूर्य, अग्नि, वायु, पराक्रम, शोक, प्रकाश, दीप्ति, शोभा।

सं० शूकर-(शू=ऐसा शब्द, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० सुअर, वराह।

सं० शूद्र-(शुच्=साफ करना, जो बड़ोंको नहलाते, धुलाते हैं) पु० चौथे वर्ण के लोग जिन का काम नौकरी करना है।

सं० शून्य-गु० निर्जनस्थान, आकाश, बिन्दु, सिफ़र, अभाव, असम्पूर्ण, ऊन, तुच्छ, उदासीन।

सं० शून्याकार-गु० उदासीन की सूरत, खालीसा।

सं० शूर-(शूर्=बहादुरी करना) पु० वीर, सूरमा, रावत, बहादुर, साहसी, २ शूरसेन, जो श्रीकृष्ण का दादा था, ३ सिंह, ४ सूर्य, ५ सुअर, ६ साल का पेड़।

सं० शूरण-पु० जमीकन्द, वर्तुलाकारमूल।

सं० शूरता (शूर) भा० स्त्री० बहादुरी, वीरता, शूरमापन।

सं० शूरसेन-(शूर्=बहादुर, सेन=सेना) पु० मथुरा के एक राजाका नाम, २ मथुरा। [छाज।

सं० शूर्प-(शूर्प्=मापना) पु० सूप,

सं० शूर्पनखा-(शूर्प+नख, अर्थात् जिसके नख सूप ऐसे हैं) स्त्री० रावण की बहिन।

सं० शूल-(शूल्=बीमार होना) पु० पीड़ा, दुःख, रोग, २ लोहेका तीखा कांटा, त्रिशूल।

सं० शृगाल-(असृज्=लोहू, ला=लेना, यहां असृज् के अ का लोप होजाताहै) पु० सियार, गीदड़।

सं० शृङ्खला-(शृ=नाशकरना) स्त्री० सांकल, संकली, सिकरी, २करधनी।

सं० शृङ्ग-(शृ=नाश करना) पु० सींग, २ शिखर, पहाड़ की चोटी, पहाड़ के ऊपर का भाग, ३ चिह्न, ४ बड़ाई, प्रभुत्व, प्रधानता, ५ कामदेव का बढ़ना।

सं० शृङ्गवेर-पु० श्रीरामचन्द्रके मित्र गुह निषाद के नगरका नाम।

सं० शृङ्गार (शृङ्ग=कामदेव का अर्थात् प्यार का बढ़ना, और ऋ=जाना, जिससे मन में काम बढ़ता है) पु० साहित्य विद्यामें एक रस का नाम, २ शोभा, सिंगार, गहना, भूषण-१६ शृङ्गार-

दो० अंग शुची मज्जन वसन,
मांग महावर केश।
तिलक भाल तिलचिबुक में,
भूषण मेंहदी वेश।
मिस्सी काजल अरगजा,
बीरी और सुगन्ध।
पुष्प कली युत होयकर,
तब नव सप्तप्रबन्ध।

शरीर का मैल उतारना, २ न्हाना, ३ साफ कपड़े पहनना, ४ काजल लगाना, ५ अलता से हाथ पैर रचाना, ६ बाल सँवारना, ७ सिंदूर से

मांग भरना, ८ लिलाड़ में केशर चन्दन की खौरी या तिलक निकालना, ९ ठुड्डी पर तिल बनाना, १० मेंहदी लगाना, ११ देह में अरगजा या इतर आदि सुगन्धित चीज लगाना, १२ गहना पहनना, १३ फूलोंकी माला आदि पहनना, १४ पान चबाना, १५ दांत रंगना, १६ होठों को लाल करना ।

सं० शृङ्गी—(शृंग) गु० सींगवाला, पु० एक ऋषिका नाम जो लोमश ऋषिका चेला था जिसके शाप से राजा परीक्षित को तक्षक सांप ने डसा ।

सं० शेखर—(शिख्=जाना) पु० फूलोंकी माला जो मुकुट के ऊपर पहनते हैं, मुकुट, किरीट, २ शिखा, चोटी ।

सं० शेष—(शिष्=बाकी रहना) पु० अनन्त, सर्पराज, सांपों का राजा जिस के १००० फण बतलाते हैं और जिसपर विष्णु सोते हैं और जिसके एक फण पर हिंदूलोग पृथ्वी को ठहरी बतलाते हैं और लक्ष्मण जी और बलदेव जी को शेषजी के अवतार कहते हैं गु० बाकी, बचाहुआ ।

सं० शेषशायी—(शेष=सांपोंका राजा, शायी=सोनेवाला, शी=सोना) पु० विष्णु भगवान् जो शेषजी पर सोते हैं ।

सं० शैल—(शिला) पु० पहाड़, पर्वत, गु० पहाड़ी, पथरीला ।

सं० शैलराज—पु० हिमालय ।

सं० शैलशिबिर-पु० समुद्र, पर्वतीयपुर ।

सं० शैलाट—(शैल+अट्=घूमना) पु० सिंह, किरात, श्वेत कांच ।

सं० शैव—(शिव) पु० शिवका भक्त, शिवको पूजनेवाला, गु० शिव का ।

सं० शैवाल—पु० सिवार ।

सं० शोक—(शुच्=चिंता करना) पु० शोच, चिन्ता, फ़िक्र, दुःख, खेद, सन्ताप, पछतावा ।

सं० शोकाकुल, शोकार्त्त—(शोक=शोच, आकुल या आर्त्त=घबराया हुआ) गु० शोच से व्याकुल, विकल, दुःखी ।

सं० शोकापह-(शोक+अप+हन्=नाश करना) क० पु० शोकनाशक, शोकहारी ।

सं० शोचक—(शुच्+अक, शुच्=चिन्ता करना) क० पु० शोच करनेवाला, फ़िक्रमन्द ।

सं० शोचनीय—र्म० शोचनेयोग्य ।

सं० शोणित—(शोण्=लाल होना) पु० लोहू, रक्त, रुधिर, २ कुंकुम, गु० लाल ।

सं० शोधक-क०पु०शुद्धकरनेवाला।

सं० शोधित-कर्म० शुद्ध की हुई।

सं० शोधन-(शुध्=पवित्र करना) पु० पवित्र करना, शुद्ध करना, २ सही करना।

सं०शोधनी-ण०स्त्री०बढ़नी,झाड़ू।

सं० शोधनीय-कर्म० शोध्य, शोधने योग्य, इस्लाहतलब।

सं०शोभन-(शुभ्=चमकना) भा० श्रेष्ठ, उत्तम, उमदा।

सं० शोभा-(शुभ्=चमकना) स्त्री० सुन्दरता, खूबसूरती, छवि, कांति, २ चमक, झलक।

सं० शोभायमान-क० पु० सुशोभित, खूबसूरत।

सं० शोभित-(शुभ्=चमकना) गु० सुन्दर, शोभायमान, चमकीला।

सं० शोषक-(शुष्+अक, शुष्=सोकना) क०पु० रसाकर्षक, वायु, सूर्यादि।

सं० शौच-(शुचि) भा० पु० पवित्रता, शुद्धता, सफ़ाई, स्नान आदि।

सं०शौण्डिक-क० पु० कलवार।

सं० शौर्य्य-(शूर) भा० पु० शूरमापन, बहादुरी, वीरता।

सं०शौल्किक-क०पु०दारोगा चुंगी।

सं० श्मशान-(श्मन्=मुर्दा, और शी=सोना जहां मुर्दा सुलाया जाता है, अर्थात् जलाया जाता है) पु० मसान, मरघट, मुर्दाघाट।

सं० श्याम-(श्यै=जाना) गु० काला काला, नीला मिला हुआ, पु० श्रीकृष्ण का नाम।

सं० श्यामता-(श्याम) भा० स्त्री० कालासा, कालापन, कृष्णता।

सं० श्यामल-(श्याम=कालारंग, ला=लेना) गु० काला, श्यामवर्ण।

सं० श्यामा-(श्याम) स्त्री०काली। दुर्गा, देवी, २ एक काले रंगकी गानेवाली चिड़िया, षोड़श वर्ष की स्त्री, सोलह वर्ष की औरत, पीपरि, काले रंग की स्त्री।

सं०श्येन-पु० शाहीन, बाजपक्षी।

सं० शृङ्खला-स्त्री० जंजीर, सांकरि बिलाई, भेलन।

सं० श्रद्धधान-क० पु० श्रद्धायुक्त, मुअतकिद।

सं०श्रद्धा-(श्रत्=विश्वास, धा=रखना) स्त्री० विश्वास, भरोसा, भक्ति गुरु और शास्त्र के वचन में पक्का भरोसा, २ आदर, ३ इच्छा, चाह, ४ बल, ताकत।

सं०श्रम-(श्रम्=मिहनत करना) स्त्री० वा पु० मिहनत, थकावट, क्लांति, दौड़ धूप, कष्ट, परिश्रम, २ तप, तपस्या।

सं० श्रमजीवी-क० पु० मजदूर, भारवाहक।

सं०श्रमित-क०पु०थकित,थकाहुआ।

सं० श्रमी—क० पु० मेहनती।

सं० श्रय / श्रयण—(श्रि=सहारा लेना) पु० अवलम्ब, सहारा, भरोसा।

सं० श्रवण—(श्रु=सुनना) पु० कान, सुनने की इंद्री, २ सुनना।

सं० श्रवणा—(श्रु=सुनना) स्त्री० बाईसवां नक्षत्र।

सं० श्राद्ध—(श्रद्धा) पु० पितरों को शास्त्र की रीतिसे जल और पिंडदेना।

सं० श्रान्त—(श्रम्=थकना) क० पु० क्लान्त, थका हुआ। [वाई।

सं० श्रान्ति—भा० स्त्री० थकावट, थक-

प्रा० श्राप—(सं० शाप) पु० धिक्कार, दुराशिष, बददुआ।

सं० श्रावक—(श्रु=सुनना अपने धर्म को) पु० जैनी, जिन मत को माननेवाला, २ श्रोता, सुननेवाला।

सं० श्रावण—(श्रवण एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है) पु० इसी से एक महीने का नाम सावन हुआ। [की पूनौं, राखी।

सं० श्रावणी—(श्रावण) स्त्री० सावन

सं० श्री—(श्रि=सेवा करना जो विष्णु की सेवा करती है, या जिस को सब संसार सेवता है) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, २सम्पदा, धन, दौलत, ३ शोभा, सुन्दरता, यह शब्द देवताओं और बड़े आदमियों और पवित्र पोथियों आदि के साथ बड़ाई और मान के लिये लगाया जाता है और कभी कभी दो श्री अथवा पांच छः आदि १०८ श्री तक लिखते हैं, जैसे श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण, श्रीयज्ञदत्त पण्डित श्रीभागवत पुराण आदि—यहां मत् या युक्त, या युत, शब्द छिपा हुआ है और कभी २ इन शब्दों के साथ भी बोलते हैं, जैसे श्रीमान्, श्रीयुत, श्रीयुक्त आदि।

सं० श्रीखण्ड—(श्री=शोभा, खण्ड=टुकड़ा) पु० चन्दन।

सं० श्रीचक्र—(श्री+चक्र) पु० त्रिपुरा, सुन्दरी, देवीकी पूजाका यंत्र।

सं० श्रीनिवास—(श्री=लक्ष्मी, निवास=जगह, जो लक्ष्मी के पास रहते हैं या जिनके पास लक्ष्मी रहती है) पु० विष्णु, भगवान्।

सं० श्रीपति—(श्री+पति) पु० विष्णु, भगवान्।

सं० श्रीफल—(श्री+फल) पु० नारियल, २ बिल्व।

सं० श्रीमत् / श्रीमान् / श्रीमन्त—(श्री=शोभा, मत्=वाला) गु० भाग्यवान्, प्रतापी, धनवान्, श्रीयुत।

सं० श्रीयुक्त } (श्री=शोभा, लक्ष्मी,
श्रीयुत } युक्त वा युत मिला हुआ) गु० भाग्यवान्, धनवान्, श्रीमान्।

सं० श्रीवत्स—(श्री=शोभा, वत्स= चिह्न) पु० विष्णु।

सं० श्रुत—(श्रु=सुनना) म्र्मे० पु० सुनाहुआ, समझाहुआ, पु० शास्त्र।

सं० श्रुति—(श्रु=सुनना) स्त्री० वेद, २ कान, ३ सुनना।

सं० श्रुवा } (श्रु=चूना या टपकना)
स्रुवा } स्त्री० होमका चाटू, खैरका बनाहुआ चम्मच हाथके आकारका।

सं० श्रेण } (श्रि=सेवा करना)
श्रेणी } स्त्री० पांत, पंक्ति, कतार।

सं० श्रेष्ठ—(प्रशस्य शब्द को श्र हो जाता है प्र=बहुत, शंस्=सराहना) गु० बहुत अच्छा, सब से अच्छा, उत्तम, सब से बड़ा।

सं० श्रेष्ठाचार—(श्रेष्ठ + आचार) पु० उत्तम रीति उम्दा तरीक़ा।

सं० श्रोता—(श्रु=सुनना) क० पु० सुननेवाला, सुनवैया।

सं० श्रोत्र—(श्रु=सुनना) पु० कान, सुनने की इन्द्रिय।

सं० श्रोत्रिय—क० पु० वैदिक, वेद पाठक, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला।

सं० श्लाघा—(श्लाघ्=सराहना) स्त्री० सराह, प्रशंसा, तारीफ़, २ चाह, इच्छा।

सं० श्लाघ्य—म्र्मे० प्रशंसा योग्य, क़ाबिलतारीफ़।

सं० श्लेष—(श्लिष्=मिलना) पु० मिलाव, संयोग, २ एक अलंकार जिस में एक शब्द के बहुत अर्थ होते हैं, जैसे, "कीकरपाकर तार, जामन फलसा आमिला"
"सेव कदम कचनार,
पीपळ रची तून तज"
इस में बहुत से पेड़ों के नाम दिखाई देते हैं पर इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने तुझ पर कृपा की कि जिस को तू चाहती थी सोही आमिला, सो हे कची स्त्री! अब उसके पैरों की तू सेवा कर और अब अपने प्यारे को एक पल भर भी मत छोड़। [जुकाम।

सं० श्लेष्मा—पु० कफ़, खखार,

सं० श्लोक—(श्लोक=चढ़ना, या इकट्ठा करना) पु० चार पद का संस्कृत छंद, २ यश, कीर्ति, कीर्ति, नामवरी।

सं० श्वपच—(श्वन्=कुत्ता, पच्=पकाना, अर्थात् कुत्तेको खानेवाला) पु० चंडाल।

सं० श्वशुर—(शु=जल्दी, अस=पाना) पु० ससुर, पति या पत्नी का बाप।

सं० श्वश्रू—(श्वसुर) स्त्री० सास, ससुर की लुगाई।

सं० श्वस्, श्वः } अव्य० आगामि दिन, आनेवाला दिन।

सं० श्वान—(श्वि=बढ़ना, या जाना) पु० कुत्ता, कुक्कुर।

सं० श्वास—(श्वस्=सांस लेना) पु० सांस, प्राण, दम।

सं० श्वेत—(श्वित्=धौला होना) गु० धौला, सफ़ेद।

सं० श्वेतद्वीप—(श्वेत+द्वीप) पु० वैकुण्ठ, २ एक द्वीप का नाम।

(ष)

सं० ष—पु० केश, हृदय, गु० श्रेष्ठ, विज्ञ।

सं० षट्—(षष्) गु० छः ६।

सं० षट्ऊर्म्मि-(बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसःस्मृतौ। शोकमोहौ शरीरस्य जरामृत्यू षडूर्म्मयः) प्राण को भूख, व प्यास व मनकी स्मृति में शोक, मोह व शरीर को जरा और मृत्यु ये छःऊर्म्मियां होती हैं।

सं० षट्कर्म—(षट्+कर्म्म) पु० स्नान, संध्या, जप, तर्पण, देवता का पूजन आदि, (१ वेद पढ़ना, २ दूसरे को पढ़ाना, ३ यज्ञ करना, ४ दूसरे को कराना, ५ दान देना, और ६ दान लेना ये ब्राह्मण के छःकाम हैं)।

सं० षट्कोण (षट्+कोण) पु० छःकोना खेत छः खूंट खेत, २ वज्र।

सं० षट्पद—(षट्+पद) पु० भौंरा।

सं० षट्प्रयोग—१ शान्ति, २ वशीकरण, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण, ५ उच्चाटन, ६ मारण।

सं० षट्रसभोजन—(षट्=छः, रस=स्वाद, भोजन=खाना) पु० मीठा, खट्टा, खारा, कडुआ, कसैला, और तीता, इन छः रसों से मिलाहुआ खाना।

सं० षट्वदन, षडानन } (षट्=छः, वदन या आनन=मुंह) पु० कार्त्तिकेय, महादेव का बेटा।

सं० षट्वर्ग—पु० काम, क्रोध, क्षोभ, मोह, मद, मात्सर्य्य।

सं० षट्शास्त्र—(षट्+शास्त्र) पु० न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, और पातञ्जल, ये छः शास्त्र इनको षट्दर्शन भी कहते हैं दर्शन शब्दको देखो)।

सं० षड़ङ्ग—(षट्+अंग) पु० शरीर के छः भाग, जैसे दो हाथ, दो पांव, शिर, और कमर, २ वेद के छः अंग, (जैसे १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६ छन्द, वेदांग शब्द को देखो)।

सं० षडङ्घ्रि—(षट्=छः अंघ्री=पांव) पु० भौंरा, भ्रमर।

सं० षण्ड (षण+ड) कमलादिकोंका समूह, सांड़।

सं० षण्ढ–पु० नपुंसक, हिजड़ा, मुखन्नस ।

सं० षष्टि–(षष्=छः, पर आगे ति-प्रत्यय के आने से उसका अर्थ दश गुना होता है) गु० साठ ।

सं० षष्ठ–(षष्) गु० छठा ।

सं० षष्ठी–(षष्)स्त्री०छठ,छठी तिथि, षष्ठीदेवी ।

सं० षोडश–(षट्=छः, दश=दस) गु० सोलह, १६ ।

सं० षोडशदान–(षोडश+दान) पु० सोलह चीजों का दान, जैसे १ धरती, २ आसन, ३ पानी, ४ कपड़ा, ५ दीपक (या दीपक के लिये तेल) ६ अनाज, ७ पान,८ छत्र, ९ सुगन्धित चीज, १० फूलों की माला, ११ फल, १२ सेज, १३ खड़ाऊं, १४ गाय, १५ सोना, १६ रूपा या चांदी ।

सं० षोडशभुजा–(षोडश्=सोलह भुजा=हाथ) स्त्री० सोलह हाथकी दुर्गा, देवी की मूरत ।

सं० षोडशसंस्कार या कर्म (१ गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमन्त, ४ जातकर्म, ५ नामकरण, ६ निष्क्रमण, ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकर्म, अर्थात् मुण्डन, ९ कर्णवेध, १० उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत, ११ वेदारंभ, १२ समावर्तन अर्थात् ब्रह्मचर्य्य, १३ विवाह, १४ गृहाश्रम १५ द्विरागमन, १६ वानप्रस्थ, १७ महावाक्यपरिसमाप्ति, १८ संन्यासविधि, १९ सर्वसंस्कार होम विधि, २० मृतककर्म ।

सं० ष्णुषा–स्त्री० बहू, पुत्रभार्य्या जैसे "स्नुषेयं तवकल्याण" ।

(स)

सं० स–(सो=नाश करना) पु० विष्णु, २ सांप, ३ शिव, ४ पखेरू, भृगु, ५ समुच्च० साथ, सहित, समेत (जैसे सजीव, जीवसहित) २ बराबर, वही, एकही (जैसे सधर्म एकही धर्म का) ३ साम्हन ।

सं० संक्षिप्त–क्र्म०कम की हुई, मुख़्तसिर की हुई ।

सं० संक्षेप–(सम्=साथ, क्षिप्=फेंकना) पु० सारअंश, सारभाग, मुख़्तसर ।

प्रा० संगत–(सं० संगति) स्त्री० मेल, साथ सोहबत, २ वह जगह जहां सिख अपने धर्म की रीति रसम करते हैं ।

प्रा०संचना } सांचना } (सं० सञ्चयन, सम्=अच्छीतरह से, चि=इकट्ठा करना) क्रि०स०इकट्ठाकरना ।

सं० संज्ञा–(सम्=अच्छी तरह से, ज्ञा=जानना) स्त्री० इस्म, नाम, चीज का नाम, २ बुद्धि, ३ चेतना, ४ गायत्री, ५ सूर्य की स्त्री ।

प्रा० संजोवना—(सं० संयोजन, सम्, युज्=मिलना) क्रि० स० तैयार करना।

सं० संन्यासी-संन्यासीशब्दकोदेखो।

प्रा० संपत—(सं० सम्पद्) स्त्री० सम्पदा, धन, दौलत।

प्रा० संभलना—क्रि० अ० थंभना, ठहरना, सहारापाना, खड़ा होना, गिरते २ थंभजाना।

प्रा० संभालना, संभारना—(सं० सम्भारण सम, भृ=पकड़ना) क्रि० स० थांभना, पकड़ना, सहारा देना, मदद देना, सहायता देना।

सं० संयम—(सम्=अच्छीतरह से, यम्=रोकना) भा०पु० नेम, नियम, व्रत के दिन कितनी चीज़ों के खाने पीने की रुकावट, इन्द्रियनिग्रह, परहेज, बन्धन।

सं०संयमी-क०पु०मुनि,इन्द्रियरोधक।

सं० संयुक्त—(सम्=साथ युज्=मिलना) गु० मिलाहुआ, लगाहुआ, जुड़ाहुआ।

सं० संयुग—(सम्=साथ,युज्=मिलना) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम।

सं० संयुत—(सम्,यु=मिलना) कर्म० मिलाहुआ, लगाहुआ।

सं० संयोग—(सम्, युज्=मिलना) पु० मेल, मिलाप, सम्बन्ध, २ दैव योग, संयोग, इत्तिफ़ाक़।

सं० संयोजित—कर्म० मिलायागया।

सं० संरम्भ—(सम्, रभ्=कोसना)पु० कोप, आक्रोश, वेग।

सं० संराधन—(सम्,राध=सेवाकरना) भा० पु० सब प्रकार से सेवाकरना, चिन्तन करना।

सं०संराव—(सम्+रु=बोलना) पु० ध्वनि, शब्द।

सं० संलग्न—(सम्,लग्=मिलना) क० पु० मिलित, संयुक्त।

सं०संलाप—(सम्,लप्=कहना) भा० पु० परस्पर कहना, बाहमगुफ़्तगू करना।

सं० संवत्—(सम्, वय्=जाना) पु० विक्रमादित्य राजाका चलायाहुआ साल, बरस, सन्।

सं० संवत्सर—(सम्+वत्सर) पु० बरस, संवत्, साल, सन्।

सं० संवाद—(सम्,वद्=कहना) पु० बात चीत, चर्चा, प्रसंग, कथा, संदेश=संदेशा, समाचार।

प्रा० संवारना—क्रि० स० सजाना, सुधारना, सिंगारना, तैयार करना।

सं० संशय—(सम्, शी=सोना, पर सम्=उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ संदेह करना होजाता है) पु० संदेह, शक।

सं० संशयात्मन्-पु० संदिग्ध अन्तःकरण, संशयात्मा, अस्थिरचित्त, डामाडोल मन।

सं० संशोधन-(शुध्=शुद्ध करना) भा० पु० संशुद्धि, नजरसानी, दुबारा देखना, ध्यान से देखना।

सं० संसर्ग-(सम्=साथ, सृज्=पैदा होना) पु० संगत, सोहबत, सम्बन्ध, मेल।

सं० संसार-(सम्=साथ, सृ=जाना) पु० जगत्, जग, दुनिया।

सं० संसारी-(संसार) गु० संसार का, दुनियाका, लौकिक, दुनियावी।

सं० संसृति-(सम्=साथ, सृ=जाना) स्त्री० संसार, जगत्, आवागमन।

सं० संस्कार-(सम्=शुद्ध, कृ=करना) पु० पवित्रता, सफाई, शुद्ध करनेकी रीति, २ मरम्मत, ३ प्रारब्ध।

सं० संस्कृत-(सम्=शुद्ध, कृ=करना) गु० अच्छी भांति से सुधारा हुआ, उत्तम, पवित्र, पु० एक बोली जिसको हिंदू पवित्र समझते हैं और देववाणी अर्थात् देवताओं की बोली कहते हैं और जिस में हिंदुओं के वेद शास्त्र लिखे हुए हैं और इस बोली का व्याकरण और सब बोलियों से बहुत पूरा और अच्छा है।

सं० संहार-(सम्, हृ=लेना, पर सम्=उपसर्ग के साथ आनेसे अर्थ नाश करना होता है) पु० नाश, विनाश, २ प्रलय, संसार का नाश, ३ एक नरक का नाम, ४ एक भैरव का नाम।

प्रा० संहारना-(सं० संहारण) क्रि० स० नाश करना, मार डालना।

सं० संहिता-(सम्=अच्छी भाँतिसे, धा=रखना) स्त्री० मनुआदि आचार्यों के बनायेहुये धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास, आदि, कर्मकाण्ड, वेदकाभाग।

प्रा० सकट, सगड़-(सं० शकट) पु० गाड़ी, छकड़ा।

प्रा० सकत, सगत-(सं० शक्ति) स्त्री० जोर, बल, ताकत, (शक्ति शब्द को देखो)।

प्रा० सकना-(सं० शक्=समर्थहोना) क्रि० समर्थ होना, किसी काम के करने का बल रखना।

प्रा० सकरा, संकड़ा-(सं० संकीर्ण) गु० तंग, संकेत, छोटा।

सं० सकर्म्मक-(स=साथ, कर्म=कर्मकारक) पु० ऐसी धातु अथवा क्रिया जिसमें कर्म हो, जैसे खाना, पीना, लेना, देना आदि।

सं० सकल-(स=साथ, कला=अंश, कल्=गिनना) गु० सब, सारा, सिगरा, पूरा, संपूर्ण, समस्त, तमाम।

सं०सकाम-(स=साथ,काम=इच्छा) गु० कामना सहित, चाहनेवाला, २ सफल ।

प्रा० सकार-(सं० सकाल) पु० सवेरा, भोर, प्रभात, प्रातःकाल ।

प्रा० सकारना-(सं० स्वीकरण) क्रि० स० सही करना, मानना, अंगेजना, मंजूर करना ।

सं० सकाश-धि०समीप, निकट,पास।

प्रा० सकुचना-(सं० सङ्कोचन, सम् =साथ,कुच्=सिकुड़ना) क्रि० अ० लजाना, शर्माना, संकोच करना, २ डरना । [बहु,एकदफ़अ ।

सं० सकृत्-अव्य० एकबार, एकमर्त्त-

प्रा० संकेत-गु० सकड़ा, तंग, छोटा।

प्रा० सकोड़ना-(सं०सङ्कोचन) । क्रि० अ० सिमटना, सिकुड़ना, २ क्रि०स०पीछे खेंचलेना,समेटलेना।

सं०सखा-(स=बराबर, ख्या=कहलाना) पु० मित्र, दोस्त, साथी, बन्धु, संगी ।

सं० सखी-(सखा) स्त्री० सहेली, सथिनी, संगिनी, आली ।

सं० सगर-(स=साथ, गर=विष, ज़हर, जो ज़हरके साथ पैदा हुआ) पु० अयोध्या के एक राजा का नाम जिससे समुद्र का नाम सागर हुआ, गु० ज़हरीला, विषैला ।

सं०सगा-(सं० स्वकीय,स्व=अपना) गु० अपना,संबन्धी,समधी,नातेदार, रिश्तेदार-सगा भाई=अपना भाई, एक बाप का बेटा ।

प्रा० सगाई } (सं०स्वकीयता, स्त्री०
सगावत } भाई चारा, नाता,अपनायत, रिश्ता, २ मंगनी, निस्बत, ३ नीच जात की लुगाई का दूसर ब्याह ।

सं० सगुण-(स+गुण) गु० गुण सहित, रजोगुण,सतोगुण,तमोगुण, सहित ।

सं० सघन-(स+घन) गु० गहरा, घना, गहन ।

सं० सङ्कट-(सम्=साथ,कट्=घेरना) पु० दुःख, कष्ट, आपदा, विपत्, तकलीफ़, आफ़त ।

सं० सङ्कर-(सम्=मिला हुआ, कृ= फैलाना) पु० मिली हुई जात,और जातके पुरुष से और जात की स्त्री में पैदाहुआ मनुष्य,दोगला,वर्णसंकर, खिचड़ी, दोजातका ।

सं० सङ्कर्षण-(सम्, कृष्=खींचना) पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई, बलदेव जो एक मा देवकी के गर्भ से गिर कर दूसरी मा रोहिणी के पेटसे जन्म लिया इस लिये ऐसा नाम हुआ ।

१ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंममेतिरामायणे रामवाक्यम् ॥

सं० सङ्कलन—(सम्, कल=गिनना) पु० जोड़, जोड़ना ।

सं० सङ्कलित—र्म्म० जोड़ा हुआ, जमा, संगृहीत ।

सं० सङ्कल्प—(सम्=साथ, कृप्=समर्थ होना) पु० मन की इच्छा, कामना, मनोरथ, २ प्रतिज्ञा, नियम, नेम, प्रहर । [दीहुई ।

सं० सङ्कल्पित—र्म्म० दत्त, अभिप्रेत,

सं० सङ्काश—गु० सदृश, समान ।

सं० सङ्कीर्ण—(सम्=साथ, कॄ=बिखरना) गु० बहुत मनुष्यों का मिलाव, भीड़ भाड़, घनाघन, तंग ।

सं० सङ्कीर्णता—भा० स्त्री० तंगी, सकराई, कोताही । [यशगाना ।

सं० सङ्कीर्तन—भा० पु० वर्णन करना,

सं० संकुल—(सम्=खूब, कुल=इकट्ठा होना) गु० खूब भरा हुआ, बहुत आदमियों या जीवों से भरा हुआ ।

सं० संकेत—(सम्, कित्=जानना) पु० सैन, इशारा, चिह्न, २ वचन ।

सं० सङ्कोच—(सम्, कुच=सिकुड़ना) पु० लाज, शर्म, २सिमटाव, तकल्लुफ़।

सं० सङ्कोचन—भा० पु० लपटाव, सिकुरना, यंत्रण ।

सं० सङ्कोचित } संकुचित } क० सकुचा हुआ सिकरा हुआ, लज्जित ।

सं० सङ्कोची—क० पु० शर्मिन्दा, पशोपेश करनेवाला, दब्बू, लज्जालु ।

सं० संक्रम-(क्रम=जाना) पु० दुर्गमार्ग, किला की राह, आक्रमण, हिसार, घिराव, जलबाँध ।

सं० संक्रमण—भा० पु० संक्रान्ति, पर्य्यटन, राशियों का बदलना ।

सं० संक्रान्त—पु० मेल, मिलाप ।

सं० संक्रान्ति (सम्=साथ, क्रम्=जाना) स्त्री० सूर्य अथवा और ग्रहों का एक राशिसे दूसरी राशि पर जाना ।

सं० संक्रामक—क० पु० पर्य्यटक, घूमनेवाला ।

सं० सङ्ख्या(सम्, ख्या=प्रसिद्ध होना) स्त्री० गिन्ती, शुमार ।

सं० सङ्ग—(सम्=साथ, गम्=जाना, अथवा सञ्ज्=मिलना) पु० मेल, सम्बन्ध, संयोग, साथ ।

सं० सङ्गति (सम्=साथ, गम्=जाना) स्त्री० मेल, साथ, सङ्गत, सोहबत ।

सं० संगम—(सम्=साथ, गम्=जाना) पु० मिलना, मेल, मिलाव, संयोग, २ एक नदी का दूसरी नदी के साथ अथवा समुद्र के साथ मिलना, ३ मैथुन, स्त्रीसंग ।

सं० सङ्गर—(सम्=साथ, गॄ=निगलना

वा निकलना) पु० लड़ाई, युद्ध, झगड़ा, २ आपदा, ३ विष, ४ शमी का पेड़ ५ प्रतिज्ञा।

सं०सङ्गी—(सङ्ग) गु० साथी, मेली, मिलापी, मित्र।

सं०सङ्गीत—(सम्=अच्छीतरह से, गै=गाना) पु०गाने की विद्या, गाना, गाने नाचने की विद्या, गु० वर्णित, कथित।

सं०संगृहीत—(सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) स्त्री० पु० इकट्ठा कियाहुआ, संग्रह किया हुआ, संकलित, तालीफ़शुदह।

सं०संग्रह—(सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) पु० इकट्ठा, एकट्ठा, सञ्चय, तालीफ़।

सं०संग्रहण—भा०पु० संग्रह, संचय।

सं०संग्रहणी—स्त्री० बहुतदस्तआना, नाम रोग।

सं०सग्रहीता—(सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) क० पु० संग्रहकर्त्ता, जोड़नेवाला।

सं०संग्राम—(संग्राम=लड़ाई करना) पु०लड़ाई, युद्ध, रण, जंग।

सं०संग्राहक—क०पु०संग्रहकर्ता।

सं०संग्राही—क० पु० संग्रहकर्ता, जमाकरनेवाला, इकट्ठाकरनेवाला।

सं०सङ्घट्टक-(सम्+घट्ट=रगड़ना) क० पु० योजक, मिलानेवाला, रगड़नेवाला, रचनेवाला।

सं०सङ्घट्टन—(घट्ट=चलना) भा० पु० मेलना, गढ़ना, रचना, साथ।

सं०सङ्घर्ष-(घृष्=घिसना) पु० रगड़ा, परस्पर रगड़ना, स्पर्द्धा, प्रभञ्जन।

प्रा०सच—(सं० सत्य), गु० सत्य, ठीक, सांच, हां, निश्चय, २ पु० सत्य, सचाई, सचावट, क्रि० वि० ठीक ठीक, यथार्थ।

प्रा०सचमुच—बोल० ठीक ठीक, यथार्थ।

सं०सचराचर—(स=साथ, चर=चलनेवाला, अचर=नहीं चलनेवाला) गु०जीव, जन्तु, पेड़, पत्थर आदि सब समेत।

प्रा०सचाई } (सं० सत्यता)
सञ्चाई } भा० स्त्री० सच, सांच, सचावट, ईमान्दारी, खराई, शुद्धता।

सं०साचि } (सच्=बांधना, या
सची } सींचना) स्त्री० इन्द्राणी, इन्द्रकी पत्नी।

सं०सचिव—(सच्=बांधना या सींचना) पु०मंत्री, सलाह देनेवाला।

सं०सचेत—(स=साथ, चेत=सुधि या होश) गु० चौकस, सावधान, होशियार।

सं०सचेतन-(स=साथ, चेतना=बुद्धि,

ज्ञान) गु० ज्ञानवान, बुद्धिमान् ।

प्रा० सचौटी-(सच) स्त्री० सचाई, सचावट ।

प्रा०सच्चा-(सं० सत्य) गु० ठीक, सत्य, यथार्थ, ईमान्दार, विश्वासी, धार्मिक, खरा, शुद्ध सात्त्विक ।

सं० सच्चिदानन्द-(सत्=सदा, या सत्=सच्चा, चित्=चैतन्य, आनन्द=प्रसन्न) पु० ब्रह्म, परमेश्वर, परमात्मा, परब्रह्म ।

प्रा० सज-(सं०सज्ज,सज्स्=जाना) स्त्री० डौल, रूप, धज, शोभा ।

प्रा०सजधज-बोल० बनाव, तैयारी, रूप, शोभा ।

प्रा०सजग-(स=साथ, जागना= होशियार होना) गु० सावधान, सचेत, होशियार, खबरदार ।

प्रा०सजन } (सं० सज्जन) पु०
सजना } बड़ा आदमी, २ प्यारा, पति, ३ स्त्री०प्यारी, प्रिया ।

प्रा० सजना-(सं० सृजन, सज्स्= जाना) क्रि० अ० तैयार होना, २ बनना, बनाव करना, फबना सोहना ।

प्रा०सजनी-(सं० सज्जन) स्त्री० सखी, सहेली ।

सं०सजल-(स+जल) गु०पानी से भरा हुआ, गीला, भीगा, तर, नम ।

प्रा०सजला-पु० चार भाइयों में तीसरा स्त्री०पानी से भरी हुई ।

प्रा०सजाई-(सजाना) स्त्री० तलवार के म्यान, या परतले की बनाई २ तैयारी ।

सं०सजाति-(स=बराबर, या एकही जाति=ज्ञात) गु० एक जाति का ।

सं०सजातीय-(स+जाति) गु० एक जाति का, एक तरह का ।

प्रा०सजाना-(सजना)क्रि० स० तैयार करना, बनाना, सुधारना ।

प्रा०सजावट-भा० स्त्री० तैयारी, बनावट ।

प्रा०सजीला-गु० सुडौल, सुन्दर ।

सं०सजीव-(स+जीव) गु० जीता हुआ, जीव सहित, जिन्दा ।

सं०सजीवनी-(सजीव)स्त्री० गु० प्राणदेनेवाली ।

सं०सज्जन-(सत्=सच्चा,जन=मनुष्य) गु० सत्पुरुष, साधु, भलाआदमी, कुलवान, बड़ाआदमी, भद्रपुरुष ।

सं०सञ्चय-(सम्=अच्छी भांति से चि=इकट्ठा करना) पु० ढेर, इकट्ठा, संग्रह, राशि ।

सं०सञ्चारक-(सम्, चर्=चलना) क०पु०नायक, रहबर, रहनुमा,

सं०सञ्चारण-भा० पु० प्रकाशन, विकाशन, संचालन, संचार, फैलाव ।

सं० सञ्चारिका-(सम्,चर्=जाना) स्त्री० दूती जो नायक का संदेशा नायिका को या नायिका का संदेशा नायक को पहुँचाती है, २ घ्राण, नासिका, ३ युग्म, युगल, जोड़ा।

सं० सञ्चालन-(सम्,चल्=जाना) भा० पु० चलाना, फैलाना।

सं० सञ्चित-(सम्,चि=इकट्ठाकरना) कर्म० इकट्ठा कियाहुआ, बटोरा हुआ, संग्रह कियाहुआ।

सं० सज्ञान-(स+ज्ञान) गु० ज्ञानसहित, ज्ञानी, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्।

सं० सट-स्त्री० जटा, शिखा, चोटिया, केशर, अयाल, २ मिलाव, गभिन।

प्रा० सटक-स्त्री० लचीलीछड़ी जो एक ओर मोटी होतीहै और दूसरी ओर पतली होती है।

प्रा० सटकना-क्रि०अ० भागजाना, खसकना, दौड़ जाना, चला जाना।

प्रा० सटना-(सं० सन्नद्ध, सम्=अच्छीतरह से नह=बांधना) क्रि० अ० मिलना, जुड़ना, चिपकना।

प्रा० सटपटाना-क्रि० अ० घबराना, अचंभे में होना, पिलपिलना।

प्रा० सड़क-स्त्री० राजमार्ग, बादशाही रास्ता, रोड।

प्रा० सड़क-गु० मस्त, मतवाला।

प्रा० सड़ना-क्रि० अ० गलना, पचना, बिगड़ना, खराब होना।

प्रा० संड } गु० मोटा, ज़ोरावर, बलसंडा } वान, मजबूत, हृष्टपुष्ट।

प्रा० संडमुसंड-गु० खूब मोटा ताजा और जोरावर।

प्रा० संडसी } (सं० सन्दंशिनी, सम्=
संडासी } खूब, दंश्=काटना)
सँड़सी } स्त्री० गहवा, संगसी।

प्रा० संडास-पु० जाजरूर, पाखाना।

सं० सत्-(अस्=होना) गु० सच, ठीक, सत्य, २ ब्रह्म, परमेश्वर, ३ पु० आदर, ४ विद्यमानता।

प्रा० सत-(सं० सत्त्व) पु० ज़ोर, बल, २ सार, हीर, रस, अर्क, ३ सतोगुण।

सं० सततम्-(सम्=साथ, तन्=फैलाना) क्रि०वि० लगातार, निरंतर।

प्रा० सत्तमी-(सं० सप्तमी) स्त्री० सातवीं तिथि।

प्रा० सत्तरह-(सं० सप्तदश) गु० सात और दश।

प्रा० सतलड़ी-(सात+लड़) स्त्री० सात लड़ की माला।

प्रा० सतसठ-(सं० सप्तषष्टि) गु० साठ और सात, सरसठ।

प्रा० सतसई स्त्री० } (सं० सप्त-
सतसैया पु० } शती) एक पोथीका नाम जिसको बिहारीलाल